ई-अभिव्यक्ति (हिन्दी) - दीपावली अंक - 2024

अंक - 3

ई-अभिव्यक्ति संपादक मण्डल

हेमन्त बावनकर, प्रधान संपादक

विवेक रंजन श्रीवास्तव, संपादक हिन्दी

जय प्रकाश पाण्डेय, संपादक हिन्दी

कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, संपादक अँग्रेजी

e-abhivyakti

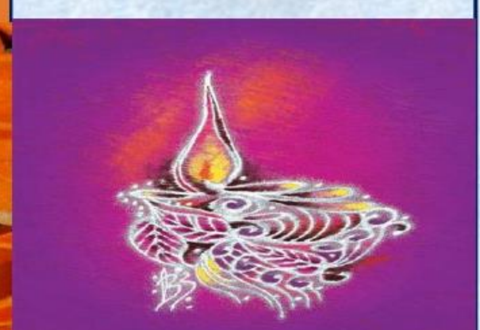

www.e-abhivyakti.com

व्यक्ति विशेष - श्री संदीप राशिनकर

(चित्रकार आणि लेखक)

जन्म : ७ मे १९५८, इंदोर
शैक्षणिक अर्हता : बी.ई. (सिव्हिल)
श्री. संदीप राशिनकर हे सुपरिचित आणि मान्यवर चित्रकार, लेखक आणि समीक्षक आहेत.
आत्तापर्यंत अनेक अखिल भारतीय कला प्रदर्शनांसाठी त्यांच्या चित्रांची आवर्जून निवड केली गेलेली आहे. तसेच, मुंबई, गोवा, इंदोर, निमच,या ठिकाणी आणि लंडनमध्येही त्यांच्या चित्रांची स्वतंत्र प्रदर्शने भरवली गेलेली आहेत.
राष्ट्रीय पातळीवर प्रकाशित केल्या जाणाऱ्या वर्तमानपत्रांमध्ये आणि साप्ताहिकांमध्ये आत्तापर्यंत त्यांची अक्षरशः हजारो चित्रे आणि रेखांकने प्रकाशित झालेली आहेत.
भारतीय ज्ञानपीठासह अनेक प्रतिष्ठित प्रकाशनांच्या शेकडो पुस्तकांची मुखपृष्ठे श्री. राशिनकर यांनी चित्रांकित केलेली आहेत. म्यूरल्सच्या क्षेत्रातही ते कार्यरत असून अनेक ठिकाणी अनेक प्रतिष्ठानांसाठी त्यांनी भव्य म्यूरल्स तयार केलेली आहेत. आणि त्यात अनेक अभिनव आणि यशस्वी प्रयोगही केलेले आहेत. ब्रास आणि स्टील यांचा वापर करून त्यांनी स्वतः अनेक कलाकृती साकारल्या आहेत, ज्या देश-विदेशातील अनेक कलाप्रेमींनी स्वतःकडे जतन करून ठेवल्या आहेत.
पत्नी सौ. श्रुती यांच्या सहयोगाने त्यांनी लिहिलेला "कुछ मेरी कुछ तुम्हारी" हा काव्यसंग्रह, आणि त्यांनी स्वतः लिहिलेले "कैनवासपर शब्द" हे पुस्तक– अशी त्यांची दोन पुस्तके प्रकाशित झालेली असून दोन्हीही लोकप्रिय ठरलेली आहेत. तसेच पुरस्कारप्राप्तही ठरलेली आहेत. याखेरीज 'कला-संस्कृती' या विषयावरही त्यांनी बरेच लेखन केलेले असून, त्यांचे समीक्षात्मक लेखनही प्रकाशित झालेले आहे.
"जीवनगौरव" पुरस्काराबरोबरच देशभरातील अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारांनी श्री. राशिनकर यांना सन्मानित केले गेलेले आहे.
संपर्क:-: ११-बी , मेन रोड , राजेंद्रनगर , इंदौर -४५२०१२ (म.प्र.)
मो. ९४२५३ १४४२२ / ८०८५३ ५९७७० email :rashinkar_sandip@yahoo.com
Web Site. http://www.sandiprashinkar.com

व्यक्ति विशेष - डॉ. भारती माटे

(चित्रकार, लेखिका आणि कवयित्री)

शैक्षणिक अर्हता : M.Com, CAIIB, Ph.D.(from Irvine (USA) Sub: "Art History of Rangavali & Dry Frescos of Rangavali as Neo-Antiques".)
Proprietor : TAO ARTS, Pune **Creative Director** : TAO Communications, Pune
संस्थापक : भारती माटे फाईन आर्ट्स अँड रिसर्च सेंटर, पुणे. आर्ट वेलफेअर, पुणे.
भारती माटे यांच्या व्यक्तिमत्वाचे अद्वितीय म्हणावेत असे आणखी दोन पैलू आहेत... एक म्हणजे त्यांच्या समकालीन कलाकारांमध्ये त्याच एक अशा कलाकार आहेत, ज्यांना खरोखरच "आत्मशिक्षित" कलाकार म्हणता येईल.
दुसरी गोष्ट अशी की त्या "चित्रकार कवयित्री" आहेत. सर्जनशील असणारी त्यांची अलौकिक बुद्धिमत्ता, कविता आणि चित्रकारिता अशा दोन्ही क्षेत्रात एकाचवेळी उत्तम प्रकारे कार्यरत असते. आणि या दोन्ही कार्यक्षेत्रात त्यांना अनेक पुरस्कार प्राप्त झालेले आहेत.
त्यांची ही वैशिष्ट्यपूर्ण आणि सुंदर रांगोळी चित्रे विक्रीसाठीही उपलब्ध आहेत.
मो. : +91 9890722120 Email : bharati.taoarts@gmail.com
Web Site : www.bharatimate.com Blog : https://bharatimate-painter.blogspot.com/

संपादकीय

आखिर आ ही गया, हम सबका बहुप्रतीक्षित दीपों का पर्व 'दीपावली' और साथ ही लेकर आया है, ई-अभिव्यक्ति के वैश्विक पटल पर पुनः एक बार उसी साज सज्जा के साथ फ्लिप-बुक के डिजिटल स्वरूप में आपका प्रिय दीपावली विशेषांक-2024.

स्व का. रा. मित्र जी (स्व. काशीनाथ रघुनाथ आजगावकर) ने जब 1909 में अपनी पत्रिका 'मासिक मनोरंजन' का प्रथम ऐतिहासिक दीवाली अंक प्रकाशित किया था तो उन्होने भी कभी कल्पना नहीं किया होगा कि भविष्य में उनके द्वारा प्रारम्भ दिवाली विशेषांकों की शृंखला डिजिटल स्वरूप ले लेगी। **हमें इस बात पर गर्व है कि ई-अभिव्यक्ति द्वारा 'फ्लिपबुक' प्रारूप में भारत के पहले और एकमात्र दीपावली विशेषांकों की शृंखला (हिंदी और मराठी भाषा) में 2022 से सफलतापूर्वक किया जा रहा है।** इस बात में आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है कि इंटरनेट के आभासी विश्व के भविष्य में ऐसे विशेषांकों की संकल्पना में कृत्रिम बुद्धिमतता (Artificial Intelligence) का उपयोग होने लगे.

प्रत्येक वर्षानुसार गणेश बप्पा आए और अपने साथ विजयदशमी पर्व तक उत्सवों का पिटारा भी लेकर आए. इसी बीच हम सब ने पितृपक्ष में अपने स्वर्गवासी पूर्वजों का भी स्मरण किया. अप्रत्याशित वर्षा की झड़ी ने मेघ गर्जना के साथ हमें सचेत भी किया कि यदि पर्यावरण संतुलन नहीं रखा तो गंभीर परिणाम हो सकते हैं.

भारत के साथ सारे विश्व में बसे भारतीय पाँच दिनों तक चलने वाले पर्व (धनतेरस, नरक चतुर्दशी (छोटी दिवाली), दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज) को पूरे उल्लास के साथ मनाते हैं. इस पर्व को सभी धर्मों के कई लोग आपस में मिलजुलकर भी मनाते हैं. छोटी बड़ी दुकानों से लेकर ऑन-लाइन शॉप हमें आकर्षित करती हैं. रंगबिरंगी रोशनी से हृदय आलोकित हो जाता है. हम बचपन से अब तक की स्मृतियों में खो जाते हैं. फिर स्वादिष्ट व्यंजनों के बिना भी भला कोई उत्सव हो सकता है.

इन सब व्यस्तताओं के बीच में से समय निकाल कर प्रबुद्ध पाठक दीपावली विशेषांक की प्रतीक्षा करते हैं. प्रबुद्ध लेखक अपनी मनोभावनाओं को अपने प्रिय पाठकों तक पहुँचने के लिए आतुर होते हैं और साथ ही पाठक नवीन साहित्य को आत्मसात करने को आतुर होते हैं.

इस प्रयोजन को साकार करने के लिए ई-अभिव्यक्ति के संपादक मण्डल ने दिन-रात एक कर आपके लिए अभूतपूर्व सामग्री सँजो कर आपके लिए यह विशेषांक तैयार किया है. डॉ भारती माटे जी ने अत्यंत परिश्रम से आपके लिए मुखपृष्ठ की कलाकृति को तैयार किया है. सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री संदीप राशिनकर जी एवं डॉ भारती माटे जी के हम हृदय से आभारी है जिन्होने अपनी कलाकृतियों को 'दीवाली विशेषांक' एवं 'मुखपृष्ठ'में निःशुल्क उपयोग हेतु अपनी सहर्ष स्वीकृति दी है.

मैं व्यक्तिगत रूप से ई-अभिव्यक्ति संपादक मण्डल सदस्यों का हृदय से आभारी हूँ. मुझे पूर्ण विश्वास है इसे आप अपनी स्मृतियों की तरह सहेज कर रखेंगे. ई-अभिव्यक्ति के दीवाली विशेषांक का यह तृतीय अंक आप सभी को सहर्ष सादर समर्पित है.

इस विशेषांक को अपने परिजनों के साथ साझा कर हमें अनुग्रहीत करें. आपकी साहित्यिक प्रतिक्रियाएँ हमें अपनी साहित्यिक यात्रा में प्रेरणा स्रोत बनेंगी इसी मंगलकामना के साथ... 🪔 🪔 🪔 🪔 🪔

आपका ही

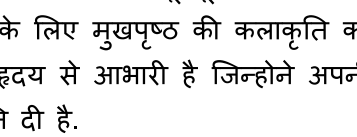

प्रधान संपादक

आप अपनी प्रतिक्रियाएँ निम्नलिखित ईमेल पर प्रेषित कर सकते हैं 💐🙏
adm.eabhivyakti@gmail.com, apniabhivyakti@gmail.com, jppandey121@gmail.com, psraghuvanshi@gmail.com

अनुक्रमणिका

व्यक्ति विशेष - श्री संदीप राशिनकर 2
व्यक्ति विशेष - डॉ. भारती माटे 2
कविता - मां लक्ष्मी कमलासने - प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' 6
कविता - भूखे भील गये - आचार्य भगवत दुबे 7
कहानी - पहचान - डॉ कुंदन सिंह परिहार 8
संस्मरण - लिखते समय मेरे सामने मैं ही होता हूँ : निर्मल वर्मा - श्री कमलेश भारतीय 11
लेख - दीपावली, अब दुनियां का त्यौहार - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव 14
व्यंग्य - बयानों की दीपावली सेल - श्री प्रभाशंकर उपाध्याय 15
व्यंग्य - सांप की रेल यात्रा - श्री जय प्रकाश पाण्डेय 18
व्यंग्य - अथ उल्लू कथा - डॉ. प्रदीप शशांक 21
संस्मरण - मेरी डायरी के पन्ने से... सरस्वती - सुश्री ऋता सिंह 23
कहानी - यह दिवाली... - सुश्री गिरिजा कुलश्रेष्ठ 27
कविता - रफ़्तार - सुश्री नीलिमा खरे 31
कहानी - उत्सर्जन - डॉ हंसा दीप 32
कविता - बहुत दिनों तक... - श्री राघवेन्द्र तिवारी 36
कहानी - ज्ञानदीप... - श्री सुरेश तन्मय 38
कविता - राम नहीं आएँगे - श्री जय प्रकाश श्रीवास्तव 39
कविता - भारतीय संस्कृति का दिया - श्री सुरेश पटवा 40
लेख - एक पर्यटन ऐसा भी... - श्री संजय भारद्वाज 41
कविता - सनातन प्रश्न - डॉ मुक्ता 44
कहानी - खोया प्यार - सुश्री अंजू 'तितली' 45
कविता - यह दीपक यूँ ही जलाये रखना... - श्री एस के कपूर 46
कविता - गीतिका छंद - सुश्री छाया सक्सेना 'प्रभु' 47
लेख - यहां लक्ष्मी कैद है - श्री प्रदीप शर्मा 48
लेख - रामलीला की वर्तमान सार्थकता! - सुश्री रेखा श्रीवास्तव 50
कविता - पीछे रह गये हम - सुश्री सुनीति बैस 53
कहानी - झूला - भावानुवाद डॉ सुशीला दुबे - सौ. उज्ज्वला केळकर 54
कहानी - धनतेरस... - श्री संजीव वर्मा 'सलिल' 60
लेख - खुशी का मौसम श्री राकेश कुमार 61
कहानी - तीन लघुकथाएं - डॉ. रमेश यादव 62
कविता - शुभ हो यह पर्व - श्री अरुण कुमार दुबे 66
हास्य - सर पर माथा पच्ची - श्री प्रतुल श्रीवास्तव 67
दीपावली की वह जानकारी जो आप नहीं जानते हैं - ज्योतिषाचार्य अनिल पाण्डेय 68

कहानी - व्यथा - सुश्री उमा मिश्रा ‘प्रीति’ 69
लेख - त्रिगुणी त्रिदेवी : स्त्री शक्ति का जगराता - डॉक्टर मीना श्रीवास्तव 71
व्यंग्य - निमंत्रण के प्रकार - अखतर अली 75
कहानी - शरीर बूढ़ा है दिल नहीं - सुश्री नरेंद्र कौर छाबड़ा 77
कविता - दोहे - दीपावली विषयक - प्रो रवि शर्मा ‘मधुप’ 79
लेख - यदि परसाई जी नहीं होते तो क्या होता? - श्री केशरी प्रसाद पाण्डेय ‘वृहद’ 81
कविता - मन की पाती - अयाज़ ख़ान 87
हास्य-व्यंग्य - गांधी जी के तीन बंदर: आधुनिक संदर्भ? - श्री दिनेश गंगराड़े 88
कविता - दो कविताएं - डॉ नीना छिब्बर 91
कहानी - श्रवण कुमार - सुश्री रेखा शाह आरबी 92
कविता - उजियार किया - श्री आशीष दशोत्तर 94
व्यंग्य - व्याकरणीय त्रुटि की शहादत - श्री जगदीश पाठक 95
व्यंग्य - निधन विचार - श्री अभिमन्यु जैन 97
व्यंग्य - कॉपीराइट एक्ट - श्री रमाकांत ताम्रकार 99
कविता - दीपोत्सव - श्री श्याम खापर्डे 101
कहानी - चिराग - डॉ. भावना शुक्ल 102
लेख - सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक: जबलपुर - श्री मनोज शुक्ल ‘मनोज’ 107
कहानी - स्वर्ण कलश - सुश्री सिद्धेश्वरी सराफ़ ‘शीलू’ 109
कहानी - रिस्टवाच - डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी 111
बाल कहानी - दीपावली की आग - श्री ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' 114
बाल कविता - क्यों न मैं तुलसी बन जाऊँ - डॉ राकेश ‘चक्र’ 117
Festival of Deepavali - Capt. Pravin Raghuvanshi, NM 118
The Four Noble Truths & The Noble Eightfold Path - Shri Jagat Singh Bisht 121
Trace - Shri Ashish Mulay 123
Between Pixels and Pages - Ms. Radha Unmesh Mulay 124

(इस अंक के विभिन्न लेखों में व्यक्त विचारों और राय से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

कविता - मां लक्ष्मी कमलासने - प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'

कल्याण दायिनी, धनप्रदे, माँ लक्ष्मी कमलासने
संसार को सुखप्रद बनाया, है तुम्हारे वास ने

निर्धन को भी निर्भय किया, माँ तुम्ही के प्रकाश ने
जग को दिया आलोक हरदम, तुम्हारे विश्वास ने

चलती नहीं माँ जिंदगी, संसार में धन के बिना
जैसे कि आत्मा अमर होते हुये भी, तन कर बिना

हर एक मन में है तुम्हारी, कृपा की मधु कामना
आशा लिये कर सक रहा, कठिनाईयों का सामना

संगीत सा आनन्द है, धन की मधुर खनकार में
संसार का व्यवहार सब, केंन्द्रित धन के प्यार में

सबके खुले हैं द्वार स्वागत में, तुम्हें सन्माननें
माँ जगह हमको भी दो, अपने चरण के पास में

मन सदा करता रहा, मन से तुम्हारी साधना
सजी है पूजा की थाली, करने तेरी आराधना

प्रों चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध', ए २३३ , ओल्ड मीनाल रेजीडेंसी भोपाल ४६२०२३ मो. 9425484452
vivek1959@yahoo.co.in

कविता - भूखे भील गये - आचार्य भगवत दुबे

न्याय मांगने, गाँव हमारे
जब तहसील गये
न्यायालय,
खलिहान, खेत, घर
गहने लील गये
लिया कर्ज
कुटकी, कोदों की
फसल गई बोई
फलीभूत आशा के होते
लगा रोग कोई
सांड तकादों के
लठैत खेतों में ढील गये
गिरवी रखा अँगूठा
करने बेटी का गौना
छोड़ पढ़ाई
हरवाही करने
निकला छौना
चिन्ताओं के बोझ
सुकोमल काँधे छील गये
कभी न छँट पाया
जीवन से विपदा का कुहरा
राजनीति का इन्हें
बनाया गया सदा मुहरा
दिल्ली लोककला दिखलाने
भूखे-भील गये

आचार्य भगवत दुबे, 82, पी एन्ड टी कॉलोनी, जसूजा सिटी, पोस्ट गढ़ा, जबलपुर, मध्य प्रदेश

कहानी - पहचान - डॉ कुंदन सिंह परिहार

मिस्टर टी. पी. त्रिवेदी या तेज प्रकाश त्रिवेदी अब एक रिटायर्ड अफसर हैं। रिटायरमेंट के साथ ही 'मिस्टर टी. पी. त्रिवेदी' की खनक खत्म हो गयी और अब वे 'त्रिवेदी साहब' रह गये। रिटायरमेंट के बाद पुराने रोब-दाब की यादें थप्पड़ जैसी लगती हैं।

रिटायरमेंट के बाद लोगों के चेहरे कैसे बदल जाते हैं। आसपास मंडराते हुजूम एकदम छंट जाते हैं, जैसे कोई प्रवंचना थी जो मंत्र पढ़ते ही समाप्त हो गयी। दिन भर घर पर मत्था टेकने वाले, भेंटें लेकर आने वाले लोग जैसे किसी जादू से एकाएक ग़ायब हो जाते हैं। सड़क पर मिलते भी हैं तो उनकी नज़र रिटायर्ड आदमी के शरीर से बाहर निकल जाती है, देखकर भी देखना ज़रूरी नहीं समझते। सारे संबंध अपने असली, निर्मम रूप में आ जाते हैं, तटस्थ और व्यवहारिक। रह जाता है अकेलापन और किसी फिल्म की तरह सामने से तेज़ी से गुज़रती, बदलती हुई दुनिया।

रिटायरमेंट के बाद दिन बहुत लम्बे हो जाते हैं। बुढ़ापे में वैसे ही जल्दी आंख खुल जाने और देर से नींद आने के कारण दिन लम्बा हो जाता है, फिर काम से अवकाश दिन को और लम्बा कर देता है। त्रिवेदी जी सवेरे घूमने निकल जाते हैं, आधे घंटे पूजा कर लेते हैं। शाम को भी टहल लेते हैं। फिर भी वक्त भारी लगता है। शाम के घूमने के लिए वे निर्जन सड़कों को ही चुनते हैं क्योंकि व्यस्त सड़कों पर अब नमस्कार करने वाले कम मिलते हैं, उपेक्षा करने वाले ज़्यादा।

शास्त्री रोड पर जो मन्दिर है वहां शाम को अक्सर त्रिवेदी जी जाते हैं। आधा घंटा वहां गुज़ार लेने से उन्हें अच्छा लगता है। आसपास विश्वास और उम्मीद लिए बैठे या ध्यान में डूबे लोग, अगरबत्तियों की गंध, घंटी की टिनटिन--- दृश्य सुखकर होता है। आस्था की बड़ी मज़बूत डोर से बंधीं, उसी के सहारे बड़ी-बड़ी मुश्किलों को झेलती स्त्रियां। त्रिवेदी जी को वह दूसरी ही दुनिया लगती है, खलबलाती हुई ज़िन्दगी से अलग।

लेकिन एक चीज़ त्रिवेदी जी को मन्दिर में चैन से नहीं बैठने देती। वह है जूतों की चिन्ता। जूते बाहर छोड़कर भीतर इत्मीनान से बैठना मुश्किल होता है। जूता-चोरी की घटनाएं अक्सर होती रहती हैं। लोग बताते हैं कि वहां आसपास कुछ फटेहाल लोग रहते हैं। उनके बच्चे भक्तों के जूते उड़ाने के चक्कर में घूमते रहते हैं, इसलिए लोगों को जूतों के मामले में सतर्क रहना पड़ता है। त्रिवेदी जी भी भरसक उपाय करते हैं। आजकल उन्होंने नया तरीका खोज लिया है। एक जूते को ढेर के एक कोने में और दूसरे को दूसरे कोने में रख देते हैं। इस तरह चोर को जल्दी जोड़ी चुराने में मुश्किल होती है। शायद इन्हीं तरकीबों की वजह से उनके जूते सुरक्षित रहे।

लेकिन एक दिन जिस चीज़ का डर था वह हो ही गयी। त्रिवेदी जी जूतों को उसी रणनीति से रखकर गये थे, लेकिन जब वे आधे घंटे बाद बाहर निकले तो जूते ग़ायब थे। इस छोर वाला भी और उस छोर वाला भी। लगता है चोर ने उन्हें जूते रखते वक्त देखा होगा, और उनकी चतुराई पर वह शायद बाद में हंसा भी

हो। जो भी हो, त्रिवेदी जी के आठ सौ रुपये में खरीदे हुए, आठ महीने पुराने जूते ग़ायब थे, और त्रिवेदी जी बार-बार ढेर पर निगाह फेर रहे थे, जैसे उन्हें जूतों के खोने का भरोसा न हो रहा हो।

अन्ततः उन्होंने हार मान ली। कुछ हो भी नहीं सकता था। जूते की चोरी की रिपोर्ट पुलिस में करना हास्यास्पद लगता था। आये दिन की बात थी। पुलिस किस-किस के जूते ढूंढ़ती फिरे?

हताशा में एक क्षण के लिए एक गन्दा विचार भी आया कि क्यों न ढेर में से जूते का कोई दूसरा जोड़ा पांव में डाल लिया जाए। लेकिन त्रिवेदी जी ने शीघ्र ही अपने को इस घटिया खयाल से मुक्त कर लिया। बात नैतिक अनैतिक की नहीं थी। समस्या मध्यवर्गीय प्रतिष्ठा की थी। यदि किसी ने उन्हें जूता चुराते पकड़ लिया तो उम्र भर की कमाई इज्ज़त एक क्षण में सटक जाएगी। शहर में रहना मुश्किल हो जाएगा। उससे बड़ी बात यह है कि उनके साथ-साथ पूरे खानदान की नककटाई होगी।

वे हार कर मन्दिर से निकल कर सड़क पर आ गये। नंगे पांव सड़क पर आते ही उनकी रीढ़ में फुरफुरी दौड़ गयी।वे घर के भीतर भी पांव में चप्पल डाले रहते थे। कभी नंगे पांव चलना पड़ा तो पांव के नीचे की रेत मन में जाने कैसी गिजगिजाहट पैदा करती थी। शरीर के रोम खड़े हो जाते थे। अब नंगे पांव लम्बा रास्ता तय करना था।

पांव रखते ही रेत और छोटे-छोटे कंकड़ महसूस हुए। मुलायम तलवों में कंकड़ों की चुभन असहनीय लगी। वे पैरों को कुछ तिरछा रखते हुए बढ़े। आसपास बहुत से कांच के टुकड़े और कांटे दिखायी पड़ते थे। उन्हें लगता था कि ये सब उन्हीं के लिए हैं और उनके पांव में ज़रूर चुभेंगे। वे अक्सर इस रास्ते पर आते थे, लेकिन उन्हें इतने सारे कांच और कांटे कभी नहीं दिखे। उनकी नज़र बराबर ज़मीन पर ही गड़ी हुई थी।

उनका मन हुआ कि रिक्शा ले लें, लेकिन उधर रिक्शे बहुत कम थे। मन्दिर के सामने दो रिक्शे ज़रूर खड़े थे, लेकिन लौटने वाले थे। आगे दूर तक कोई रिक्शा दिखायी नहीं पड़ता था।

आगे बढ़ने पर आबादी शुरू हो गयी। उन्हें दो रिक्शे और मिले, लेकिन एक तो उनके रोकने से रुका ही नहीं और दूसरे ने इतने ज़्यादा पैसे मांगे कि वे चुप हो गये। आबादी शुरू होने के साथ वे जूतों के बिना बेहद असमंजस महसूस कर रहे थे। उन्हें लगता था जैसे उनका कद चार छः इंच छांट दिया गया हो। मुंह उठाकर रिक्शों को देखने के बजाय उन्हें सिर झुका कर चलना ज़्यादा सुरक्षित लग रहा था। सिर उठाने पर परिचित चेहरे नज़र आते थे। इस वक्त उन्हें लग रहा था जैसे सब उनके परिचित हैं और सब उन्हें कौतूहल से देख रहे हैं।

थोड़ा आगे बढ़ने पर बायीं तरफ खत्री की किताब की दूकान पड़ी। यहां से उनके घर के बच्चे पढ़ने के लिए किराये पर पत्रिकाएं ले जाते थे। वह उन्हें जानता था। उन्होंने बिना आंखें उठाये कनखियों से देख लिया कि खत्री दूकान पर था। वे सिर झुकाए, अपनी गति तेज़ करके आगे बढ़ गये। चलते-चलते उन्हें दूकान से किसी का स्वर सुनायी पड़ा--- 'रिटायर होने के बाद लोगों की क्या हालत होती है, उधर देखो।'

उन्हें लग रहा था कि सड़क बहुत लम्बी हो गयी है। वे अपनी समझ से घंटों चल चुके थे, लेकिन जब उन्होंने नज़र उठा कर देखा तो सामने 'प्रदीप मिष्ठान्न भंडार' था, यानी वे मुश्किल से एक किलोमीटर चले थे।

थोड़ा और बढ़ने पर उन्हें किसी ने आवाज़ दी। देखा, सक्सेना साहब थे। उनके पांव की तरफ इशारा करके बोले, 'यह क्या है? नंगे पांव कैसे? '

त्रिवेदी जी ने फीकी हंसी हंसकर जवाब दिया, 'जूते मन्दिर में चोरी हो गये।'

सक्सेना साहब ज़ोर से हंसे--- 'वही तो। मुझे तो देख कर चिन्ता हो गयी कि आप कहीं सनक तो नहीं गये।आजकल बहुत खराब ज़माना है। मेरे दोस्त प्रेमशंकर का जवान लड़का दस बारह दिन पहले एकाएक सनक गया। घर में रहता ही नहीं। इधर-उधर घूमता रहता है। न कपड़ों की चिन्ता, न खाने पीने की। इसीलिए आपको देखकर मैं घबरा गया। सोचा, कहीं ऐसा ही कुछ न हो।'

इसी समय एक रिक्शा बाज़ू से गुज़रा और त्रिवेदी जी ने उसे रोक लिया। घर अब मुश्किल से आधा किलोमीटर दूर था, लेकिन वे बीस रुपये देने को राज़ी हो गये। रिक्शे पर बैठते हुए उन्होंने वैसी ही राहत महसूस की जैसी रास्ते में एकाएक बीमार हो जाने वाले को घर लौटने के लिए कोई वाहन मिल जाने पर होती है। वे बहुत थकान महसूस कर रहे थे। यह थकान शारीरिक कम और मानसिक ज़्यादा थी। उन्हें लगा जैसे सारे रास्ते उन पर एक बहुत बड़ा बोझ लदा रहा हो।

घर में घुसते ही पूछताछ शुरू हुई। सब ने अफसोस ज़ाहिर किया, लेकिन सबको चर्चा के लिए एक विषय भी मिल गया। घर के लोग अपने दोस्तों के बीच बताते हैं, 'यार, कल मन्दिर में किसी ने पिताजी के जूते पार कर दिये। क्या ज़माना है! ' सुनने वाला भी कोई किस्सा निकालता है। फिर किस्से में किस्सा जुड़ता जाता है। वक्त कट जाता है।

त्रिवेदी जी ने घर में घुसकर जैसे बड़ी मुसीबत से मुक्ति पायी। सड़क पर उन्हें लग रहा था जैसे जूते खोने के साथ समाज में उनकी पहचान गड़बड़ा गयी हो। समाज के साथ उनका समीकरण उलट-पलट हो गया हो। अब घर लौटने के बाद वे फिर आश्वस्ति महसूस कर रहे थे।

डॉ. कुन्दन सिंह परिहार, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

संस्मरण - लिखते समय मेरे सामने मैं ही होता हूँ : निर्मल वर्मा - श्री कमलेश भारतीय

आज प्रात: जैसे ही टीवी ऑन किया, वैसे ही यह समाचार सुन कर एकदम शून्य सा हो गया कि प्रसिद्ध साहित्यकार निर्मल वर्मा नहीं रहे! ये जरूर है कि पिछले कुछ समय से निर्मल वर्मा अस्वस्थ चल रहे थे और वे दिल्ली के एक अस्पताल में उपचाराधीन थे। अस्पताल से घर लौटने पर मैंने उनसे फोन पर बातचीत की थी और उन्होंने इतना ही कहा था मैं ठीक हूं लेकिन वे कितने ठीक हुए थे, यह आज का समाचार स्पष्ट बता रहा था।

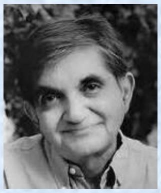

चंडीगढ़ में निर्मल वर्मा के बिताये तीन दिन मेरी स्मृतियों में उतर आये। निर्मल वर्मा की आंखों में बाल सुलभ उत्सुकता चंडीगढ़ के इन दिनों में ही दिखी और महसूस की थी। उन्होंने कहा था कि चंडीगढ़ आना उन्हें हमेशा अच्छा लगता है। जब कभी बहाना बन जाता है तो वे चंडीगढ़ जरूर आते हैं। जब चंडीगढ़ में उनका दूसरा दिन था तब मैंने उन्हें पंजाब विश्वविद्यालय के गेस्ट हाउस में उनसे संबंधित समाचार से युक्त 'दैनिक ट्रिब्यून' दिया था! उन्होंने मेरे लिखे समाचार को पढ़कर बाल सुलभ सवाल किया था कि क्या मैं इसे रख सकता हूँ? मैंने उन्हें बताया कि मैं यह प्रति आपके लिए ही लाया हूँ, आप रख लीजिए! उन्होंने अपने बैग में 'दैनिक ट्रिब्यून' की प्रति संभाल कर रख ली थी। चंडीगढ़ से लौट जाने के बाद भी मेरा उनसे सम्पर्क बना रहा। नर्मदा नदी पर लिखे निर्मल वर्मा के यात्रा संस्मरण समेत अनेक यात्रा संस्मरणों के बीच हरिद्वार के कुम्भ मेले को भी निर्मल वर्मा की कलम व आखों से ही देख पाया था।

निर्मल वर्मा चंडीगढ़ में आयोजित पुस्तक मेले के समय भी आये थे और पंजाब विश्वविद्यालय की हिंदी साहित्य परिषद् के आमंत्रण पर भी आये थे। उनका मानना था कि उनका रचना संसार सोलह से बाइस वर्ष के आयु वर्ग वाले युवाओं के एकांत क्षणों व आशा निराशाओं को सामने रखता है क्योंकि यही वह उम्र होती है जिसकी दुनिया अलग होती है। इसी उम्र में कवितायें लिखी जाती हैं डायरी लेखन किया जाता है। इस सबके बावजूद जो इसके बाद भी लिखता है, वह लेखक होता है। सचेत भी और मासूम भी! बच्चों की आंखों से दुनिया को देखकर जो अभिव्यक्त कर सके, वही लेखक की सफलता होती है। पंजाब विश्वविद्यालय के थियेटर विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष व प्रसिद्ध रंगकर्मी मोहन महर्षि भी निर्मल वर्मा को अपने विभाग में लेकर गये थे। युवा रंगकर्मियों से बातचीत में वे यह पूछ रहे थे कि चंडीगढ़ में नाट्य व रंगमंच से कितने लोग जुड़े हुए हैं। यह भी पूछा कि अधिकारी वर्ग थियेटर में कितनी रूचि लेता है, नाट्य गतिविधियां किस अवस्था में हैं। क्या टैगोर थियेटर में शनिवार रविवार नाटकों का मंचन होता है ? हर छात्र छात्रा से उनकी उपलब्धियों के बारे में भी पूछा। इसी बीच उनकी कहानी 'मायादर्पण' पर बनी फिल्म पर भी चर्चा हुई और सवाल किया गया कि यह अनुभव कैसा रहा ? निर्मल वर्मा ने कहा कि फिल्म तकनीक की दृष्टि

से अच्छी थी पर कहानी की आत्मा बीच बीच में छूट जाती थी! फिर सरल भाव से कहा कि अब मैं इससे मुक्त हूँ। 'मायादर्पण' दर्शक को कहानी संप्रेषित करने में असफल रही। फिल्म में शब्द की अनुगूंज नहीं सुनी गयी। अनुगूंज की बजाय खालीपन था। इसलिए यह दर्शकों को बोर करती थी। निर्मल वर्मा ने कहा कि साहित्यिक कृतियों पर फिल्म बनाने की स्प्रिट बनी रहनी चाहिए। फिल्म निर्माता को कहानी का दास होकर नहीं रहना चाहिए बल्कि कहानी की आत्मा भी नहीं मरनी चाहिए!

सुप्रसिद्ध लेखक निर्मल वर्मा नजर युवा रंगकर्मियों को कहा था कि- लोकप्रिय फिल्म के दबाब से मुक्त होने का एक ही उपाय है- समांतर सिनेमा लेकिन यह आंदोलन अलग दिशा की ओर बढ़ गया! अब हालत यह है कि लोकप्रिय फिल्में व समांतर फिल्में अलग अलग सिरे पर खड़ी मिलती हैं! लेखकीय दायित्व के संबंध में छात्रों के सवाल के जवाब में विचार व्यक्त करते कहा कि चौबीस घंटे की दुनिया में लोग जिस दुनिया में जाने का साहस नहीं रखते, उस दुनिया से सामना करवाना ही लेखकीय दायित्व है।

शिमला में सन् 1929 में जन्मे निर्मल वर्मा का बचपन पहाड़ों पर बीता और अपने बचपन की स्मृतियों में डूबे निर्मल वर्मा ने साहित्य के साथ अपने लगाव का कारण स्पष्ट करते हुए बताया था कि घर में अच्छी पत्रिकायें आती थीं। मेरे दादा की नज़र कमज़ोर थी। कल्याण पत्रिका पढ़कर सुनाने पर चवन्नी देने का प्रलोभन देते और मैं पृष्ठ दर पृष्ठ पढ़कर सुनाता जाता। यहीं से किताबों के प्रति आसक्ति बढ़ी। कम्युनिस्ट पार्टी से लगाव हुआ पर कम्युनिज्म के बावजूद गरीबी से आंखें मूंदे हुए थे ये लोग। गांधी जी से प्रभावित हुआ और लम्बी प्रक्रिया के बाद इस निर्णय पर पहुंचा कि राजनीति मेरे लिए नहीं! स्पष्टता किताबें पढ़कर नहीं, अनुभव से आती है।

लिखते समय आपके सामने कौन होता है?-

इसके जवाब में निर्मल वर्मा नजर कहा कि लिखते समय मेरे सामने मैं ही होता हूँ। इसके साथ ही गंभीरता से कहा कि लिखते हुए स्वयं ही अपने आलोचक होते हैं तभी तो बार बार रचना को काटते छांटने रहते हैं लेखक! अंदर कोई आलोचक बैठा रहता है। कहानी व उपन्यास लिखने के लिए गहराई में उतरना पड़ता है। टूरिस्ट की तरह नहीं, स्वाद चखने के लिए यात्रा संस्मरण लिखे जा सकते हैं, कहानी या उपन्यास नहीं लिखे जा सकते! कहानी को निर्मल वर्मा ने 'अंधेरे में चीख' कहा था और चीख का अर्थ है कि हम जो लिखेंगे, उसका रिस्पांस मिलेगा, गूंज सुनने को मिलेगी!

-कहानी का प्रमुख गुण आपकी नज़रों में?

-मेरी नज़रों में कहानी का प्रमुख गुण है - उत्सुकता! उत्सुकता के समाप्त होते ही कहानी समाप्त हो जायेगी! कहानी के महत्त्व को कम करके आंका गया है। मनुष्य रहस्य में आनंद लेता है। इसलिए उत्सुकता प्रधान कहानी मनुष्य को आंतरिक आनंद देती है।

-साहित्य की क्या भूमिका है हमारे जीवन में?

-साहित्य संसार को बदलता नहीं, पर हमारे आसपास के परिवेश को बदल देता है। उन्होंने कहा कि साहित्य लेखन शून्य में नहीं रचा जाता! 'कला का जोखिम' पुस्तक में भी वे लिखते हैं कि कला न तो रोटी का बदल हो सकती है और न ही बुराइयों के विरूद्ध हथियार का काम दे सकती है। सिर्फ कला हमें क्या दे सकती है? वह है रोशनी का एक ऐसा हिस्सा जो धुंधले शीशे के आरपार देखने में आपकी मदद कर सकता है!

निर्मल वर्मा की नज़र में लेखक होने का मतलब गहरा असंतोष! लेखक को हमेशा पूर्णता की तलाश रहती है लेकिन पूर्णता मृगतृष्णा ही रहती है। कला मात्र छलना और यथार्थ के बीच के खेल को चित्रित करती है। यह खेल आखिर तक चलता रहता है।

-रचना प्रक्रिया के बारे में कुछ कहेंगे?

-लिखना शुरू करने से पहले कुछ धुंधली सी तस्वीर होती है, असंतोष होता है लेखक के मन में, धीरे धीरे तस्वीर कुछ कहने लगती है और पात्र दूसरी दिशा में खींच कर ले जाने लगते हैं। पात्रों के साथ डिक्टेटरशिप नहीं की जा सकती! बहुत सचेतता के साथ आती है यह कला!

-लिखने का कारण?

-कहानी पढ़ना, कविता पढ़ना और समाचारपत्र पढ़ना ये सभी अलग अलग महत्त्व रखते हैं! समाचारपत्र पढ़ने के बाद उसकी सार्थकता खत्म हो जाती है लेकिन कविता को बार बार पढ़ने को मन करता है। एक कलाकृति एक छोटी दुनिया से बड़ी दुनिया में ले जाती है और हमें अपनी ही दुनिया को दूसरी आंख से देखने का सामर्थ्य प्रदान करती है। इससे लिखना सार्थक हो जाता है। कलाकृति जीवन और यथार्थ के रिश्ते को बदलती है। अंत में उन्होंने बड़ी विनम्रतापूर्वक जोड़ दिया था कि जहां आत्मा ठिठुरती हो, उसे गर्माहट देना लेखकों का काम है। लेखक एकदम गेहूं या अन्य वस्तुओं की तरह कुछ भी पैदा नहीं कर सकता। वह आत्मा की भूख को और चित्त को शांति प्रदान करता है!

-विदेश में बस जाने का विचार कभी मन में नहीं आया?

-वास्तव में यहां रहकर मैंने अपने ही देश को नयी निगाह से देखा। वहां मुझे अपने देश की संस्कृति को आलोचनात्मक दृष्टि से देखने का अवसर मिला। इसका यह बड़ा कारण शायद हिंदी में लिखना भी है! मछली जल से बाहर रहकर भला जीवन कैसे बितायेगी ? जो व्यक्ति थोड़ा लिखते हैं लेकिन अच्छा लिखते हैं उससे उनका महत्त्व या वजन कम नहीं हो जाता!

निर्मल वर्मा के साथ बिताये वे तीन दिन उनके उपन्यास 'वे दिन' की तरह कभी नहीं भूलेंगे! **विनम्र श्रद्धांजलि।**

श्री कमलेश भारतीय, पूर्व उपाध्यक्ष हरियाणा ग्रंथ अकादमी, 1034-बी, अर्बन एस्टेट-।।, हिसार-125005 (हरियाणा) मो. 94160-47075

लेख - दीपावली, अब दुनियां का त्यौहार - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारतीय सारी दुनिया में हैं। अपनी बुद्धि, मेहनत और लगन के साथ शांत मिलनसार स्वभाव चलते विदेशी भी भारतीयों की कद्र करते हैं। आज के समय में त्यौहारों पर व्यवसायिकता हावी हो चुकी है। धार्मिकता से अधिक मौज मस्ती त्यौहार का हिस्सा बन चुकी है। क्रिसमस, हेलोवीन, न्यू ईयर पार्टियां दुनियां का कल्चर बन गई हैं। ईद, रमजान आदि मुस्लिम देशों में कट्टरता से मनाए जाते हैं, पर तब भी बाजार रौनक बनाकर चुपचाप अपना दिन दूना रात चौगुना काम करता रहता है। चीन में भले ही कोई भी धर्म के धर्मावलंबी हों, उन्होंने दुनियां भर के धर्म, पर्व को लेकर सामयिक उत्पाद प्रस्तुत कर स्वयं की आर्थिक वृद्धि करने में व्यापक सफलता अर्जित की है। नई जनरेशन हर धर्म के पर्व समान उत्साह से मना रही है।

दीपावली तो भारतीय संस्कृति का अद्भुत पर्व है। साफ सफाई, पाक पकवान, मिलने मिलाने, मन आनंदित करने वाले इस रोशनी के त्योहार में जाने कितना व्यापार होता है। लक्ष्मी की माया किसे पसंद नहीं हो सकती। दुनिया भर में लाखों हिंदुओं के साथ साथ सभी के द्वारा मनाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण और जीवंत त्योहारों में दीपावली का स्थान बनता जा रहा है. अमेरिका में दीपावली पर छुट्टी दी जाने लगी है तो दुबई के बुर्ज खलीफा इमारत पर रोशनी से हैप्पी दीपावली लिखा जाने लगा है। दुनियां में अनेकानेक स्थानों पर भव्य आतिशबाजी दीपावली पर आयोजित होती है। आबूधाबी में अक्षरधाम मंदिर की अनुमति को धार्मिक पर्यटन के एंगल से जोड़कर भी देखा जाता। दिवाली खुशी और एकता का प्रतीक है. यह त्यौहार अंधकार पर प्रकाश की जीत और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है. यह परिवारों के लिए एक साथ आने, उपहारों का आदान-प्रदान करने और स्वादिष्ट भोजन साझा करने का अवसर होता है. पूरी दुनिया में आज भयावह युद्ध के बादलों का अंधेरा छा रहा है, ऐसे में मनोभावों से मनुष्यता की रोशनी फैलाने की क्षमता रखने का पर्व दीपावली ही है.

दिवाली की सबसे प्रमुख विशेषताओं में से एक है घरों और सार्वजनिक स्थानों को अनगिनत तेल के दीयों, मोमबत्तियों और रंगीन रंगोली डिज़ाइनों से सजाना. दुबई में इस परंपरा को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है. लोग अपने घरों और व्यवसायों को रोशन तेल के लैंप और जीवंत लालटेन से सजाते हैं. इन लैंपों की चमक से शहर का परिदृश्य जीवंत हो उठता है, जिससे एक मंत्रमुग्ध और अलौकिक वातावरण बनता है. वैज्ञानिक संसाधनों से बदलाव स्पष्ट दिखता है, बिजली की रोशनी अधिक हो गई है।

दिवाली की खरीदारी का उत्साह कई सप्ताह पहले से ही शुरू हो जाता है, दुबई के बाज़ारों और मॉलों में खरीदारों की भीड़ रहती है जो सही पोशाक और उपहारों की तलाश में रहते हैं. पारंपरिक भारतीय कपड़े

जैसे साड़ी, कुर्ता-पाजामा और सहायक उपकरण बाज़ारों में छाए हुए हैं. इसके अतिरिक्त, स्टोर मीठे व्यंजनों और नमकीन स्नैक्स की एक सीरिज पेश करते हैं जो दिवाली उत्सव का एक अभिन्न अंग हैं. दिवाली उत्सव की भव्यता दुबई के आसमान को रोशन करने वाली शानदार आतिशबाजी से भी स्पष्ट होती है. ये आतिशबाजी शो अक्सर बुर्ज खलीफा और पाम जुमेराह जैसे प्रतिष्ठित स्थानों पर आयोजित किए जाते हैं, जो एक मनमोहक दृश्य बनाते हैं। यह सब दुनियां भर के दर्शकों को आश्चर्यचकित कर देता है. इस अवसर पर नून, अमेजन, फ्लिपकार्ट, अलीबाबा जैसे आनलाइन बाजार अरबों डॉलर के कारोबार करते हैं। दिवाली के दौरान दुबई के रेस्तरां विशेष दिवाली-थीम वाले मेनू पेश करते हैं, जिससे निवासियों और पर्यटकों को पारंपरिक भारतीय व्यंजनों और मिठाइयों का स्वाद लेने का मौका मिलता है. मुंह में पानी ला देने वाले भारतीय व्यंजनों की सुगंध हवा में भर जाती है, जो हर किसी को त्योहार के पाक आनंद में शामिल होने के लिए लुभाती है. दुबई में सारी दुनियां से आए लोग रह रहे हैं, युवा पीढ़ी जाति, धर्म, क्षेत्र के संकोच को तोड़ चुका है। अंतर्देशीय विवाह बहुत सामान्य हो गए हैं, इस तरह भी त्योहारों के दायरे दिन पर दिन बढ़ रहे हैं। अब दीपावली वैश्विक संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है।

श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव 'विनम्र', ए २३३ , ओल्ड मीनाल रेजीडेंसी भोपाल ४६२०२३ मो. 9425484452
vivek1959@yahoo.co.in

व्यंग्य - बयानों की दीपावली सेल - श्री प्रभाशंकर उपाध्याय

"सर! मैं, बयानगीरी कंपनी का सेल्स रिप्रेजेंटेटिव हूं। हमारी कंपनी ने विभिन्न मौकों के ताजा हालातों के मुताल्लिक, मुख़तलिफ़ बयान बनाए हैं। अभी दीपावली पर कंपनी स्पेशल डिस्काउंट भी दे रही है। अगर आपकी इजाजत हो तो, मैं कुछ प्रॉडक्ट आपकी सेवा में पेश करना चाहता हूं। "

मेरे नगर के एक प्रमुख नेताजी के द्वार पर वह सेल्स रिप्रेजेंटेटिव खड़ा था। वह बंदा सुप्रशिक्षित प्रतीत होता था क्योंकि हिंदी-अंग्रेजी-उर्दू के लफ्जों की खिचड़ी बोली फर्राटे से बोल रहा था। उसके लहजे से प्रभावित होकर नेताजी उसे अपने ड्राइंगरूम में ले आये। अंदर आकर उसने अपना लैपटाप ऑन किया। "सर! ये सैम्पल देखिये इन्हें हमारी कंपनी ने अपनी वेबसाइट पर लाँच किया हुआ है। देश और दुनिया के हालातों के मुताबिक ये अपडेटेड होते रहते हैं।"

"यह देखिए, श्रीमान्! यह फुलझड़ी वक्तव्य है। कुछ देर के लिए चकाचौंध पैदा कर देता है, लेकिन इसकी समयावधि फुलझड़ी की तरह अल्प है। इसीलिए यह सस्ता है और इस पर कंपनी डिस्काउंट भी दे रही है।"

"इसे देखिए, हुजूर! यह पटाखा बयान है। इसके जारी होते ही धमाका मच जाता है लेकिन कुछ देर बाद शांति छा जाती है। यह भी ज्यादा मंहगा नहीं है। लीजिए, इस प्रॉडक्ट को देखें सर, यह सूतली बम की तरह है। धमाके के साथ यह झनझनाहट भी मचा देता है और पीछे से धुआं भी छोड़ता है। इसलिए, इस बयान के साथ में इसका खंडन भी संलग्न है।"

"यह मसाइली बयान है। इसे मिसाइल की तरह दागा जाता है और यह टारगेट पर जाकर चोट करता है, लेकिन राजनीति के संसार में इसकी उपयोगिता सीमित है।"

"अब मैं आपको हमारा अगला प्रॉडक्ट दिखाता हूं। इसे चकरघिन्नी स्टेटमेंट कहते हैं। इसकी कैफ़ियत यह है कि यह अनेकार्थों से युक्त है। उलटबांसी वाली भाषा की वजह से यह बयान फिरकी की तरह गोल गोल घूमता है। इस बयान के प्रकाश में आते ही प्रतिक्रियास्वरूप अनेक बयान आ जाते हैं। इसीलिए हम इसे सीरीज-बयान भी कहते हैं। यह काफी कॉस्टली प्रॉडक्ट है। फिर भी कंपनी की ओर से इसके साथ खंडनों का एक सेट मुफ्त दिया जा रहा है तथा ईमेल के मार्फत हम विषयानुसार मदद भी उपलब्ध करवाएंगे।"

"हुकम! अब मैं पेश कर रहा हूं हमारी कंपनी का विशेष प्रॉडक्ट। इसे बनाने के लिए हमारी रिसर्च-विंग ने काफी मेहनत की है। यह गारंटीड-बयान कहलाता है। इसमें भांति भांति के मिर्च-मसालों का अभूतपूर्व मिश्रण किया गया है। अतः, इसके विवादास्पद होने की पूरी गारंटी है, साथ ही मीडिया में प्रकाशित और प्रसारित होने की पक्की गारंटी भी है। इस ब्रांड के लिए कंपनी ने विशेषतौर से 'टॉइ-अप' किया हुआ है। इस ऑफर

में आपके वक्तव्य की प्रस्तुति सचित्र होगी, जिसे हम करवायेंगे। आप इस प्रॉडक्ट के द्वारा देश या दुनिया में चर्चित भी हो सकते हैं। अगर ऐसा हुआ तो आपकी पहचान स्थानीय से प्रमोट होकर राष्ट्रीय हो जाएगी। ”

“हुजूर! यह आपके लिए एक बेहतरीन मौका है, इस प्रॉडक्ट को लेने में चूकिए मत। दरअसल, हमारी कंपनी के अनेक रिप्रेजेंटेटिव इस वक्त फील्ड में हैं। इससे पहले कि आपका कोई अन्य प्रतिद्वंदी इस प्रॉडक्ट पर हाथ मारे, आप उससे पहले ही अपना रजिस्ट्रेशन करवा लीजिये। आई मीन फर्स्ट परजेच, फर्स्ट सक्सेस। ”

“क्या कहा सर? अभी आप बयान जारी करने के मूड में नहीं है। कोई बात नहीं। हमारी वेबसाइट डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट बयानगीरी डॉट काम की हेल्प से जब चाहे तब बयानों की ऑन लाइन खरीद कर सकते हैं। हमारी साइट पर लॉगिन करके आप अपने स्टेटमेंट भी जारी कर सकते हैं। इसके लिए हर तरह की हैल्प प्रोवाइडेड है। आपको सिर्फ अपने वक्तव्य के पाइंट फीड करने होंगे। उसके बाद आप प्रॉडक्ट के ऑप्शन को ड्रॉप बॉक्स की मदद से सलेक्ट कर ओ. के. करें। हमारी साइट फौरन ही आपका बयान तैयार कर देगी। लेकिन ऑन लाइन खरीद के बाद, उसे छपवाने या प्रसारित करवाने की मशक्कत आपको ही करनी होगी। कंपनी का टॉइ-अप वाला ऑफर सिर्फ रिप्रेजेंटेटिव के मार्फत ही उपलब्ध है, महोदय!”

अंततः, उस कुशल सेल्स मैन ने नेताजी को वह मंहगा और ‘स्पेशल प्रॉडक्ट’ बेच ही दिया।

श्री प्रभाशंकर उपाध्याय, 193, महाराणा प्रताप कॉलोनी, सवाईमाधोपुर (राज) 322001, मो -9414045857

व्यंग्य - सांप की रेल यात्रा - श्री जय प्रकाश पाण्डेय

बीचों - बीच में बड़ा प्लेटफार्म हो और प्लेटफार्म के इधर भी सवारी गाड़ी खड़ी हो और उधर भी सवारी गाड़ी खड़ी हो तो कई बार बड़ा लफड़ा बन जाता है। पितृपक्ष चल रहा है इन दिनों स्टेशन में बहुत भीड़ होती है, लोग गया जाकर पितरों का श्राद्ध करते हैं। हमारी रेलगाड़ी राष्ट्रीय एकता की मिसाल के साथ साम्प्रदायिक सौहार्द का उदाहरण पेश करने में सबसे आगे रहती है। पितृपक्ष में रेल यात्री अपने अलावा पुरखों के नाम की भी टिकिट लेकर "गया "तक की यात्रा पुरखों की कराते हैं और ये हमारी रेलगाड़ी पितरों को मोक्ष दिलाने में अहम भूमिका निभाती है। गंगू अपने भाई के साथ 'गया' जा रहा है और उसने तीन बर्थ का रिजर्वेशन लिया है गंगू के स्वयं के नाम पर एक बर्थ, भाई के नाम पर एक बर्थ और एक बर्थ अपने दिवंगत पिता के नाम पर... प्लेटफार्म में रेलमपेल भीड़ है। प्लेटफार्म के इस तरफ गया जाने वाली गाड़ी खुलने को तैयार है और इसी प्लेटफार्म के उस तरफ मुंबई को जाने वाली गरीब रथ चलने के लिए सीटी मार रही है। रेलमपेल भीड़ में गंगू के दिवंगत पिता की आत्मा भीड़ की धक्कामुक्की में गरीब रथ से टकरा जाती है और रेंगती हुई चल पड़ी गरीब रथ के जी-3 कोच में प्रवेश कर जाती है। गरीब रथ मुंबई की ओर स्पीड पकड़ लेती है, जब आत्मा खड़े खड़े थक जाती है तो 23 नंबर की खाली पड़ी बर्थ में लेट जाती है, नींद लग जाती है, सुबह हुई तो कसेरा स्टेशन पर लोग चाय पीते, इडली खाते नजर आए, बाजू के बर्थ से आवाज आई आज ये गाड़ी मुंबई आधा घंटे लेट पहुंच पाएगी... आत्मा ने सुना कि ये गाड़ी मुंबई जा रही है, इसका मतलब गया नहीं जा रही है, आत्मा ने आस-पास गंगू और भाई की तलाश की, कहीं नहीं दिखे तो आत्मा घबरा गई, सामने से टीटीई आता दिखा, आत्मा को मालुम था कि बिना टिकट यात्रा करना अपराध है, जेल हो जाती है, किसी की सुनवाई नहीं होती, इसीलिए आत्मा ने टीटीई को डराने के लिए पांच फुट लम्बे जहरीले सांप का रूप धर लिया और 23 नंबर की बर्थ पर चहलकदमी करने लगी, टीटीई तो डर कर चुपचाप भाग खड़ा हुआ पर एक यात्री ने 23 नंबर की बर्थ पर जहरीले सांप को उठते बैठते देख लिया और चुपके से वीडियो बना कर वाइरल कर दिया। यात्री अपने परिवार के लोगों को वहां से लेकर दूसरी सीट की ओर भागा, इस दौरान उसने अन्य यात्रियों को बताया, कोच में भगदड़ मच गई, सांप को देखने भीड़ व्याकुल हो गई। देखते ही देखते यात्री सांप के डर से कोच छोड़कर दूसरे कोच में चले गए, इस दौरान उन्होंने रेलवे को इसकी जानकारी दी, लेकिन रेलवे वाले भी कोच में सांप की तलाशी नहीं कर पाए इसीलिए रेलवे वालों ने कोच खाली कराके कोच लाक कर दिया, और गाड़ी मुंबई के लिए रवाना कर दी। जब सांप का वीडियो वायरल हुआ तो पत्रकारों को अच्छा मसाला मिल गया, कुछ पत्रकार छत्रपति शिवाजी टर्मिनल पहुंच गए, गरीब रथ रुकते ही यात्रियों के इंटरव्यू लेने लगे, एक ने कहा - रेलवे अभी तक चूहे - काकरोचों को यात्रियों की सेवा में साथ रखती थी अब सांप को भी निःशुल्क यात्रा कराने लगी है। दूसरे ने कहा -

यात्रियों को बर्थ तो मिलती नहीं रेलवे अब सांप से डरकर बर्थ देने में उन्हें प्राथमिकता देने लगी है। तीसरे ने कहा कि रेलवे अब नया प्रयोग कर रही है रेलवे में बढ़ती चूहों की संख्या को देखकर उन्होंने सांप की ड्यूटी लगा दी है। चौथे ने कहा -यार्ड में मेंटनेंस होने वाले कोचों की जांच में लापरवाही चल रही है ये जरूर मैकेनिकल विभाग की लापरवाही का नमूना है। एक पत्रकार ने सीधे रेल मंडल के सबसे बड़े साहब को फोन लगा दिया, पत्रकार ने कहा जिस रेलगाड़ी में जहरीला सांप 23 नंबर की बर्थ में बिना टिकट यात्रा कर रहा था, यह रेलगाड़ी आपके रेलमंडल से चालू होती है और आपके यार्ड के मेंटनेंस विभाग ने कोच में जहरीले सांप को सवार करके मुंबई भेजने में सहायता की है, इस मामले में आपका क्या कहना है ? पत्रकार की बात सुनकर पहले तो साहब ने इंकार किया कि सांप कोच में था ही नहीं... फिर जब उनको वाइरल हुआ वीडियो भेजा गया तो कहने लगे कि सांप दूसरे मंडल के स्टेशन से कोच में चढ़ा होगा, हमारे यहां के प्लेटफार्म से गाड़ी 14 घंटे पहले रवाना हुई थी यदि सांप हमारे मंडल से चढ़ा होता तो अभी तक तो 14 यात्रियों को काट चुका होता। पत्रकार बोला - साहब आप रेलमंडल के सबसे बड़े साहब हो थोड़ा जिम्मेदारी से बयान दो, आप ही बताइए कि जिस ट्रेन में यात्री ही बमुश्किल से कोच की सीढ़ियां चढ़कर, दरवाजे खोलकर सीट पर बैठ पाते हैं, वहां सांप प्लेटफार्म से ट्रेन में चढ़ा और आसानी से अपर बर्थ में जा बैठा, ये हैरानी वाली बात नहीं है क्या ?

पर आप कुछ मानने तैयार नहीं हैं और ऊपर से ये कह रहे हैं कि जब यात्री ने सांप को ट्रेन की सीढ़ी पर चढ़ते देखा तो सांप को रोका क्यों नहीं... आप ठीक से जबाब नहीं दे पा रहे हैं इसीलिए हमें आपके मंत्री जी से सही जानकारी लेनी होगी, उन्होंने फोन काट दिया।

मंत्री जी को फोन लगाया गया उन्होंने कहा कि ऐसा कुछ पता तो चला है पर आप बताएं कि राष्ट्रीय एकता की प्रतीक हमारी रेलगाड़ी में सांप यात्रा नहीं कर सकता क्या ? पत्रकार ने कहा - मंत्री जी आपकी रेलगाड़ी है आप कुछ भी कर सकते हैं, किसी को भी यात्रा करा सकते हैं, आमने-सामने से दो ट्रेनों की टक्कर कराके नये नये तमाशे करा सकते हैं, पर गरीब रथ के सांप प्रकरण पर तो थोड़ा सा बता सकते हैं न ?

मंत्री - देखिए, हमने जांच के आदेश दे दिए हैं, जहां तक सांप की बात है उसे हमारे विभाग के लोग पकड़ नहीं पाए और सीधी सी बात है वे पकड़ ही नहीं पाएंगे क्योंकि उस कोच में तैनात टीटीई ने बताया है कि जब वे उस कोच में टिकट चेकिंग के लिए घुसे और 23 नंबर पर सोये हुए यात्री को जगाकर टिकट की मांग की तो उस 23 नंबर की बर्थ पर एक जहरीला सांप फन काढ़ कर खड़ा हो गया, जिससे टीटीई डरकर भाग गए और सदमे में आकर दूसरे कोच में जाकर छुप गए, किसी को कुछ बताया नहीं क्योंकि इस विकास के युग में ऐसी बात बताने से सब उसे पागल घोषित कर देते ...पर पत्रकार जी ये भी तो सोचिए कि सांप ने किसी को डराया नहीं, किसी को काटा नहीं, रात भर सब यात्रियों को बढ़िया सोने दिया। सांप अब समझदार हो गए उनका पूरा विष तो मंत्री और नेताओं के पास आ गया है। जब कुछ हुआ ही नहीं तो

काहे का बखेड़ा खड़ा किया जा रहा है, विपक्ष वाले तो ये भी कह रहे हैं कि गरीब रथ वालों ने ध्यान नहीं दिया, 23 नंबर बर्थ में कोई भटकती आत्मा बिना टिकट सवार हो गईं थी, सही ढंग से टीटीई ने बेटिकट यात्रियों की जांच नहीं की, और वे लोग ये भी कह रहे हैं कि रेलवे यात्रियों को तो बर्थ देती नहीं है और सांप को बिना टिकट बर्थ देकर शान से मुंबई पहुंचाती है, रेलवे में सुरक्षा वगैरह से कोई मतलब नहीं है। अभी बिलासपुर लाइन में 150- 200 तोते बिना टिकट यात्रा करते पकड़े गए थे, उनका क्या हुआ अभी तक कुछ पता नहीं है। अभी दयोदय एक्सप्रेस के एसी कोच में सांप के आराम करने की खबर मिली है कहीं विपक्षी नेता सांप बनकर हमारी रेलगाड़ी में बेटिकट यात्रा तो नहीं कर रहे हैं। खैर, पत्रकार जी आप परेशान नहीं हों, हमने जांच कमीशन बैठा दिया है एक -दो साल में जब रिपोर्ट आएगी तो आपको पत्रकार वार्ता में जरूर बुलाया जाएगा और पर्याप्त आवभगत करके बड़ी गिफ्ट के साथ बिदा किया जाएगा...

श्री जय प्रकाश पाण्डेय 416 – एच, जय नगर, आई बी एम आफिस के पास जबलपुर - 482002 मोबाइल 9977318765

व्यंग्य - अथ उल्लू कथा - डॉ. प्रदीप शशांक

उल्लू को तो आप सब जानते ही हैं । यह पक्षी रात के अंधेरे में ही अच्छी तरह देख पाता है, दिन का उजाला उसके लिये अभिशाप है, और बड़े बड़े कारनामे रात के अंधेरे में ही होते हैं । अब कौन कौन से कारनामे, यह सब बताने की जरूरत नहीं है, आप सब समझदार हैं।

ऐसी मान्यता है कि लक्ष्मी जी रात के अंधेरे में ही विचरण करती हैं अतः उन्होंने अपना वाहन उल्लू को ही चुना।

कुछ समय पूर्व समाचार पत्र में पढ़ा था कि देश में उल्लुओं एवं शिकारी बाजों की संख्या निरंतर कम हो रही है, इसलिये उनकी नस्ल की सुरक्षा हेतु सरकार को प्रयत्न करना चाहिए।

वैसे भारत में उल्लुओं की कोई कमी नहीं है। एक ढूंढो हजार मिलेंगे, दूर ढूंढोगे, पास मिलेंगे। आप अपने आसपास नजरें इनायत तो कीजिये, आपको हर कोई अपना उल्लू सीधा करता नजर आयेगा। नेता देश की भोली भाली जनता को अच्छे दिनों का सब्ज बाग दिखाकर निरंतर उल्लू बना ही रहे हैं। वैसे नेता कभी नहीं चाहेंगे कि देश में उल्लुओं की संख्या कम हो क्योंकि यदि सब समझदार हो गये तो फिर नेताओं को पूछेगा कौन। यदि जनता समझदार हो गई तो नेता किसे अपने झूठे वादों, नारों, आश्वासनों से उल्लू बनायेंगे । आज देश की राजनीति उल्लुओं की वैशाखी के सहारे ही चल रही है। जैसे नेता जनता को उल्लू समझते हैं वैसे ही जनता भी नेताओं को उल्लू समझती है और मौका मिलते ही चौका लगाकर अपनी समझदारी का परिचय दे देती है।

कुछ दल प्रमुख अपने किसी खास नेता को पद का लालच देकर काठ का उल्लू बनाकर पर्दे के पीछे से कठपुतली की तरह नचाकर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं।

आजकल उड़ने वाले उल्लू जरूर मुश्किल से नजर आते हैं लेकिन राजनीतिक उल्लू खूब इस दल से उस दल में चहलकदमी करते हुए नजर आने लगे हैं । जब भी इनका मन करता है, उन वोटरों को, जिन्होंने अपना कीमती वोट उन्हें दिया, उल्लू बनाते हुए कुछ दिन रिसोर्ट में पिकनिक मनाकर दूसरे दल में समाहित हो जाते हैं। जनता इनके कृत्यों को देखकर अपने आपको ठगा सा महसूस करते हुए उल्लू बन पछताती रह जाती है। वह सोचती है कि जब हमने उन्हें जिस दल में रहने चुना था तो वह हमारी मर्जी के बिना कैसे दल बदल रहे हैं।क्या दल बदलने से पहले वोटरों से पूछना जरूरी नहीं है? काश! ऐसा कोई कानून हो तो जनता उल्लू बनने से बच तो सकती है।

अब तो चारों ओर उल्लू ही उल्लू नजर आने लगे हैं। सबने अपने अपने उल्लू साध रखे हैं। कोई धर्म के नाम पर, कोई मजहब के नाम पर, कोई जाति के नाम पर जनता को उल्लू बना रहा है।

दीपावली की अंधेरी काली अमावस की रात को कुछ सिद्ध हस्त तांत्रिक अपनी तंत्र क्रियाओं के द्वारा उल्लू (पक्षी)को वश में कर मनचाहा काम कराते हैं। ऐसा सुना है कि सफेद दाढ़ी वाले तांत्रिक बाबा ने भी उल्लू की लकड़ी घुमाकर देश की जनता को अपने वश में करने का दावा किया है, अब देखना यह है कि कब तक जनता पर उल्लू की लकड़ी के जादू का असर रहता है।

विपक्षी भी सत्ता पक्ष के विरोध में एकजुटता के नाम पर अपना उल्लू साध कर इसी आस में प्रधानमंत्री की कुर्सी पर नजर गड़ाये हुए हैं कि न जाने बिल्ली के भाग से कब छींका टूट जाये, और कुर्सी की रेस में अपने ही साथियों को उल्लू बनाते हुए आगे निकल जाएं।

देश के बड़े बड़े उद्योगपति जब चाहे तब बैंक वालों को उल्लू बनाते हुए करोड़ों रुपये का लोन लेकर मूंछों पर ताव देते हुए शान से विदेश में सैर करते रहते हैं। सरकार भी इस आशा में उनका लोन माफ कर देती है कि शायद लोन माफी सुनकर वह वापस आ जावें और हम उन्हें पकड़ कर लोन वसूल कर लेवें, लेकिन ये उद्योगपति इतने उल्लू नहीं हैं, जितना सरकार उन्हें समझती है। सरकार को उल्लू बनाना उनके बायें हाथ का खेल है।

अंत में हम तो बस यही कहेंगे कि 'एक ही उल्लू काफी है, बरबाद गुलिस्तां करने को, हर शाख पर उल्लू बैठा है, अंजामे गुलिस्तां क्या होगा।

डॉ. प्रदीप शशांक, श्रीकृष्णम इको सिटी श्रीराम इंजीनियरिंग कॉलेज के पास, कटंगी रोड, माढ़ोताल, जबलपुर (म. प्र.) 482002 मो. 9131485948

संस्मरण - मेरी डायरी के पन्ने से… सरस्वती - सुश्री ऋता सिंह

जिस घटना का उल्लेख आज करने जा रही हूँ वह एक बहुत ही पुरानी घटना है। मेरे हृदय के किसी कोने में सुप्त रूप से सारी स्मृतियाँ कुंडली मारे अब तक बैठी थीं। आज अचानक हरिवंश राय बच्चन जी की आत्मकथा भाग दो नीड़ का निर्माण फिर पढ़ते समय वह सुप्त स्मृतियाँ एक झटके में आँखों के सामने वास्तविक रूप लेकर खड़ी हो गई।

बच्चन जी ने अपनी बीमार धर्मपत्नी श्यामा की अल्पायु में मृत्यु होने पर जिस वेदना का अनुभव किया था तथा पत्नी की मृतदेह को जब वे श्मशान घाट पर ले गए तो उनकी जो मनोदशा थी ठीक उसी प्रकार की मनोदशा का सामना मेरे घर पर काम करनेवाली एक सेविका ने भी किया था। आज पुस्तक पढ़ते हुए जैसे मानस में चिनगारी फूटी और हम दोनों के बीच के वार्तालाप और उसकी स्मृतियों का दर्द चित्र बनकर उभर आया।

अपने जीवन में मुझे एक ही समय में तीन अलग -अलग बोर्ड के विद्यालयों में शिक्षकों को प्रशिक्षण देने तथा छात्रों को कथा सुनाने तथा पढ़ाने का सुअवसर मिला था। नब्बे के दशक में कुछ वर्ष मेरे लिए अत्यंत व्यस्तता का काल रहा है। घर पर लड़कियाँ भी बड़ी हो रही थीं और नियमित अलग -अलग व्यंजनों की माँग किया करती थीं। मैं अपनी व्यस्तता के कारण रविवार के अलावा अन्य दिनों में उनकी माँगें पूरी नहीं कर सकती थी। इस बात का दुख मुझे आज भी है पर इसके साथ एक और लाभ यह हुआ कि मुझे 1990 से 2009 तक दो ऐसी महिलाएँ मिलीं जिनमें से एक बँगाल और एक उड़िसा की निवासी थीं तथा हमारी बेटियों को कई मन पसंद भोजन पकाकर खिलाया करती थीं।

सरस्वती बँगाली थी। वह कूचबिहार की निवासी थी। उसने हमारे घर पर 1990 से 1994 तक रसोई की ज़िम्मेदारी संभाली थी। उसके कारण मैं भी निश्चिंत होकर अपने काम में और अधिक समय देने में समर्थ हो गई थी।

बात 1991 की है। गर्मी की छुट्टियाँ थीं। मैं टी वी पर कोई पुरानी फिल्म देख रही थी। साथ में सरस्वती भी बैठकर सिनेमा देख रही थी। वह दिन भर हमारे पास ही रहती थी। रात का भोजन पकाकर ही घर जाती थी।

सिनेमा में एक दृश्य दाहसंस्कार का आया। मुखाग्नि के साथ ही चिता धू -धूकर जलने लगी। उस दृश्य को देखकर सरस्वती ज़ोर से चिल्ला पड़ी और दोनों कान पर हथेली रखकर ज़ोर से बाँग्ला भाषा में बोली "मैंने ऐसे ही अपनी माँ को जलते देखा था।" यह कहते ही वह बच्चे की तरह रो पड़ी। मैंने तुरंत टीवी बंद किया और उसे अपनी गोद में भींच लिया। मेरे वस्त्र उसके आँसुओं से गीले हो गए। बहुत देर रोने के बाद जब वह शांत हुई और उसने जो घटना सुनाई मैं उसी संस्मरण को यहाँ उसी के शब्दों में प्रस्तुत कर रही हूँ।

सिसकती हुई वह बोली...

मैं तेरह वर्ष की थी जब मेरी शादी कर दी गई थी। मेरे पति साधारण मजदूरी का काम करते थे। मैं सात क्लास तक पढ़ी थी। अपनी छोटी सी कुटिया को प्रतिदिन लीपना मुझे अच्छा लगता था। घर के सामने आँगन के चारों ओर मैंने बाँस काटकर बेड़ा लगाया था। छोटा- सा फाटक भी बनाया था। घर के आस-पास की खुली जगह पर मिर्ची टमाटर अरबी आलू बैंगन कद्दू, तरोई, करेले की बेलें चढ़ाई थी और फसलें उगाती थी। मैं चावल पीसकर अपने घर के आँगन में आल्पना देती थी। मेरे घर वाले मुझ से बहुत खुश थे। पति अच्छा आदमी था। पर मेरी तकदीर में सुहागिन रहना न लिखा था। दो साल बाद मेरे पति को साँप ने काटा और उसकी मौत हो गई। मैं पहली बार श्मशान गई थी और वह भी ज़िद करके। उसकी चिता जब जली तो मेरी माँ ने मेरे चेहरे को अपने आँचल से ढाँक दिया था। मैं रोती हुई सबके साथ घर लौट आई थी।

मेरे पति की मौत के बाद घरवालों ने मुझे चिटगाँव भेज दिया। चिटगाँव बाँगलादेश का हिस्सा है। वहाँ मेरी ननद रहती थी। ननदोई का मछली पकड़ने का छोटा -सा व्यापार था। वह रोज़ शराब पीता था। उसने मुझे कई बार छेड़ने का प्रयास किया। एक बार मैं उसके काबू में भी आ गई थी। वह उस दिन बहुत पिया हुआ था। तो मैंने स्वयं को बचाने के लिए उसे बहुत से लात मारे और घर से भागती हुई नदी के पास आ गई।

उस वक्त मेरी उम्र सोलह-सत्रह रही होगी। भूखी-प्यासी छह दिन बाद कभी नाव में तो कभी बस में तो कभी चलकर मैं अपने गाँव कूचबिहार पहुँची। माँ मुझे उस हाल में देखकर बहुत दुखी हुई थी। वह खेतों में काम करके अपना गुज़ारा किया करती थी। मैं भी चावल के खेत में काम करने लगी।

मेरे घर लौट आने पर गाँववालों ने मेरी चर्चा शुरू कर दी। मेरी माँ से भी खास कोई बात नहीं करता था। मैंने खेतों में काम करना बन्द कर दिया। अब मैं बाँस से टोकरी बनाने, चटाई बनाने, चिक बानाने की कला सीखने लगी।

बाज़ार में अच्छी कीमत भी मिलने लगी। मैंने खूब मेहनत की और थोड़ा रुपया भी जमा कर लिया।

हम माँ बेटी कूचबिहार से कोलकाता आ गए। माँ एक रेस्तराँ में बर्तन माँजने का काम करती थी और मैं उसी रेस्तराँ में सब्जी काटने का काम करती थी। माँ की मदद भी किया करती थी।

1973 की बात है। उस साल भारी वर्षा हुई हम दोनों ही काम पर न जा सकीं। चौथे दिन जब काम पर गईं तो हमें काम से निकाल दिया गया। हाथ में जो थोड़े रुपये थे उन्हें लेकर हम कूचबिहार लौट आए।

माँ बहुत बीमार पड़ी। दवा-दारू करने पर भी वह ठीक न हुई और एक दिन उसने दम तोड़ दिया। मैंने घर -घर जाकर मदद माँगी पर किसीने मेरी सहायता न की। मेरे घर से थोड़ी दूरी पर श्मशान घाट था। माँ की देह अब फूलने लगी थी। उसकी ही दो चार साड़ियों में उसके भारी और फूली देह को मैंने किसी तरह लपेटा फिर उसे एक चटाई पर लुढ़काकर रस्सी से बाँधा और अकेली ही उसे खेतों के बीच में से घसीटती हुई श्मशान तक ले गई।

इतना कहकर सरस्वती फिर फूट-फूटकर रोने लगी। अब तक अश्रुओं की धार हल्की फुहारों की तरह दोनों नैनों से बह रही थी। श्मशान घाट पहुँचाने की कथा सुनाते ही मानो नयनों में स्मृतियों की बाढ़ उतर आई और वह बेतहाशा बेसुध होने लायक रोती रही।

इस घटना को घटे शायद बीस वर्ष के करीब हो गए थे पर उसके हृदय के भीतर लावा धधक रहा था जो आज टीवी के एक दृश्य को देखकर फूट पड़ा।

काफी समय बाद जब सरस्वती स्थिर हुई, पानी पी, उसका रोना बंद हुआ तो स्वयं शांत होकर वह पुनः बोलने लगी...

मैं एक तरुणी अकेली ही चटाई में लाश खींचकर थकी सी पसीने से लथपथ होकर श्मशान पहुँची तो वहाँ उपस्थित डोम ने मेरे सिर पर हाथ रखा। मेरी मानसिक और शारीरिक अवस्था और वेदना उससे छिपी न थी। उसने कुछ अन्य डोमों को पुकारा। मैंने अपने आँचल में बँधे कुछ नोट उसे देने चाहे। उसने लेने से इन्कार किया और कहा - कुछ पुण्य हमें भी कमा लेने दे माँ!

उन चार लोगों ने लकड़ियाँ लाकर चिता सजाई उस पर माँ की देह रख कुछ लकड़ियाँ उस पर डाल दी। कोई पूजा पाठ न किए गए, कोई अंत्येष्टि न हुई क्योंकि उन्हें यह काम नहीं आता था। वे तो चिता जलाने और कपाल क्रिया में ही माहिर होते थे।

उस दिन मुझे ज़रा भी डर नहीं लगा था। चार डोम थे मेरी माँ की चिता के पास। रह रह कर लकड़ियों को लंबी लकड़ी से हिलाते रहते और आग को फैलने देते। मेरी माँ की देह जल रही थी और मैं विवश खड़ी विलाप करती हुई उसे देख रही थी।

मैंने उनसे पूछा था कि मैं आपका ऋण कैसे चुकाऊँ। जानते हो दीदी उन्होंने क्या कहा?

उन्होंने कहा -जा माँ, हम पाँच लोगों के लिए माछ भात पका दे। तब तक चिता जल जाएगी।

कल तोरसा नदी में भस्म बहा देना और अपने घर चली जाना।

मैं उस रात उन डोमों के साथ श्मशान में ही रही। मुझे पाँच मर्दों के बीच ज़रा भी उस दिन डर नहीं लगा था। वे मेरे सिर पर हाथ रखते, माँ कहकर संबोधित करते जैसे मुझे सुरक्षा प्रदान कर रहे थे।

उन्होंने माछ भात खाया, ताड़ी पी और दो डोम चिता के पास बैठे रहे। मैं भी सुबह से भूखी थी। रो रोकर और मृतक को खींचकर बहुत थक गई थी। वहीं जलती चिता से थोड़ी दूरी पर मैं ज़मीन पर रोती हुई सो गई।

सुबह हुई तो आग ठंडी हो गई थी। डोम श्मशान साफ कर रहे थे। माँ के मृतदेह की राख ठंडी हो गई थी और एक मिट्टी की हाँडी में जमा कर दी गई थी।

में सुबह होते ही काफी चलकर नदी तक पहँची और जल में कुछ दूरी तक जाकर मिट्टी के घड़े को पानी में उलीच दिया। माँ को मैंने हमेशा के लिए खो दिया।

जब मैं दूसरे दिन दोपहर तक अपने घर लौट आई तो गाँव वाले मेरे घर के बाहर जमा थे। उन्होंने एक स्वर में मुझे गाँव छोड़ने के लिए कहा।

मेरा कहीं कोई न था। कहाँ जाती यह पता न था। मैं कुछ सामान गठरी में डालकर स्टेशन पहुँची और तब से मैं कई शहरों में भटकती रही। आपके शहर में तो मैं पिछले कई सालों से रह रही हूँ। काम भी मिला है। कमाती हूँ खाती हूँ। आपका भी धन्यवाद दीदी जो आपने मुझ पर भरोसा किया और शरण दी।

उस दिन मुझे अहसास हुआ कि हम छोटी- छोटी मुश्किलों से घबराते हैं। पर इस सरस्वती ने जो इतनी सी उम्र में झेला था, सामाजिक भर्त्सना और अपमान सहन किया था उनके सामने तो हमारे दुख दर्द कुछ भी नहीं है!

सरस्वती बहुत गुणी थी। कम बोलती थी। दोपहर को भी कुछ न कुछ करती रहती थी। कलात्मक सौंदर्य की अच्छी पहचान थी। हमारे घर में गोलाकार में एक सुपली थी जिसमें हम फर रखा करते थे। एक दिन दोपहर के समय उसने दुर्गा की आकृति बना दी। उसके हाथ के काम में सफाई थी। मगन होकर गुनगुनाती हुई भोजन पकाया करती थी। हमारी बेटियों को प्यार से परोसती थी। उसका बाँगला गीत गुनगुनाना हम हबको बहुत अच्छा लगता था।

आज सरस्वती इस शहर में नहीं रहती पर उसके जीवन की गाथा ने हमें जीवन में जूझने का साहस अवश्य ही दिया।

सुश्री ऋता सिंह, पुणे, महाराष्ट्र फोन नं 9822188517 ईमेल आई डी - ritanani1556@gmail.com

कहानी - यह दिवाली... - सुश्री गिरिजा कुलश्रेष्ठ

“हे भगवान, यह दिवाली हर साल क्यों आ जाती है? भले ही होली साल में दो बार आजाए लेकिन दिवाली तो एक बार भी नही आए और आए भी तो साथ में यह पटाखों की धूम-धड़ाक् हरगिज न लाए.”

उस समय जबकि चारों ओर दीपावली की धूमधाम थी. बाहर धड़ाधड़ पटाखे फोड़े जा रहे थे, बुँदकी एक कोने में कान बन्द करके बैठी सोच रही थी कि, ”क्या होना चाहिये और क्या नही, अगर यह हमारे हाथ में हो कि तो कितना अच्छा हो. ” अगर ऐसा हो जाए तो वह सबसे पहले पटाखे बनाने वाली फैक्ट्रियाँ बन्द करवा देगी। खुशी मनाने का यह भी कैसा तरीका है कि कोई खुशी मनाए और किसी का दिल धड़ धड़ करता रहे। खुशी जाहिर करने का यह एकदम बर्बर तरीका है. अरे, खुशी मनानी है तो फुलझड़ियाँ चलाओ, अनार जलाओ। गाओ, नाचो। यह क्या चटाक् पटाक्.. धूम-धड़ाम... । मानो गुस्साए बादल गरज रहे हों, धरती फट गई हो या कोई मकान गिरा हो। मानो त्यौहार नही मना रहे बल्कि किसी दुश्मन को मार गिराने के लिये किसी मोर्चे पर खडे हों। क्या ये पटाखे बदला, युद्ध और खून-खराबे की याद नही दिलाते ?

दीपावली का आना बुँदकी के लिये आफत की बारिश होना है. उसे जितना डर लड़ी पटाखों से लगता है उतना तो बिना होमवर्क पूरा किये ही स्कूल जाने से भी नही लगता। दशहरा-उत्सव बीतते बीतते दूसरे बच्चे तो खील-खिलौनों, नए कपड़ों के इन्तजार में खुशी-खुशी घर की सफाई और साज-सज्जा में बड़ों का हाथ बँटाते हैं, उनके सम्हाल कर रखे पिस्तौल तमंचा निकल आते है। और जहाँ मौका मिला फटाक् से चला देते है लेकिन बुँदकी की तो शामत ही आजाती है। उसके सामने एक ही सवाल होता है, एक ही काम होता है कि पटाखों की कनफोड़ आवाज से वह खुद को कैसे बचाए। वह बस सुन भर ले कि पटाखा चलने वाला है वह झट् से कान बन्द कर लेती है। फिर चाहे उसने हाथों में मेंहदी लगा रखी हो या खाना खा रही हो। अगर उसके हाथों में दूध का बर्तन हो और सामने बीच गली में पटाखा चलाने की तैयारी हो रही हो तो दूध को कही भी रख देती है और कान बन्दकर पटाखा फूटने का इन्तजार करती है. या फिर जितना दौड़ सकती है दौड़ने लगती है ताकि वह भयानक आवाज उसके कानों से होती हुई अन्दर पसलियों तक को न हिलादे।

उन दिनों उसे जब तब कानों में उँगली डाले ही बाहर निकलते देखा जा सकता है.

गली में निकलते हुए वह उसी तरह चीखती है जिस तरह एम्बुलेंस या फायर ब्रिगेड रास्ता माँगते हुए चीखती है कि, "अरे, अरे मुझे निकलने दो... यह क्या बदतमीजी है कि कभी भी कही भी पटाखे चलाना शुरु कर देते हो. यह रास्ता है तुम्हारा घर नही. "

एक दिन तो ऐसा हुआ कि वह चबूतरा पर खडी थी. उसकी गोद में नन्हा गत्तू था. तभी उसने देखा कि मंगल एक पटाखे को चिनगारी देने जा रहा है. बस उसने गत्तू को चबूतरा पर ही छोड दिया ताकि दोनों हाथों को कान बन्द करने के लिये आजाद कर सके। जब तक पटाखा चल नही गया, धमाका हो नही गया उसने जरा भी परवाह नही की कि वह नन्हा बच्चा लगातार रो रहा है। यह बात अलग है कि बाद में गत्तू को छाती से चिपकाए खुद भी रोती रही।

"इतनी बड़ी होकर भी डरती है. भला ऐसा भी क्या डर ?"--सब कहते हैं पर उसे परवाह नही.

मजेदार बात यह है कि धमाकों से डर के कारण ही बुँदकी को किसी के घर लड़के का पैदा होना तक पसन्द नहीं है. जहाँ लोग कहते हैं अरे वाह लड़का हुआ है वहीं बुँदकी के अन्दर से आवाज आती है -मर गए. क्योंकि लडका पैदा होते ही लोग भयानक आवाज वाले पटाखे या बन्दूक चलाना शुरु कर देते हैं न, वह भी दो चार नहीं पूरे ग्यारह।

यही नहीं बुँदकी किसी बारात का आनन्द भी नहीं ले पाती. कारण वही धमाकों वाली आतिशबाजी. सोचती है कि बारात बिना बन्दूक-पटाखों के क्यों नहीं निकल सकती। क्या खुशी जाहिर करने के लिये लड्डू बाँटना या रोशनी वाली आतिशबाजी काफी नही है।

नीटू चिंटू और खलबल हँसते हैं--

"देखो जरा एक डरपोक लडकी को। ताड सी लम्बी हो रही है और उन पटाखों से डरती है जिन्हें बित्ते भर के बच्चे चलाते हैं। बडे तोप-गोले चलेंगे तो यह मर ही जाएगी। भला ऐसे भी कोई डरता है ?”

“हाँ चिड़ियाँ डरती हैं। देखते नही कैसे उड़ जातीं हैं। क्या उनका डरना कोई मायने नही रखता ?" ---बुँदकी उन छोटे शैतान बच्चों को ठीक उत्तर नही देपाती तब वे हँस पड़ते हैं।

"हो.. हो... हो... ठीक है फिर हम तुम्हें चिड़िया दीदी कहेंगे। और चुग्गा डाल दिया करेंगे। बुँदकी दीदी डरपोक चिडिया.... डरपोक। "

कभी-कभी वे बुंदकी को चिढ़ाने झूठी खबर दे देते हैं---

"अरे दीदी, बाहर नीटू सुतली बम चला रहा है सावधान.. । " बस बुँदकी सारे काम छोड़ कर कान बन्द कर लेती है।

किट्टू तो बुँदकी को सुनाने के लिये ही जोर से कहता है ---“पापा इस बार ज्यादा तेज धमाके वाले पटाखे लाना। चिटपिट में मजा नही आता. ”

बुँदकी अपने आपसे ही कहती है----"इस किट्टू को तो मैं देख लूँगी। दुष्ट कहीं का.. । "

इसी डर में जीते-जीते अब वह चौदह साल की होगई है। दिवाली के आने से अब भी उतनी ही नाराज रहती है। उसे लगने लगा है कि उसकी और घर के दूसरे लोगों की खुशियाँ अलग हैं और यह भी कि किसी को उसके डर या खुशी की परवाह नहीं है.

इस बार भी सब कुछ वैसा ही था। रंग--रोगन से घर--आँगन चमचमा रहे थे। बाजार में खूब चहल-पहल थी। घरों में खील बतासे रुई शक्कर के खिलौने और सबके लिये नए कपडे खरीदे गए थे। पूजा के लिये चाँदी का सिक्का पान-सुपारी फूल मिठाइयाँ, सब कुछ तैयार था। घर के सारे बच्चे खुशी से उछल कूद रहे थे। बडे--बूढे बच्चे सब सज धज कर उल्लास के साथ दीपावली की तैयारी कर रहे थे। उस समय भी जब उसकी माँ और चाची खाना बना रहीं थीं और छोटी बुआ पूजा सजा रही थी, बुँदकी अकेली कमरे में बैठी थी। उसके कान बाहर लगे थे। हर धमाके पर उसके सीने में धडधडाहट सी होती थी। सदा की तरह ही उसके लिये न तो नए कपडों में कोई आकर्षण था न ही मिठाइयों में कोई स्वाद। इस बार कुछ नया था तो वह यह था कि इस बार बच्चों के किशोर भैया आगए थे। किशोर बुँदकी की बुआ का लड़का है जो हैदराबाद में इंजीनियर है। वह हैदराबाद से ढेर सारे पटाखे व मिठाइयाँ लाया था।

"भैया पटाखों को तो तुम किसी तालाब में फेंक आओ, नही तो बुँदकी दीदी तुम्हें भी कभी माफ नही करेंगी। -"-छुटकू ने किशोर को पूरी बात बतादी।

"अरे यह भी कोई त्यौहार हुआ कि एक सदस्य डरा-सहमा कमरे में बैठा रहे। चलो इसी बात पर पटाखे चलाना कैंसल.. । "---किशोर ने कहा --"-इस बार हम बुँदकी की इच्छा के अनुसार ही त्यौहार मनाएंगे। मैं भी पटाखे ही नही आतिशबाजी को ही गलत मानता हूँ। कितना प्रदूषण होता है। फिर भी हमें बुन्दू का डर तो दूर करना चाहिये। "

शाम को जब सारे बच्चे किशोर भैया के साथ आतिशबाजी चला रहे थे, बुँदकी कानों पर उँगली रखे खिड़की में से ही सब देख रही थी।

"बुँदकी दीदी" --तभी छुटकू ने पुकारा --"पूजा होने वाली है। बाहर तो आजाओ। कोई पटाखे नही चलाएगा।"

"केवल तुम्हारे लिये हमने सारे पटाखे किसी को दान कर देने का फैसला किया है। ठीक है ना ? "

"आज हम केवल रोशनी की आतिशबाजी करेंगे. तुम इसमें तो हमारा साथ दे सकती हो ना बुँदकी। " किशोर ने भी समझाया।

उसे पहले तो भरोसा नही हुआ लेकिन घर के सभी लोग सिर्फ अनार, चकरी और फुलझड़ियाँ चला रहे थे। पापा चाचा माँ बुआ.. सभी उसे बुला रहे थे। यह देख बुँदकी बाहर आई। और फुलझड़ी जलाने लगी। फिर अनार चलाया। रेलगाड़ी चलाई। रंग-बिरंगे झाड़ चलाए। बुँदकी बहुत खुश थी।

तभी पीछे से छुटकू ने चिटपिटी चलादी। बुँदकी ने जैसे कुछ सुना ही नही।

कुछ ही देर बाद नीटू ने लडियों के पूरे पत्ते में चिनगारी लगादी। तड़.. तड़.. तड़.. तड़.. एक एक कर सारी लड़ियाँ फूटने लगीं। बुँदकी चौंक पड़ी।

"तुमने पटाखे चलाने से मना किया था न !"

"यह पटाखे थोड़ी है दीदी। " छुटकू ने कहा --"पटाखा तो देखो इसे कहते हैं, कहते हुए उसने दीवार पर एक पटाखा दे मारा। एक आवाज के साथ धुँआ उठा। बुँदकी ने कुछ नाराज होकर कहा---"तुम लोग मेरे साथ धोखा कर रहे हो। "

"धोखा कैसा। हम तो जानते भी नही दीदी कि धोखा क्या होता है", कहते हुए खलबल ने एक और पटाखा फोड़ दिया।

“क्या हुआ ? बुँदकी सच बताना क्या तुम्हें डर लगा ?” किशोर ने पूछा. बुँदकी कुछ कहते-कहते रुक गई।

“हम जानते हैं कि कुछ नही हुआ। होगा भी नही। डर तो तभी तक है जब तक हम उससे भागते हैं। अगर डटकर मुकाबला करो वह खुद ही भाग जाएगा। यही सोचकर तुम खुद एक पटाखा फोड़ो दीवार, पर फिर देखो कि डर खुद ही कैसे भाग जाता है.. । तुम तो एक बहादुर लड़की हो। नही ?"

बुँदकी ने कुछ डरते हुए आँखें बन्द कर एक पटाखा धीरे से दीवार पर मारा।

"अरे दीदी दीवार को लगेगी नही। जरा जोर से मारिये न। लगता है आपके हाथों में ताकत ही नही है। " खलबल ने उकसाया तो बुँदकी ने पूरे जोर से पटाखा फेंका। एक तेज धमाके के साथ पटाखा फूट गया। बुँदकी को लगा कि यह काम उतना बुरा और डरावना नही है।

उसने दूसरा चलाया फिर तीसरा, चौथा... । फिर तो दीपावली के बाकी दिन उसने खूब सारे, सुतली बस जैसे पटाखे भी चलाए बिना डरे।

अब बुँदकी हुलसकर सबसे कहती है --"दिवाली साल में एक बार क्यों, दस बार आए.. न. । "

सुश्री गिरिजा कुलश्रेष्ठ, मोहल्ला- कोटा वाला, खारे कुएँ के पास, ग्वालियर, मध्य प्रदेश (भारत)

कविता - रफ़्तार - सुश्री नीलिमा खरे

मुश्किल से मिले कोई जो
करें किसी का दुख हलका
खुशीमें शरीक होनेवाला
भी आजकल हुआ महंगा ।।१।।

जिस किसी को भी देखो
वो हमेशा बहुत जल्दी में
कैसे मैं सबसे आगे रहूं
लगातार इसी कोशिश में ।।२।।

ना फुरसत: ना चाहत
अब रहीं किसीके पास
मिलें, बठें, बातें करें
एक दुजे के साथ ।।३।।

रफ़्तार -ए-जिंदगी अब
इस क़दर बन गयी तेज़
मजबूरन सबको रखना हैं
वक्त और ख़्वाहिश से परहेज़ ।।४।।

सुश्री नीलिमा खरे

कहानी - उत्सर्जन - डॉ हंसा दीप

अपने पापा को जब-जब मैंने जानने-पहचानने की कोशिश की, तब-तब उनसे खुद को और ज्यादा दूर होते पाया। इतनी दूर, जहाँ तक कभी मेरी पहुँच नहीं रही। मैं जितना माँ के समीप था, उतना ही अपने पिता से दूर। एक अभेद्य लकीर थी, जिसे हम दोनों ने कभी लाँघने की कोशिश नहीं की। माँ आइस ब्रेकिंग का प्रयास करतीं, लेकिन न तो मेरी ओर से, न ही पापा की ओर से कभी ऐसा उत्साह दिखा कि रिश्ते सहज आकार ले पाते और अनचाही दीवारें तोड़ी जा सकतीं।

मैं यह भी जानता था कि पापा मेरा बहुत ध्यान रखते थे। उन्होंने माँ को यह ताकीद दे रखी थी कि वह मेरी हर जरूरत पूरी करें। कभी पैसों की कमी बीच में न आने पाए। मेरे शौक, मेरी पसंद, मेरी हर जरूरत की चीज मेरे पास हो। रोज रात जब मैं सोने जाता तो कोई आहट आती। दरवाजे की ओट से चुपचाप कोई झाँककर, देखकर वापस चला जाता। उस खामोश आहट को मैं पहचानता था। वह चुप्पी मुझे कचोटती थी। मगर ठीक उसी के बाद माँ आतीं, अंदर आकर मेरी रजाई ठीक करतीं, गुड नाइट कहतीं और फिर रात के आगोश में पूरा घर सो जाता। मेरी सारी जरूरतें, खाने-पीने से लेकर भावनात्मक सपोर्ट तक, माँ से पूरी हो जाती थीं। शायद इसीलिए मैंने इस कमी को महसूस करने के बावजूद कभी तवज्जो नहीं दी। वैसे भी अब मैं यूनिवर्सिटी जाने लगा था। परिवार की डोर सँभालने के लिए माँ तो थीं ही।

अब, जब माँ चली गयीं तब मैं उस व्यक्ति के बारे में गहराई से सोचने के लिए मजबूर हुआ, जो मेरे पिता थे। इस घर में उनके अलावा और कोई नहीं था जिससे मैं बात कर सकता। उन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया था। मैं माँ को याद करता, आँसू बहते और आँखें मुँद जातीं। ऐसा लगता, मानो माँ आएँगी, मेरी रजाई ठीक करेंगी और मैं सो जाऊँगा। पापा का घर में होना, न होना मेरे लिए बराबर था। सीमेंट और रेत से बना घर एक ऐसा मकान बन गया था, जहाँ हँसी-किलकारी तो दूर, शब्दों का सामान्य आदान-प्रदान तक नहीं था। मौत के साए में डूबा घर इतना खामोश था कि साँय-साँय करती कमरों की सीमाएँ, बेवजह दरवाजों व खिड़कियों को भी हरकत में आने से रोक देतीं।

मैंने माँ-पापा को बहस करते हुए ज़रूर देखा पर कभी लड़ते हुए नहीं देखा था। माँ मुझसे गाहे-बगाहे ये जरूर कहती थीं- “तुम्हारे पापा को प्यार जताना नहीं आता। ” मैं समझ नहीं पाता कि मेरी उँगली पकड़कर चलाने वाला, मुझे कंधे पर बैठा कर घुमाने वाला इंसान, धीरे-धीरे मुझसे बात करने से कतराने क्यों लगा! बात करते हुए भी हमेशा पापा का उपदेश देता लहजा मुझे उनकी उपेक्षा करने पर मजबूर करता। हम दोनों के बीच का रिश्ता आहिस्ता-आहिस्ता मौन होते हुए दरकता चला गया।

हालाँकि, पापा का साया माँ के बराबर ही मेरे सिर पर ताउम्र रहा। फर्क सिर्फ इतना था कि एक दृश्य था, दूसरा अदृश्य। अब वह अदृश्य, अमूर्त मेरे सामने मूर्त होने लगा। मैं उस व्यक्तित्व को समझने की कोशिश करने लगा जो मेरे लिए कर्कश और भावशून्य था। माँ एक सेतु थीं हमारे बीच। वह सेतु टूटते ही रह गए हम दो प्राणी। अलग-अलग दिशाओं में पड़े दो इंसान, एक इस किनारे, दूसरा उस किनारे।

उस दिन जब माँ ने अपनी अंतिम साँस ली, मैं फूट-फूट कर रो रहा था। आसपास वालों ने मुझे ढाढस बँधाने की पूरी कोशिश की लेकिन उस वक्त पापा मेरे पास नहीं आए। वे एक गहरी उच्छवास लेकर चले गए थे। उनकी आँखों से एक आँसू भी नहीं टपका था। इधर मेरे दु:ख का पारावार न था। सच कहूँ, मैं भीतर ही भीतर बहुत क्रोधित था। गुस्से की आग में जल रहा था। वे पल आज भी मुझे लगातार कचोटते हैं। सारा क्रिया-कर्म खामोशी से हुआ। मैं उन्हें उदास देखना चाहता था। चाहता था कि यह इंसान झूठमूठ ही सही, कम से कम एक बार रोए। दो आँसू तो मेरी माँ के सूखे कफन पर गिराए। पत्नी थीं उनकी, रात-दिन उनका इतना ध्यान रखती थीं। माँ के लिए न रोए, न सही, कम से कम अकेले होने का दर्द तो छलकाए! उनकी गहन चुप्पी के कई अर्थ लगा लिए थे मैंने। बुरे विचारों का ताँता लगता चला गया था।

हम दोनों के बीच पसरी खामोशी और गहरी होती जा रही थी। खाना-पीना सब इस तरह होता जैसे दो मशीनें बगैर आवाज के घर में चल रही हों। समय के साथ मैंने समझौता कर लिया। माँ की इच्छानुसार अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान देने लगा।

यंत्रवत एक माह बीत चला था। आज ही के दिन माँ हमें छोड़ कर चली गयी थीं। माँ की याद में दुखी, अलसायी सुबह शुरू ही हुई थी कि एक गंभीर आवाज सुनायी दी- “माँ की कब्र पर फूल चढ़ाने तुम मेरे साथ चलोगे?”

“हाँ। ”

'ना' नहीं कह पाया मैं। जाने को तो मैं अकेले भी जा सकता था। लेकिन माँ को दिखाने के लिए पापा के साथ जाना था। पिता-पुत्र एक साथ जाएँ तो माँ को खुशी होगी। और आज जब माँ की कब्र पर फूल चढ़ाते उन्हें देखा तो वे मुस्कुरा रहे थे। मैं क्षोभ से भर उठा। भीतर का गुबार फट पड़ा- “पापा आप खुश हैं, माँ के जाने से!”

“हाँ बेटा, मैं बहुत खुश हूँ। ”

मैं नफरत भरी निगाहों से उन्हें ताकने लगा। नथुने फूल आए, उनके कहे शब्दों पर मेरे शरीर का हर अंग क्रोधाग्नि में जल रहा था। वे भाँप गए और बोले- “मैं इसलिए खुश हूँ क्योंकि मैं तुम्हारी माँ को बहुत प्यार करता हूँ और यह बिल्कुल नहीं चाहता कि उसकी अनुपस्थिति का जो दर्द मैं सहन कर रहा हूँ, ऐसा दर्द उसे सहन करना पड़ता।”

मैं एकटक पापा को घूरे जा रहा था जैसे किसी रहस्य से परदा उठ रहा हो। पापा के शब्द कानों में पड़ रहे थे- “मैं उसे दुखी नहीं देख सकता था। मेरे जाने से वह रोती, मुझे बहुत दर्द होता। कम से कम पहले चले जाने से वह इस दुःख से बच गई। उसकी इस खुशी में मैं शामिल होना चाहता हूँ।” वे बोलते जा रहे थे और मेरे भीतर जमा पापा की पाषाण मूर्ति बर्फ की तरह पिघलते हुए मेरे आँसुओं की धारा को तेज कर रही थी।

“तुम्हें पता है, तुम्हारी माँ के साथ मेरा लंबा सफर रहा। न जाने कितनी सुबहें हमने साथ-साथ आँखें खोलीं, अनगिनत शामें टहलते हुए बिताईं। कभी जुगाली करके पीछे के बरसों में झाँकते, कभी आगे की योजना बनाते हुए भविष्य की कल्पनाएँ सँजोते। इस लंबे साथ में हमने कई बार घर बदले, देश बदले। जाने कितनी बार साथ-साथ पैकिंग और अनपैकिंग की। हर नए घर को ऐसे सजाते रहे जैसे उस घरौंदे से हमारा ताउम्र का साथ हो। जब नए घर में जाते, उसे भी उसी मनोयोग से सजाते, साथ ही पिछले को हमेशा याद करते। हर घरौंदे के साथ हमारे पड़ाव का एक और नाम जुड़ जाता।

भारत से न्यूयॉर्क, और न्यूयॉर्क से टोरंटो की बदलती दुनिया, बदलते लोग भी हमें और हमारी एक जैसी सोच को न बदल पाए। हम दोनों ठेठ झाबुआई रहे, तनिक भी नहीं बदले। हमारा रहन-सहन जरूर बदल गया था। बरस दर बरस लड़ते-झगड़ते, प्यार करते, खाते-पीते, जीवन का लेखा-जोखा दर्ज होता रहा कि किसने कितने समय काम किया, आराम किया। सारा फैला हुआ काम बेच-बुचाकर बच्चे के लिए कम से कम झंझट रखने की योजना थी। बुढ़ापे के लिए चिंता की जरूरत नहीं थी, सरकारी सुविधा थी। अगर कोई चीज खलती तो यही कि कौन पहले जाएगा, जो रह जाएगा, उसके लिए अपने जीवन के बचे हुए दिन बिताना मुश्किल होगा।”

सहज और सरल स्वर में आज पापा बोल रहे थे, मैं सुन रहा था। किसी उपदेश से परे दो लोगों की जीवन गाथा। मैं, पापा का बड़ा होता बेटा सोच रहा था इन सब में कहीं कामुकता या फिर सिर्फ सेक्सुअल डिजायर की झलक तो नहीं दिखती। अगर कुछ दिख रहा है तो वह है- दो लोगों का आपसी तालमेल, प्रतिबद्धता। यह एक तरह से दो लोगों की कंपनी थी। एक खानदानी कार्पोरेशन की तरह, जिसका जीवन काल सतत आगे बढ़ता रहा। बीच में तीसरा कोई नहीं था। परिवार और समाज उस बंधन में थे जरूर, पर उन दोनों के बीच कोई नहीं था।

पापा ने मेरी अनकही बात को समझ लिया- “एक महिला के साथ पचपन साल तक जीवन साझा करना कैसा होता है, यह सिर्फ महसूस किया जा सकता है। शरीर की आवश्यकताएँ तो कुछ ही पलों की होतीं मगर उसके अलावा हर दिन का, हर साल का ब्यौरा, कैसे कुछ ही शब्दों तक सीमित हो सकता। बगैर खून के रिश्ते जैसे जुड़े हुए थे, उन हजारों पलों की गहराई समझने के लिए हजारों ग्रंथ लग जाते।”

पापा दो पल के लिए रुक गए थे। रुककर अपने माथे पर उभर आयी कुछ बूँदों को समेटकर कहने लगे- “तमाम संकटों में हम एक साथ रहे। मंदिरों में एक साथ प्रार्थनाएँ कीं, एक साथ एक मेज पर अनगिनत बार खाना खाया, ब्रेकफास्ट, लंच, डिनर। वह मेरे हर काम में बराबरी की सहायक थी, खुशियों में भी और दुखों में भी। यह मेरे लिए बड़ी राहत की बात थी कि मुझे दफनाने की पीड़ा उसे सहन नहीं करनी पड़ी। मैं उसे अकेला न छोड़ पाता। अब, जब भी मैं दुनिया से जाऊँगा, बगैर किसी चिंता के जाऊँगा। और तब उसके साथ बिताए, उसके बगैर बिताए पलों की यादें मेरे साथ होंगी। कल, आज और कल के बारे में यह सोचना ही मेरे लिए बड़ा सुकून भरा है। उसका जाना इसीलिए एक अच्छा दिन था। खुश हूँ, मैंने अपने हाथों से उसे जन्नत तक पहुँचाया। उसके बगैर सिर्फ मैं ही अधूरा नहीं, इस घर की हर चीज अधूरी है। इस अधूरेपन के साथ मैं जी लूँगा, शायद वह न जी पाती। ” कहते हुए वे दो पल के लिए वहाँ बैठ गए, उसी मुस्कान के साथ जो अपना वादा निभाते हुए किसी मासूम बच्चे के चेहरे पर होती!

मैं देख रहा था उस पति को, उसकी खुशी को, खुशी के पीछे छुपी गहरे दर्द की छाया को। उस पिता को भी जो अधूरे अहसास के बावजूद एक सम्पूर्णता से भरा पूरा था। दर्द से उबरने के बाद किसी मूर्ति की मानिन्द शांत। शायद पापा अपने मन की पीड़ाओं का उत्सर्जन करके मूर्त से अमूर्त की तरफ़ प्रस्थान कर चुके थे। उनका यह मौन अब मेरे भीतर अनूदित हो चुका था।

पापा खड़े हो गए। उनके हाथ से फूल नीचे गिर गया। कब्र पर माँ का मुस्कुराता चेहरा उभर रहा था। वही सेतु, दो किनारों की दूरी पाटने वाला। घर लौटते हुए मैंने पापा की उँगली पकड़ ली, शायद उन्हें अब मेरे सहारे की जरूरत थी।

*

डॉ हंसा दीप, 22 Farrell Avenue, North York, Toronto, ON - M2R1C8, Canada Ph. 001 647 213 1817 hansadeep8@gmail. com

कविता - बहुत दिनों तक... - श्री राघवेन्द्र तिवारी

बहुत दिनों तक बूँद
ढूंडती आयी घर अपना
बहुत दिनों तक अपना
यह घर लगा बड़ा सपना

बहुत दिनों तक बिजली
वाली - कल बरसाती पर
बहुत दिनों तक रखी रही
बतलाती उसको घर

बहुतदिनों तक अपने
घर का चिन्तन ठगाठगा
बहुत दिनों तक जिसका
पूरा होना कठिन लगा

बहुतदिनों तक ललछोंही
आभा समेट कर दिन
बहुत दिनों तक सुस्ताया
चिड़ियो के पर गिन गिन

बहुत दिनोंतक अपरक्राम्य
स्थितियाँ आभाषी
बहुत दिनोंतक जुटी रहीं
आकृतियाँ बनवासी

बहुत दिनों तक यही
विहंगम दृश्य लिये धरती
बहुत दिनोंतक जल
भराव पर शोध रही करती

बहुत दिनों तक परिवर्तन
का सच तलाश पानी
बहुत दिनोंतक रहा
सिसकता करके मनमानी

बहुत दिनोंतक संध्या
भी लेकर किताब अपनी
बहुत दिनोतक लिखा करी
घटनाओं की कथनी

बहुत दिनोंतक लौटी ना
पुरवाई यह कह कर
बहुत दिनों तक रहे
जोहते वाट यहाँ मधुकर

बहुत दिनो तक फूल फूल
से ले सुगंध सुविधा
बहुत दिनों तक अटकी
चंदन वन की यह दुविधा

बहुत दिनो तक गंध
किसी पर्वत के कोने पर
बहुत दिनों तक रही
खोजती 'समय तिकोने पर

बहुत दिनों तक तपा किया
दिनमान अनिश्चय का
बहुत दिनों तक समारोह
मनवाया परिचयका

बहुत दिनों तक ना निकला
पानी का हल कोई
बहुत दिनों तक बूँदजिसे
बैठी घर मे रोई

बहुत दिनों तक महानील
के मुखमंडल जैसा
बहुत दिनोंतक दिखा
पत्तियों के डंठल जैसा

बहुत दिनोंतक श्वेत श्याम
आभा की अभिरुचियाँ
बहुत दिनों तक दिखी
ऊँघती बर्तुल स्थितियाँ

बहुत दिनोंतक ठहर ठहर
कर होती थी बरसात
बहुत दिनों तक दुखा
किये थी टपके वाली रात

बहुत दिनोंतक सभ्य
तरीके से पानी आया
बहुत दिनोंतक बाढ में
बहा घरका सरमाया

बहुत दिनों तक ठाकुर का
वह कुआँ अकिंचन सा
बहुत दिनों तक नाटक के
सुंदरतम मंचन सा

बहुत दिनोंतक शाल वनों में
झोपडियो का गल्प
बहुत दिनों तक लगा कहानी
जैसे है अति अल्प

श्री राघवेंद्र तिवारी, ई.एम. - 33, इंडस टाउन, राष्ट्रीय राजमार्ग-12, भोपाल- 462047, मोब : 09424482812

कहानी - ज्ञानदीप... - श्री सुरेश तन्मय

"यार चंदू! इन लोगों के पास इतने सारे पैसे कहाँ से आ जाते हैं, देख न कितने सारे पटाखे बिना जलाये यूँ ही छोड़ दिए हैं। ये लछमी माता भी इन्हीं पर क्यों, हम गरीबों पर मेहरबान क्यों नहीं होती"

दीवाली की दूसरी सुबह अधजले पटाखे ढूँढते हुए बिरजू ने पूछा।

"मैं क्या जानूँ भाई, ऐसा क्यों होता है हमारे साथ।"

"अरे उधर देख वो ज्ञानू हमारी तरफ ही आ रहा है, उसी से पूछते हैं, सुना है आजकल उसकी बस्ती में कोई मास्टर पढ़ाने आता है तो शायद इसे पता हो।"

"ज्ञानु भाई ये देखो! कितने सारे पटाखे जलाये हैं इन पैसे वालों ने। ये लछमी माता इतना भेदभाव क्यों करती है हमारे साथ बिरजू ने वही सवाल दोहराया।"

"लछमी माता कोई भेदभाव नहीं करती भाई! ये हमारी ही भूल है।"

"हमारी भूल? वो कैसे हम और हमारे अम्मा-बापू तो कितनी मेहनत करते हैं फिर भी... "

"सुनो बिरजू! लछमी मैया को खुश करने के लिए पहले उनकी बहन सरसती माई को मनाना पड़ता है।"

"पर सरसती माई को हम लोग कैसे खुश कर सकते हैं" चंदू ने पूछा।

"पढ़ लिखकर चंदू। सुना तो होगा तुमने, सरसती माता बुद्धि और ज्ञान की देवी है। पढ़ लिख कर हम अपनी मेहनत और बुद्धि का उपयोग करेंगे तो पक्के में लछमी माता की कृपा हम पर भी जरूर होगी।"

"पर पढ़ने के लिए फीस के पैसे कहाँ है बापू के पास हमें बिना फीस के पढ़ायेगा कौन? "

"मैं वही बताने तो आया हूँ तम्हे, हमारी बस्ती में एक मास्टर साहब पढ़ाने आते है किताब-कॉपी सब वही देते हैं, चाहो तो तुम लोग भी उनसे पढ़ सकते हो।"

चंदू और बिरजू ने अधजले पटाखे एक ओर फेंके और ज्ञानु की साथ में चल दिए।

सुरेश तन्मय, अलीगढ़/भोपाल, मो 9893266014

कविता - राम नहीं आएँगे - श्री जय प्रकाश श्रीवास्तव

सुनो दशानन
अब श्री राम नहीं आएँगे ।

नहीं अहल्या पत्थर होगी
नहीं स्वयंवर रचा जायेगा
नही जानकी वन जायेगी
नहीं स्वर्ण-मृग मर पायेगा

सत्ता सिंहासन
के पीछे सब लड़ जाएँगे ।

तुम निर्भय होकर राज करो
मन में मत पालो कुछ शंका
ज्ञानी हो थोड़ा धैर्य धरो
अब नहीं जलेगी फिर लंका

अब पवन पुत्र
सुग्रीव कहीं न मिल पायेंगे।

छाई सभी ओर है जड़ता
मठाधीश बन संत खड़े हैं
समय नई रामायण लिखता
असुरों पर विश्वास बढ़े हैं

खर-दूषण के
गली-मोहल्ले गुण गायेंगे।

षड्यंत्रों में फँसी अयोध्या
कुटिल मंथरा की चालों में
अब भी नारी केवल भोग्या
जनता पिसती हड़तालों में

खुद दशरथ
वनवास भोगते मर जायेंगे ।

जय प्रकाश श्रीवास्तव आई.सी. 5, सैनिक सोसायटी शक्ति नगर, जबलपुर, (म.प्र.) मो.07869193927

कविता - भारतीय संस्कृति का दिया - श्री सुरेश पटवा

ग्रह उपग्रह नक्षत्र तारे
अण्डज पिंडज उद्‌दभज ब्रह्माण्ड
जल उठा सूर्य का दिया।

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा
ब्रह्म रोशन चर-अचर जहाँ में
जल उठा दिव्य जीव का दिया।

अनादि-अनंत ब्रह्म-नाद
अकार उकार मकार
जल उठा ओम का दिया।

मिट्‌टी, तेल, अग्नि की लौ,
बहती हवा खुला आकाश
जल उठा स्वस्तिक का दिया।

वेद उपनिषद पुराण
वैष्णव शाक्त विधान
जल उठा संस्कार का दिया।

गौतम कनाड़ कपिल पतंजलि
जैमिनि व्यास याज्ञवल्क्य
जल उठा प्रज्ञा का दिया।

न्याय वैशेषिक सांख्य
योग मीमांसा वेदान्त
जल उठा दर्शन का दिया।

हरिश्चंद्र राम कृष्ण
गौतम महावीर अरविंद
जल उठा मोक्ष का दिया।

हिमाँगी पार्वती माहेश्वरी
चामुण्डा कुष्मांड़ा दुर्गा
जल उठा शक्ति का दिया।

गंगा, गोदावरी, यमुना, सिंधु,
सरस्वती, कावेरी नर्मदा
जल उठा सिंधु का दिया।

साहित्य नृत्य संगीत कला
जीवन सुमन खिला
जल उठा सरस्वती का दिया।

धन-धान्य समृद्‌धि
हर्षित मन लहराया
जल उठा वामा का दिया।

भरत चाणक्य-चंद्रगुप्त, अशोक,
अकबर-मानसिंह गांधी-नेहरु-पटेल
जल उठा भारत का दिया।

ग्रीक रोम अरब चीन यूरोप
सबने हमसे ख़ूब लिया
जला कर दिया दिल का दिया।

हिंदू मुस्लिम सिक्ख ईसाई
बौद्‌ध जैन पारसी भाई
जल उठा भाईचारे का दिया।

सनातन न हारा है न हारेगा
दुनिया को तारेगा
जला कर समन्वय का दिया।

कलयुग साधें एक लक्ष्य
धन-दौलत साधन-संसाधन
जल उठा लक्ष्मी का दिया।

लेख - एक पर्यटन ऐसा भी... - श्री संजय भारद्वाज

चरन्मार्गान्विजानाति

(महाभारत, आदिपर्व १३३-२३)

पथिक को मार्ग का ज्ञान स्वत: हो जाता है।

जीवन यात्रा है, सनातन यात्रा। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही है। सूर्य-चंद्र यात्रा कर रहे हैं। सौरमंडल में हर ग्रह अपनी-अपनी यात्रा पर है। सार में कहें तो चराचर यात्रा पर है। इस लघु लेख में हम चर सृष्टि के एक जीव मनुष्य की एक स्थान विशेष की यात्रा और उसके पर्यटन पर चर्चा करेंगे।

प्राचीन काल से ही मनुष्य पर्यटन प्रेमी रहा है। नया देखने, नया जानने की इच्छा, कौतूहल, जिज्ञासा उसके स्वाभाविक गुण हैं। किसी बच्चे की आँखों में देखिए कि कैसे जगत को टुकुर-टुकुर निहारता है। उसके संज्ञान में आई हर वस्तु को जिज्ञासा से देखता है। मनुष्य का यही कौतूहल और जिज्ञासा उसे आगे पर्यटन के लिए आकर्षित करते हैं। बुद्धि तत्व की प्रधानता इस आकर्षण को प्रबल करती है।

वस्तुत: मनुष्य शाश्वत पथिक है। एक जीवन में सारी जिज्ञासाओं का शमन नहीं हो सकता। फलत: वह लौट-लौट कर आता है। 84 लाख योनियों में जगत का भ्रमण करता है, पर्यटन करता है।

यात्रा पर्यटन नहीं है पर यात्रा का पर्यटन से गहरा संबंध है। पर्यटन के लिए यात्रा अनिवार्य है। पर्यटन निर्धारित स्थान की सायास घुमक्कड़ी है। तथापि हर यात्रा अपने आप में अनायास पर्यटन है।

पर्यटन शब्द का संधि विच्छेद परि + अटन है। 'परि' का अर्थ चारों ओर तथा 'अटन' का अर्थ भ्रमण है।

भ्रमण में मनुष्य की यह रुचि उसे कभी विश्व के सबसे ऊँचे तो कभी सबसे गहरे पर्यटन स्थल पर ले जाती है। लेकिन जाना कहीं भी हो, पर्यटन महँगा सौदा है। यात्रा से आरंभ कर गंतव्य पर कुछ दिन ठहरना, भ्रमण करना आदि हरेक की जेब को अच्छा-खासा हल्का कर देते हैं।

हम आपको एक ऐसे स्थान के पर्यटन पर ले जाना चाहते हैं जो विश्व में सबसे ऊँचाई पर स्थित है तो सबसे गहरा भी वही है। यहाँ जाने के लिए किसी प्रकार की भौतिक यात्रा नहीं करनी पड़ती। कोई टिकट नहीं खरीदना पड़ता। किसी वीसा या पासपोर्ट की भी आवश्यकता नहीं है। न कोई होटल बुक करनी है, न अन्य किसी सुविधा के लिए भुगतान करना है। यह यात्रा वाहय जगत की नहीं अंतर्जगत की है।

स्कंदपुराण के काशीखण्ड में तीन प्रकार के तीर्थों का उल्लेख मिलता है-जंगम तीर्थ, स्थावर तीर्थ और मानस तीर्थ।

हम मानस तीर्थ की यात्रा पर चर्चा करेंगे। दुनिया का भ्रमण कर चुके पर्यटक भी इस अनन्य पर्यटन से वंचित रह जाते हैं। सच तो यह है कि हममें से अधिकांश इस पर्यटन स्थल तक कभी पहुँचे ही नहीं।

एक दृष्टांत द्वारा इसे स्पष्ट करता हूँ। एक भिक्षुक था। भिक्षुक बिरादरी में भी घोर भिक्षुक। जीवन भर आधा पेट रहा। एक कच्ची झोपड़ी में पड़ा रहता। एक दिन आधा पेट मर गया। बाद में उस स्थान पर किसी इमारत का काम आरंभ हुआ। झोपड़ी वाले हिस्से की खुदाई हुई तो वहाँ बेशकीमती ख़ज़ाना निकला। जिस ख़ज़ाने की खोज में वह जीवन भर रहा, वह तो ठीक उसके नीचे ही गड़ा था। हम सब की स्थिति भी यही है। हम सब एक अद्‌भुत कोष भीतर लिए जन्मे हैं लेकिन उसे बाहर खोज रहे हैं।

भीतर के इस मानसतीर्थ का संदर्भ महाभारत के अनुशासन पर्व में मिलता है। दान-धर्म की चर्चा करते हुए अध्याय 108 में युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से सब तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ की जानकारी चाही है। अपने उत्तर में मानस तीर्थ का वर्णन करते हुए पितामह कहते हैं, "जिसमें धैर्यरूप कुण्ड और सत्यरूप जल भरा हुआ है तथा जो अगाध, निर्मल एवं अत्यन्त शुद्‌ध है, उस मानस तीर्थ में सदा परमात्मा का आश्रय लेकर स्नान करना चाहिए। कामना और याचना का अभाव, सरलता, सत्य, मृद भाव, अहिंसा, प्राणियों के प्रति क्रूरता का अभाव- दया, इन्द्रियसंयम और मनोनिग्रह- ये ही इस मानस तीर्थ के सेवन से प्राप्त होने वाली पवित्रता के लक्षण हैं। जो ममता, अहंकार, राग-द्‌वेषादि द्‌वन्द्‌व और परिग्रह से रहित हैं, वे विशुद्‌ध अन्तःकरण वाले साधु पुरुष तीर्थस्वरूप हैं, किंतु जिसकी बुद्‌धि में अहंकार का नाम भी नहीं है, वह तत्वज्ञानी पुरुष श्रेष्ठ तीर्थ कहलाता है।"

भारत के संदर्भ में अधिकांश पर्यटन स्थल तीर्थ हो जाते हैं। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा था, "To other countries I may go as a tourist, but to India I come as a pilgrim. "

वास्तव में स्थूल शरीर के माध्यम से यात्रा करते हुए हम स्वयं को शरीर भर मान बैठते हैं। जबकि सच यह है कि हम शरीर नहीं अपितु शरीर में हैं। इस सत्य को भूलकर हम भीतर से बाहर की यात्रा में जुट जाते हैं जबकि अभीष्ट बाहर से भीतर की यात्रा होती है, अपने प्रकाशलोक में अपने दिव्य पुंज का दर्शन होता है।

अपनी लौ से अपरिचित ऐसा ही एक प्रकाश, संत के पास गया और प्रकाशप्राप्ति का मार्ग जानना चाहा। संत ने उसे पास के तालाब में रहनेवाली एक मछली के पास भेज दिया। मछली ने कहा, "अभी सोकर उठी हूँ, प्यास लगी है। कहीं से थोड़ा जल लाकर पिला दो तो शांति से तुम्हारा मार्गदर्शन कर सकूँगी। '

प्रकाश हतप्रभ रह गया। बोला, "जल में रहकर भी जल की खोज? "

मछली ने कहा, "यही तुम्हारी जिज्ञासा का समाधान है। खोज सके तो खोज।"

इस खोज पर जो निकला, वह मालामाल हो गया। सारी सृष्टि के बाग-बगीचे भी फीके हैं इस भीतरी पर्यटन के आगे। संत कबीर लिखते हैं,

या घट अंतर बाग़-बग़ीचे, या ही में सिरजनहारा।

या घट अंतर सात समुंदर, या ही में नौ लख तारा।

या घट अंतर पारस मोती, या ही में परखनहारा।

या घट अंतर अनहद गरजै, या ही में उठत फुहारा।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, या ही में साँई हमारा॥

भीतर का पर्यटन सायास और अनायास दोनों होते है। इस पर्यटन में सतत अनुसंधान भी है।

यह एक ऐसा पर्यटनलोक है, जिसके एक खंड की रजिस्ट्री हर मनुष्य के नाम हैं। हरेक के पास स्वतंत्र हिस्सा है। ऐसा पर्यटनलोक जो सबके लिए सुलभ है, नि:शुल्क है, बारहमासी है, 24/7 है।

जितनी यात्रा भीतर होगी वह जगत को देखने की दृष्टि बदलती चली जाएगी। लगेगा कि आनंद ही आनंद बरस रहा है। रसघन है, छमाछम वर्षा हो रही है, भीग रहे हो, सब कुछ नेत्रसुखद, सारे भारों से मुक्त होकर नृत्य करने लगोगे। पर्यटन से अभिप्रेत परमानंद यहीं है।

आइए अपने भीतर का भ्रमण करें, पर्यटक बनकर अपने ही भीतर छिपे अनगिनत आयामों को जानें।

चरैवेति, चरैवेति..!

श्री संजय भारद्वाज,

अध्यक्ष– हिंदी आंदोलन परिवार ☆ **सदस्य**– हिंदी अध्ययन मंडल, पुणे विश्वविद्यालय, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज (स्वायत्त) अहमदनगर ☆ **संपादक**– हम लोग ☆ **पूर्व सदस्य**– महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी ☆ **ट्रस्टी-** जाणीव, ए होम फॉर सीनियर सिटिजन्स ☆

मोबाइल– 9890122603 संजयउवाच@डाटामेल.भारत writersanjay@gmail.com

कविता - सनातन प्रश्न - डॉ मुक्ता

चंद सनातन प्रश्नों के
उत्तर की तलाश में
मन आज विचलित है मेरा
कौन हूं, क्यों हूं
और क्या है अस्तित्व मेरा

शावक जब पंख फैला
आकाश में उड़ान भरने लगें
दुनिया को अपने
नज़रिए से देखने लगें
उचित-अनुचित का भेद त्याग
गलत राह पर कदम
उनके अग्रसर होने लगें
दुनिया की रंगीनियों में
मदमस्त वे रहने लगें
माता-पिता को मौन
रहने का संकेत करने लगें

उनके साथ चंद लम्हे
गुज़ारने से कतराने लगें
आत्मीय संबंधों को तज
दुनियादारी निभाने लगें
तो समझो --मामला गड़बड़ है

कहीं ताल्लुक
बोझ ना बन जाएं
और एक छत के नीचे
रहते हुए होने लगे
अजनबीपन का अहसास
सहना पड़े रुसवाई
और ज़लालत का दंश
तो कर लेना चाहिए
अपने आशियां की ओर रुख
ताकि सुकून से कर सकें
वे अपना जीवन बसर

डा. मुक्ता

माननीय राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत, पूर्व निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी

#239,सेक्टर-45, गुरुग्राम-122003 ईमेल: drmukta51@gmail.com, मो• न•…8588801878

कहानी - खोया प्यार - सुश्री अंजू 'तितली'

एक चमचमाती कार उसके शोरूम के सामने उसकी बी एम डब्लू के ठीक बगल में आके रुकती है। उसमें से एक सम्भ्रान्त महिला आँखों पे गॉगल चढ़ाए, ऊँचे इम्पोटेंट ब्रांड "गुच्ची' का पर्स कैरी किये उसके शोरूम में प्रवेश करती है, अपने केबिन में बैठा राजीव रंजना को देख तुरंत पहचान जाता है, पर रंजना पहली बार मे राजीव को नहीं पहचान पाती क्योंकि राजीव कभी एक साधारण, दुबला पतला बैंक में क्लर्क की नौकरी करने वाला बेहद सज्जन युवक था। बैंक में ही अपने पापा के साथ आते जाते रंजना का दिल राजीव पर आ गया था। दोनो का प्यार परवान चढ़ने लगा था। रंजना का बहुत धनाढ्य परिवार से होने के कारण रंजना के स्वजनों को यह रिश्ता मंजूर नहीं था, सो रंजना की शादी एक बड़े मल्टीनेशनल कम्पनी के मालिक रमेश से कर दी जाती है.. रंजना के दो प्यारे प्यारे बच्चे थे.. अचानक उसके पति रमेश की किसी वायुयान दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है, रंजना अकेली रह जाती है। बच्चे अब विदेशों में सेटल हो चुके थे रंजना अपना भारत छोड़कर कहीं और बसने को तैयार नहीं थी हालांकि बच्चों ने उसको अपने साथ ले जाने की बहुत जिद की थी पर रंजना का देशप्रेम उनकी जिद को पूरा न कर सका वो अब अपने भारत मे ही बसी थी, बस थोड़े बहुत समय के लिये बच्चों के पास मिल आती और बच्चे भी यदा कदा भारत आते रहते... पैसों की कोई कमी नही थी, कमी थी तो बस एक अदद साथी की... जो उसका दुखदर्द बाट सके, उसकी परवाह कर सके। जिंदगी तो चल ही रही थी.. क्या पता था एक दिन उसकी मुलाकात यूँ अचानक इतने बडे शोरूम मालिक राजीव से हो जाएगी, राजीव जो अब थोड़ा मोटा हो गया था बालों में चाँदनी चमकने लगी थी, कुछ बाल उड़ भी चुके थे आंखों पे मोटे लेंस का चश्मा चढ़ चुका था, इसी के चलते रंजना को एकबारगी पहचानने में दिक्कत हुई, जब बातों बातों में ही पता चला तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा, फिर तो रंजना का शगल हो गया रोज वहां आना और पुराना प्रेम फिर तरंगित हो हिलोरें मारने लगा दोनो के बीच.... अब दोनो कभी कभार लॉन्ग ड्राइव पर जाने लगे थे। एक दिन अचानक रंजना ने राजीव से कहा "आप यदि मुझे माफ़ कर सकें तो... मैं आपके जीवन मे आने के लिए तैयार हूँ" बस ये सुनते ही जैसे राजीव को तो स्वर्ग का सुख मिल गया अचानक से... वो तो कबसे इस प्रस्ताव की बाट जोह रहा था, क्योंकि ये वही राजीव था जिसने रंजना की याद में किसी अन्य लड़की से अभी तक शादी ही नही की थी और आजीवन कुँवारा रहने का फैसला लिया था... उसे जैसे अपना 'खोया और चाहा' दोनो प्यार मिल गये थे जिंदगी की ढलती साँझ में ही सही...

शाम एक बार से फिर रंगीन हो गयी थी, चाँद भी उन दोनों के बीच अब सरगोशियां कर रहा था।

सुश्री अंजू तितली मोब +91 98372 52250

कविता - यह दीपक यूँ ही जलाये रखना... - श्री एस के कपूर

[1]

अब यह दीया विश्वास का जलाए रखना।

ऊर्जा उमंग उत्साह को सदा जगाए रखना। ।

यह दीपक की लौ अब बुझने न पाए।

यूँ ही प्रेम भाव सबसे अब बनाए रखना। ।

[2]

दीपावली ने दिया संदेश तम मिटाने का।

चीर कर अंधकार को प्रकाश बुलाने का। ।

मानवता प्रेम उजियारा हरओर फैलाओ अब।

काम करना अब सत्य को न्याय दिलाने का। ।

[3]

प्रकाश की किरण केआगे अंधेरा निकलता नहीं।

सच का उजाला झूठ से कभी गिरता नहीं। ।

सदियों से यह चक्र चलता चला आया है।

सूर्य के आते ही अंधकार कभी टिकता नहीं। ।

श्री एस के कपूर "श्री हंस", बरेली, उत्तर प्रदेश मोबाइल 9897071046 व्हाट्स ऐप 8218685464 कॉलिंग

कविता - गीतिका छंद - सुश्री छाया सक्सेना 'प्रभु'

नर्मदे आराधना कर, पुण्य पावन कीजिए।

मातु निर्मल पावनी हैं, शांकरी शिव पूजिए।

बस रहे कंकर में शंकर, तीर रेवा धाम के।

जाप निशदिन भक्त करते, रुद्रदेहा नाम के। ।

जन्म शिव के स्वेद से है, अमृता तप बल सभी।

बाँस के झुरमुट प्रगट हो, मैकला पर्वत तभी। ।

दर्श से सुख मिल रहा ऋषि, नेह निर्मल नर्मदा।

त्याग तपबल से सजाते, सत्य साधन सर्वदा। ।

घाट लम्हेटा बना शिव, सत्य की आराधना।

पित्र को तारा यहाँ पर, इंद्र करते साधना। ।

कुंड शनि इंद्रग्य बनता, नर्मदा के साथ से।

प्रार्थना सब देव करते, जोड़कर द्वय हाथ से। ।

स्वयं शिव तप कर रहें हैं, नील पर्वत है यहाँ।

चंदनो के वृक्ष शोभित, दृश्य सुंदर है जहाँ। ।

नर्मदे माँ पाट गहरा, घाट लम्हेटी दिखे। ।

मातु जप तप कर रहे जो, भाग्य अपना तब लिखे। ।

उत्तरी तट सिद्धि गौरी, घाट काली भी यहाँ।

जिलहरी शिवलिंग उपासक, संत दर्शन के जहाँ। ।

आरती नित भक्त करते, घाट गौमुख है उमा।

सिद्ध पूरे काज होते, मंत्र रेवा मन रमा। ।

घाट तिलवारा तिलेश्वर, दान तिल गुड़ का करें।

चिन्ह तिल शिवलिंग पूजन, सूर्य सब पीड़ा हरें। ।

हो प्रसन्न वर दे ऋषिगण, पाट गहरा है यहाँ।

ओम शिव भी जप रहे हैं, मग्न होकर के जहाँ। ।

ग्राम लम्हेटी जबलपुर, तीर्थ पावन नर्मदा।

एक कुम्भेश्वर बनाया, साथ दो लिंग सर्वदा। ।

ब्रहमहत्या मुक्ति पाए, राम व भ्राता लखन।

नाथ रिद्धि सिद्धि के संग, पूजते करते मनन। ।

सुश्री छाया सक्सेना प्रभु, **माँ नर्मदे नगर**, **म.न. -**12, **फेज-** 1, **बिलहरी**, **जबलपुर (म. प्र.)** 482020

मो. 7024285788, chhayasaxena2508@gmail.com

लेख - यहां लक्ष्मी कैद है - श्री प्रदीप शर्मा

लक्ष्मी को कौन नहीं जानता। यह घर की भी लक्ष्मी है और तिजोरी की भी। जहां लक्ष्मी है, वहां नारायण भी हैं और नकद नारायण भी। जब इस वसुन्धरा पर महालक्ष्मी प्रसन्न होती है, तो चारों ओर धन धान्य और वैभव की वर्षा होती है। महिलाएं वैभव लक्ष्मी का व्रत रखती हैं। दीपावली पर लक्ष्मी पूजन हमारा वर्ष भर का सबसे प्रमुख त्योहार है।

लक्ष्मी ही धन है, धन ही लक्ष्मी है।

हमारे घरों में जब पुत्र का जन्म होता है तो वह कुलदीपक कहलाता है और अगर पुत्री हुई तो उसे लक्ष्मी कहा जाता है। यूं तो हमारे मंदिरों में हमारे इष्ट ही विराजमान होते हैं, लेकिन कुछ मंदिरों में विराजमान तो लक्ष्मीनारायण की भव्य मूर्ति होती हैं, लेकिन उन्हें बिड़ला मंदिर कहा जाता है। वैसे हमारी धार्मिक मान्यता के अनुसार हर नर में नारायण का वास है और हर नारी देवी स्वरूपा है। ।

हमें हर पल ईश्वर का स्मरण रहे इसलिए हर घर में आपको रमेश, दिनेश, सुरेश और कैलाश नजर आ जाएंगे। सूरज और चंदा तो हमारे यहां आकाश के साथ, आंगन में मिट्टी में खेला करते हैं। आज भी हमारे देश में देवदास कम हैं, मोहनदास, ईश्वरदास और भगवानदास ही अधिक हैं। लक्ष्मी, पार्वती और सरस्वती अगर आपस में सगी बहनें हैं तो मीरा, राधा, गौरी और उर्मिला सहेलियां हैं। कहीं शंकर लक्ष्मण आपस में भाई भाई हैं तो कहीं विष्णु, गजानन और हरीश पक्के लंगोटिया यार।

लक्ष्मीचंद, लक्ष्मीनारायण और लक्ष्मीकांत को कौन नहीं जानता।

लक्ष्मी अगर धन की देवी है तो कुबेर धन के देवता हैं।

धनतेरस के दिन हम कुबेर को और दीपावली पर देवी लक्ष्मी को पूजते हैं। कहते हैं, रावण ने कुबेर को अपने यहां बंदी बना लिया था और हमारे आज के धन कुबेरों के यहां लक्ष्मी तिजोरियों और स्विस बैंक में कैद है। ।

धन कुबेरों की छोड़िए, क्या हमने अपनी घर की लक्ष्मी के साथ कभी न्याय किया ? जब वह कन्या थी तो दान दहेज के साथ उसका कन्यादान कर दिया। अब वह ससुराल में गृह लक्ष्मी कहलाती है। अगर आज वह सुखी है तो आप भी सुखी और अगर वह दुखी है तो आप भी दुखी।

हम तो चाहते हैं, सब पर सदा महालक्ष्मी प्रसन्न रहे। ।

कल बहुत सालों बाद लक्ष्मी से मुलाकात हुई। कमजोर देह, मुरझाया चेहरा, वही ढंका सिर और हल्का सा ओढ़ा हुआ घूंघट। उसे मैं पिछले चार दशकों से जानता हूं। बैंक में अपने बच्चों के रिकरिंग खाते में अपनी

मेहनत के पैसे जमा करने के लिए, मुझसे पर्ची भरवाती थी। लड़का, लड़की, देवर और खुद के खाते में, कहीं पचास रुपए तो कहीं बीस रुपए। बाद में पता चला वह हमारे पड़ोसी के यहां घर का कामकाज करती है।

पैसे वाले सिर्फ पैसे वालों से ही काम रखते हैं लेकिन एक आम इंसान दूसरे से सिर्फ राम राम करता है। आते जाते लक्ष्मी से हमारी भी राम राम हो जाती थी।

कभी जब लक्ष्मी आने में देर कर जाती तो अक्सर यह सुनने में आता, आज अभी तक लक्ष्मी नहीं आई। मैं पड़ोसी से मज़ाक करता, आप भाग्यशाली हो, आपके यहां रोज लक्ष्मी आती है। वे भी जवाब देते, वाकई वह हमारे लिए लक्ष्मी ही है। उसके आगमन के बाद ही तो हमारा दिन शुरू होता है। ।

फुर्सत निकालकर कभी कभी लक्ष्मी हमारे यहां भी थोड़ा सुस्ता लेती, सुख दुख की बातें कर लेती। बच्चों की पढ़ाई लिखाई, सास ससुर और घर गृहस्थी की बातें, जिनमें दर्द ही अधिक होता था। इन चालीस सालों में घरों में बर्तन मांज कर, झाड़ू बुहारे और कपड़े धो धोकर उसने अपनी गृहस्थी को संजोया, अपने लड़के, लड़कियों और देवर की शादी की। शादी में उसका उत्साह देखते बनता था। हमें भी कायदे से बुलाया जाता। लक्ष्मी खुद बुलाए और हमारे जैसे लालची नहीं जाएं, असंभव ! हमारे जाने से लक्ष्मी बहुत प्रसन्न होती थी। हम पर तो लक्ष्मी आज भी प्रसन्न ही है लेकिन इस लक्ष्मी को तो कभी मायके में भी सुख नसीब नहीं हुआ।

अब लक्ष्मी मिली तो बताया उसने, आजकल काम नहीं होता, हाथ पांव टूटते हैं फिर भी दो तीन जगह छोटा मोटा काम करना ही पड़ता है। हमारे सबके घरों में आज गृह लक्ष्मी भी है और घर के कामकाज में हाथ बंटाने के लिए कोई ममता, बबिता, सुनीता अथवा शांतिबाई। लक्ष्मी के ये दो रूप देख बड़ा आश्चर्य भी होता है और दुख भी। ।

किसी लक्ष्मी को पेट पालने के लिए लोगों के घरों के बर्तन मांजने पड़ रहे हैं तो कहीं लक्ष्मी घरों में कैद है।

कहीं तिजोरियां भरी हुई हैं तो कहीं घर की लक्ष्मी जेवरों से लदी हुई है।

विद्‌या ददाति विनयम्‌ !

काश जहां लक्ष्मी हो, वहां सम्मान हो, आदर हो, सुख समृद्‌धि हो, विवेक हो। लक्ष्मी का दुरुपयोग नहीं, सदुपयोग हो। वाकई कराग्रे वस्ते लक्ष्मी और कर मूले सरस्वती ही हो। पुनश्च ! सब पर सदा महालक्ष्मी प्रसन्न हो।।

श्री प्रदीप शर्मा १०१, साहिल रिजेंसी, रोबोट स्क्वायर, MR 9, इंदौर मो 8319180002

लेख - रामलीला की वर्तमान सार्थकता! - सुश्री रेखा श्रीवास्तव

रामलीला तो सदियों से चलने वाली ऐसी एक मंचन कला है, जिसको बहुत ही चाव से हर आयु वर्ग के लोग देखते चले आ रहे हैं। आज लोगों को वह नौटंकी लगने लगी है क्योंकि आज के ज़माने के लोगों के अनुरूप वह कथा कपोल कल्पित लग रही है। वह जिस सन्देश अपने में समाहित किये हुए हैं, वह आज की पीढ़ी को भाती नहीं है। लेकिन रामलीला की प्रासंगिकता से इंकार नहीं किया जा सकता है।

परिवार संस्था का महत्व

रामलीला परिवार संस्था के महत्व को पूर्ण रूप से स्पष्ट कर उसकी महत्ता को दिखाती चली आ रही है। परिवार के सभी सदस्यों के बीच का सामंजस्य और एक दूसरे के प्रति प्रेम का ही उदहारण है कि चाहे शिक्षा हो, पारिवारिक निर्णय हों, बड़ों के निर्णय को सदैव ही सम्मान दिया जाता था। यद्यपि रामायण में राजा दशरथ के द्वारा लिया गया निर्णय उनकी विवशता को दिखाता है लेकिन व्यक्ति के चरित्र की गहनता और गंभीरता का प्रतीक था। उनका कैकेयी को दिया गया वचन और उसके पूरा करने में अपने प्राणप्रिय पुत्र को चौदह साल के लिए वनवास के लिए भेज देना। उनके निर्णय के प्रति चाहे कौशल्या हो या फिर सुमित्रा किसी ने भी कोई विरोध का स्वर नहीं निकाला। आज के काल में इसको गलत माना जा सकता है लेकिन जो पारिवारिक विसंगतियां दिखाई दे रही हैं, वह परिवार संस्था का विखण्डन कर रही है और आज की पीढ़ी इसको स्वीकार करने से इंकार तो नहीं कर रही है लेकिन अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भी नहीं खोना चाहती है और उसका परिणाम ही है कि परिवार संस्था टूटने लगी है।

सुरक्षा की भावना

व्यक्ति को सुरक्षा की चिंता करने की जरूरत नहीं होती थी। सड़क पर खेलते हुए बच्चों के अपहरण, बच्चियों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार, महिलाओं के प्रति लोगों में पलती हुए दूषित भावनाओं के प्रति एक सुरक्षा की भावना होती थी। लक्ष्मण अपने भाई के साथ चौदह वर्ष के लिए चले गए थे और उर्मिला परिवार के साथ इतने वर्ष अपने पति का इन्तजार करती रहीं। उस समय किसी प्रकार की असुरक्षा की भावना थी ही नहीं। आज तो नारी अपने ही घर में सुरक्षित नहीं है, सिर्फ नारी ही क्यों पति के साथ रहते हुए भी असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हैं। पारिवारिक मूल्य अपनी गरिमा खो चुके हैं। जरूरत है कि रामलीला में निहित पारिवारिक मूल्यों को फिर से समझा जाय और उन्हें फिर से जीवन में उतारा जाय। रामलीला सिर्फ एक नाटक या फ़िल्म की तरह देखने की चीज नहीं है बल्कि उसके आदर्शों और मूल्यों को जीवन में अगर उतारने के लिए सोचा जाय तो जीवन की दिशा आज भी बदल सकती है।

रिश्तों का महत्व

रामलीला में रिश्तों के महत्व को और उसकी अपने स्तर पर पवित्रता को कायम रखने का सन्देश मिलता है। एक परिवार में तीन माँएँ और चार पुत्र कितने प्रेम और आपसी रिश्तों में बसने वाले विश्वास को हमेशा कायम रखने का सन्देश देती हैं। आज तो परिवार के नाम पर सिर्फ पति पत्नी और बच्चों को ही जगह प्राप्त होती है। उसमें उनके अपने माता-पिता को भी स्थान नहीं होता है। फिर चाहे वो छोटे घर की मजबूरी हो या फिर आय से अधिक खर्च करने की प्रवृत्ति। रिश्तों के प्रति टूटता हुआ विश्वास और प्रेम ही वह दैत्य है, जो मुसीबत में भी आदमी को अकेला खड़ा कर देता है। हर मुसीबत उसको अकेले झेलनी होती है। यह तो नहीं है कि आज वे अकले है तो उन्हें जीवन में किसी अन्य की जरूरत होती ही नहीं है। आज कामकाजी लोग बच्चों को क्रच या फिर आया के सहारे छोड़ कर जाते हैं और ऐसी में ही होती है अनहोनी घटनाएं। अगर रिश्तों में विश्वास और प्रेम हो तो दादा- दादी के लिए बच्चे जान से ज्यादा प्यारे होते हैं और बच्चों को अपनी सभ्यता और संस्कृति का पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है। बच्चों को भी एकाकीपन की अनुभूति नहीं होती है, वे घर की चहारदीवारी के अंदर भी असुरक्षित नहीं होते हैं।

आज के दौर में जब माता-पिता दोनों ही कामकाजी होते हैं तो बच्चे अंतर्मुखी होकर अपने को कंप्यूटर, मोबाइल और नेट से जोड़ कर जो सीख रहे हैं या फिर खतरनाक वीडिओ गेम खेल कर जीवन को दांव पर भी लगा बैठते हैं, ऐसी घटनाओं की उत्पत्ति ही न हो। भले ही घर में रहने वाले बुजुर्ग उन पर हर समय नजर न भी रखें लेकिन घर में उनकी उपस्थिति बच्चों को एकाकी होने के अहसास से बचाते हैं और वे किशोरावस्था की भ्रमित करने वाली स्थिति में भटकते नहीं है।

नारी के सम्मान का भाव

रामलीला में हर पात्र को हम देखें तो कहीं भी नारी के किसी भी ेरूप में उसकी अवमानना नहीं मिलती है। लक्ष्मण ने मात्र सीता के चरणों को ही देखा था और माता जैसा भाव था उनके मन में। उनके आदेश को प्राण पण से निभाया था। यहाँ एक अवसर इस बात को उठाया जाता है कि लक्ष्मण ने शूर्पणखा के साथ जो व्यवहार किया क्या वह नारी का अपमान नहीं था। एक विवाहित व्यक्ति के लिए किसी नारी के विवाह के प्रस्ताव के लिए बार बार मना करने पर भी न मानने पर उन्होंने वो कदम उठाया था। उसमें अपनी पत्नी के प्रति निष्ठा और जिम्मेदारी को पूर्ण करते हुए उन्होंने कोई गलत कदम नहीं उठाया था। रावण ने सीता का हरण अवश्य किया था लेकिन उसने भी अपनी मर्यादा का हमेशा पालन किया था। जब कि उसके लिए कुछ भी संभव था।

त्याग और समर्पण का सन्देश

अयोध्या के राज्य के युवराज राम ही थे और उनकों ही उसका युवराज बनना था लेकिन कैकेयी और मंथरा की कूटनीति ने उस सिंहासन के लिए भरत को राजा बनाना चाहा। इसके लिए कैकेयी ने अतीत में दिए गए राजा दशरथ के वरों का सहारा लिया और राजा दशरथ ने ऐसा करने के लिए अपने प्राण तक त्याग

दिए. राम को अयोध्या से दूर तो भेज दिया लेकिन स्वयं वियोग में प्राण त्याग दिया। अयोध्या से दूर राम को वनवास के लिए भेज दिया।

जिस सिंहासन के लिए इतना प्रपंच रचा गया, भरत ने उसको ठुकरा दिया और राम के अधिकार को लेने से इंकार कर दिया। उन्होंने रामचंद्र जी की खड़ाऊं रख कर प्रतिनिधि बनकर राज्य संभाला। ये आज भी इसको अगर देखा जाय तो त्याग का अपूर्व उदहारण है। संपत्ति के लिए हत्याएं और माता पिता का तिरस्कार की कोई भी जगह रामलीला में नहीं है। उसको बस ग्रहण करने की जरूरत है। इंसान कितनी ही प्रगति कर ले और अंतरिक्ष तक पहुँच जाय लेकिन नैतिकता और उसके मूल्यों का सदैव स्थान रहेगा।

बुराई पर अच्छाई की विजय

रामलीला महज एक नाटक नहीं है बल्कि वह अपने आप में इतने सन्देश लिए हुए होने वाला सजीव मंचन है कि अगर उसकी गहनता के बारे में सोचा जाय तो अवश्य ही ये सन्देश प्राप्त होता है कि बुराई एक समय तक भले ही विजय प्राप्त कर अपनी पताका लहराती रहे लेकिन जो सत्य है और अच्छाई है हमेशा उस पर भारी होती है। रावण जैसा विद्वान और प्रकांड पंडित अपने कर्मों के कारण ही अंत में विनाश को प्राप्त हुआ और विभीषण जैसे सरल, सहज और सत्य के मार्ग पर चलने वाले ने अपना मार्ग नहीं छोड़ा और वह लंका जैसे विशाल राज्य के शासक बने।. सम्पूर्ण रामलीला में बुरे कर्म करने वाले राक्षसों का अंत होता रहा और साधु संतों की पीड़ा का अंत हुआ। ये एक शाश्वत सत्य है कि सत्य सदैव विजयी होता है।

रामायण को भले ही बाल शिक्षा के पाठ्यक्रम से दूर कर दिया जाय लेकिन इस बात को आज सभी अनुभव करते हैं कि आज भी संयुक्त परिवार में रहने वाले बच्चे ज्यादा सुसंस्कृत होते हैं बशर्ते कि उस परिवार में नैतिक मूल्यों को महत्व दिया जाता हो। रामलीला का मंचन आज सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि भारत से बाहर देशों में भी होता है और हम जिस रामलीला की संस्कृति को छोड़ रहे हैं उन्होंने उसे गहराई से पकड़ रखा है और उसको अपने जीवन में जी रहे हैं।

सुश्री रेखा श्रीवास्तव, 71, पीडब्ल्यूडी हाउसिंग सोसायटी, सहकार नगर, रावतपुर गाँव, कानपुर - 208019
मो **9936421567**

कविता - पीछे रह गये हम - सुश्री सुनीति बैस

युग, वर्ष, माह, दिन, पल सब हमसे हो गये आगे,
पीछे रह गये हम चाहे जिस भी गति से भागे।

बचपन हमें याद आता है कुछ- कुछ धुंधला सा,
उसके बाद लड़कपन आया कुछ -कुछ संभला सा।
गली में कुल्फी वाले ने आकर घंटी बजाई,
तब ही बंबई की मिठाई उसके पीछे आई।

अम्मा से मनौती करके पैसे हमने माँगे,
पीछे रह गये हम चाहे जिस भी गति से भागे।

छुपा -छुपी, सितोलिया, दौड़, गिप्पा फैंका- फाँकी,
छोटे से घरगूले में हमने तस्वीर टाँकी,।
थोड़े बड़े हुए तब खेले हमने टेसू - झाँझी,
सखियों के संग दीवार पर ख़ूब बनाई साँझी।

आई परीक्षा की घड़ियाँ रात रात भर जागे,
पीछे रह गये हम चाहे जिस भी गति से भागे।

बन गये शिक्षक गये पढ़ाने करके सारे काम,
अब खाली बैठें हैं लगता कर लें कोई काम।
पलक झपकते कैसे सारा वक्त गया हाथों से,
कर्म सफलता देता है, कब मिली हमें बातों से।

प्रीति के अब तो अपनों से टूट गये हैं धागे,
पीछे रह गये हम चाहे जिस भी गति से भागे।

सुश्री सुनीति बैस, प्रधानमंत्री आवास योजना कालोनी महलगांव, पंत नगर के पास, फ्लेट 12/504
ग्वालियर मध्यप्रदेश, मो 9425757175

कहानी - झूला - भावानुवाद डॉ सुशीला दुबे - सौ. उज्ज्वला केळकर

झूला झूल रहा है, आगे-पीछे, पीछे - आगे। कांचन झूले के डंडे पर पांव मोड़कर मजे में झूल रही है। शान से, लेकिन सावधान है। हाथ मोड़कर छाती पर रखे है। सर नीचे... एक... दो... तीन... आठवे अंक पर झूले पर का यह शीर्षासन समापन. डंडे के चारो ओर एक चक्राकार प्रदक्षिणा और दूसरे ही क्षण आगे लपक कर कांचन के हाथ पकडना, उसी स्थिति में दो झूले फिर अबाउट टर्न। फिर से दोनों हाथों से अपने झूले का डंडा पकड़ना। एकदम पक्का। तब तक आठ अंक की गिनती होती है। एक लय में। शामियाने के अंदर के दीप बुझा दिये गये है। बाहर की ओर खंभे पर लगी ट्यूब लाईट का धुंधला उजाला यहां तक पहुचता है। सब कलाबाजी अंधेरे में ही दिखानी है। यही इस सर्कस की खासियत है। शामियाने के एक कोने में सर्वâस का बँड बज रहा है। सब कलाबाजी बँड के धून पर है, ऐसा आभास जगाना है। बस्स! नहीं तो बाकी सब कुछ निश्चित। सुंदर। सुघड। जमीन से पचास, पचपन, साठ फीट उंचाई पर बंधे अनेक झूले, एक डंडेवाले, उस पर डबल बार, सिंगल बार और कई प्रकार की कलाबाजियां की जाती है। वह कलाबाजियां दिखानेवाली हम दस-बारा लडकियां। रंगबिरंगे, ट्विंकल नायलॉन के झालर लगे प्रâॉक का घेर पैâलाकर कलाबाजियां करती है।

बौने ने एक बार कहा था, `पब्लिक को लगता होगा, आसमान की परियां अधर में तैर रही है। '

कांचन ने मेरे हाथ की केवल कनिष्ठिका पकड़ रखी है। अगले झूले में फिर से अबाउट टर्न। पहले झूले का डंडा पकड़कर झूलते रहना है। उस से अगले झूले पर कांचन मेरे पांव पकड़ लेगी, फिर रोजा कांचन के। पैतीस फीट उंचाई पर नेट बंधा है। उस पर बौना खड़ा है। हाथ में लंबी छड़ी है। हम तीनों की सांकल झूले के डंडे के सहारे झूल रही है। आगे-पीछे, पीछे - आगे। अब बौना उछल-वूâद कर के यह सांकल पकडने की कोशिश करेगा। फिर छड़ी ऊपर करेगा। कभी वह गिरेगा, कभी छड़ी गिराएगा। फिर जैसे-तैसे छड़ी रोजा के हाथ आएगी। फिर एक के बाद एक रोजा, कांचन और मैं छड़ी पर फिसलते हुए नीचे आएंगी। इस खेल का हमारा आखरी आयटम। सब कलाबाजियों के बाद हम कभी कभी उकता जाते है। परसों कांचन नें बौने से कहा, `तुम्हारी मर्वâट लीला जल्दी समाप्त करो। हमारे हाथ भर आते है। तब बौने नें कहा, `मॅनेजर साब नें मुझे कहा है कि मैं कम से कम पांच मिनिट पब्लिक को हंसाकर रिल्ॉक्स करूं। अब तुम्हे तकलीफ होती है, तो मैं कोई न कोई रास्ता निकालूंगा, पर उस के बदले में मुझे कुछ न कुछ... रिश्वत कहो, गिफ्ट कहो... क्या?' अपना मुंहासे वाला थोबड़ा आगे कर के गाल पर टॅप करते हुए उस नें कहा - `वन फॉर वन मिनिट बिफोर, टू फॉर टू मिनिट्स बिफोर, थ्री... '

`डू यू मीन इट?'

`येस, ऑफ कोर्स' चेहरे पर शरारती हास्य बिखरते हुए बौना बोला। कांचन आगबबूला हुई। `छी: गंदा कही का! इससे तो बेहत्तर है हाथ टूटने तक लटकते रहना। इस बौने से तो सायकल चलानेवाला बंदर बेहतर है। ' कांचन बौने पर झुंझला रही थी। वह भी कमाल करती है। अब बौने की बात का क्या बुरा मानना? उस की तो सभी बाते हंसी-मजाक की होती है। उसे साजिंदा होते हुए किसी नें देखा है भला? लोगों को हसाते हसाते विदूषक की तरह बर्ताव करना, बात करना, हावभाव दिखाना उस का स्वभाव बन गया है। इतना सहज जैसे हम सांस लेते है। कांचन से उस ने जो कहा, वह यकीनन मजाक में ही कहा। नहीं तो मैं, कांचन, रोजा, परमेश्वरी हम सब उस की बेटियों जैसी है। पर कांचन यह बात मानने को तैयार नहीं। वह कहती है, `उस ने सिर्पâ कहा नहीं, वह सूचित करना चाहता था। '

क्या कांचन की बात सही होगी?

क्या चेहरे जैसे उस के विचार भी विद्रूप होंगे? कहीं मन में दबे विचार अनजाने, असावधानी में उछल पडे होंगे। कांचन भन्ना रही थी लेकिन बौने के चाल-चलन में कोई फर्वâ नहीं था। वह चिढ़ रही थी इस लिए वह ज्यादा पीछे पड़ रहा था। वही निरीह मजाक लेकिन कांचन का गुस्सा उफन रहा था, फौव्वारे जैसा।

बौने ने शादी नहीं की है? क्यौं नहीं की होगी? बौना हे, इसलिए? लेकिन ऐसे कितने ही विदूषकों की शादियां हुई है। थोड़ा बहुत समझौता करना पड़ता है। बस! मॅनेजर साहब ने कितनी बार कहा है। कभी मज़ाक मेंं, कभी बातो-बातो में, कभी गंभीरता से। लेकिन वह सब बाते मज़ाक समझकर चल देता है। एक बार उस नें कहा, `मेरे आस-पास मंडराने वाली आसमान की परियां देखकर वह मत्सर से जल जाएगी और मुझ बेचारे को फांसी लग जाएगी। और भी ऐसी ही अंटशंट... उस की निश्चित धारणा थी, कि क्या जरुरत है शादी करने की।

बौने का चेहरा विद्रूप है लेकिन उसका बोलना, हंसना ऐसा शानदार है कि उस के अस्तित्व से पूरे शामियाने में चैतन्य सरसराता है। भोजन के समय अगर वह नहीं रहता, तो कादर नें बनाई हुई चिकन करी और कबाब एकदम बेस्वाद लगने लगते है। बौना जहां भी होता है, वहां हंसना, खिलखिलाना चलता रहता है। हंसी मजाक में कुछ ज्यादा ही खा लेते है। दिन भर के काम की थकान कम हो जाती है। बौने के माँ से मिलना चाहिये। उसे पूछना चाहिये कि क्या ये पैदा हुआ था, तब भी रोने के बजाय हंस रहा था?

गांव मेंं उस की छोटी बहन की प्रसूती हुई थी। शो समाप्त होने पर स्पेशल टॉक्सी लेकर वह गांव जानेवाला था। लेकिन उस से पहले, शो चल रहा था तभी तार आया, लडका पैदा हुआ लेकिन माँ चल बसी। तब भी वह हंसा था। खिलखिलाकर हंसा थ। इतना कि उस की हंसी से डर लगने लगा था। सब के

मन में आया था कि वह रो दे तो अच्छा है। सब को हंसाने वाले बौने को उस दिन सब नें रुलाने की कोशिश की थी। बाद में वह गांव जाकर आया। बता रहा था, बहन का बेटा अपने मामा पर गया है। याने मुझ पर। । और वह हंसता रहा बस, इतना ही। अन्यथा पिछले बीस सालों में कभी उस का संतुलन बिगड़ा हुआ मुझे तो याद नहीं।

यहां सभी को बौने का सहारा है। मॅनेजर उस की इज्जत करता है। कोई कहता है, वह मालिक का दूर का भानजा है। बचपन में उस की बदसूरत भद्दी शक्ल, व्रण से भरा चेहरा, पीठ की वूâबड़ और बौनापन की वजह से उस का मजाक उड़ाया जाने लगा। इसलिए स्वूâल, घर सब छोड़कर उसने इस सर्वâस में पनाह ली। यहीं पला-बढ़ा। यहीं पर उसने अपनी कला दांव पर लगाई। अपनी मासूम निरीह हंसी खुलकर बिखेर दी। वह सब को अपना लगने लगा। अब कांचन उस के बारे में ऐसा कह रही है। ़जरूर उसे गलतफहमी हुई है। दरअसल जो वास्तव में है ही नहीं उस कीड़े का उस की कल्पना में नाग बन गया है। बौना तो शायद भूल भी गया होगा कि उस नें ऐसा कुछ कहा था। पर कांचन खार खाए बैठी है। उसे कहीं अंदर तक चोट पहुंची है।

परसो बौने के वजह से सब ठीक हो गया। हुआ ऐसा कि श्रीनिवासन को बुखार था। सुबह से चिंता लगी थी कि उस का शो हो पाएगा या नहीं? उस का शो महत्वपूर्ण था। तोप में बत्ती लगाते ही मृत्यूगोल में मोटर सायकल पर उड़ान। फिर नीचे से ऊपर चक्कर लगाना। दर्शक सांस रोककर देखते है। मोस्ट थ्रिलिंग आयटेम। देखनेवाले के रोंगटे खडे हो जाते है। थ्रिल ही मनोरंजन है। दो रुपये देकर थ्रिल की अनुभूति लेना। उसके लिए कोई अपनी जान दांव पर लगाता है। मृत्यूगोल में गोल गोल घूमना। अति सावधानी से, पलभर की भी गलती न करते हुए।

झूले पर कलाबाजी करते हुए यह सब विचार मेरे मन में आ रहे थे। मन भी वैâसा बावरा होता है। पता नहीं कब क्या सोचने लगे। सब कलाबाजियां आदत के मुताबिक हो रही थी। फिर मृत्यूगोल में गोल गोल घूमनेवाला श्रीनिवासन आंखों के सामने आया। सुबह उसे तेज बुखार था। आज सब ठीक तो होगा नं? पलभर के लिए मन पागल हो गया। उस के आस-पास मंडराने लगा। और मैं नें झूला छोड़ा तब कांचन का झूला पीछे चला गया था। मैं नीचे नेट की तरफ। पता नहीं वैâसे, पर बौने ने अपने छोटे हाथों से पकड़ लिया। `आसमान की परी नीचे वैâसी आ गई छलांग लगाकर... ' ऐसा कुछ बड़बड़ाते हुए अपनी शक्तिशाली हाथों से उस नें मुझे झूले की तरफ ऊपर उछाला। कांचन के पांव हाथ आ गये। मेरी जान में जान आ गई। नीचे बौने की बकबक और अंगविक्षेप चल ही रहे थे। दर्शक खिलखिलाकर हंस रहे थे। तालियां बज रही थी। उन्हे लगा, मेरा गिरना खेल का ही हिस्सा है। नीचे जमीन पर खड़े मास्टर जी की लाल आँखे धीरे धीरे साफ होती गई।

आज भी मन घबरा रहा है। लगता है, कुछ बुरा होनेवाला है। श्रीनिवासन अच्छे खानदान का ग्रॅज्युएट लड़का है। पता नहीं कौन से अनाम आकर्षण में वह कहीं और नौकरी न ढूंढते हुए, यहां सर्वâस में आ गया। कॉलेज के दिनों में भी वह सिंगलबार, डबलबार, रोमन रिंग, मलखंभ आदि खेलों में दिलचस्पी लेता था। सायकल रेस में युनिवर्सिटी में फस्र्ट आया था। उस का मूड अच्छा रहा, तो खूब बातें करता है। अपने बारे में, घर के बारे में, कॉलेज के बारे में, सर्वâस में आने के बारे में। यहां उस नें पहले छोटे-मोठे काम सिखे। फिर सब से महत्वपूर्ण मृत्यूगोल में मोटर सायकल चलाने का काम सीख लिया। अब वह कहता है कि इस काम से वह उकता गया है। अब वह कहीं घर बसाना चाहता है। गृहस्थी बसाकर आरामसे रहना चाहता है। यहां वहां घूमते रहने से भी वह उकता गया है। बंबई जैसे महानगर में उसे रोजी रोटी मिलना मुश्कील नहीं है। वह कहता है, बंबई में उस के समाज के कई लोग है। दो वक्त की रोटी का इंतजाम वैâसे भी हो ही जाएगा लेकिन यहां से छुटकारा मिले तब ना! मास्टर जी कहते है, `तुम्हारी जगह दूसरे किसी को तैयार करो और फिर तुम चले जाओ'। वही तो वह कर नहीं पा रहा है। वैसे वह बड़ा आलसी और सनकी है इसलिए मुझे उस की हमेशा चिंता लगी रहती है। कहीं भी, वैâसा भी, झुक जाता है। बिना सोचे समझे भटक जाता है।

श्रीनिवासन जाते समय मुझे ले जाएगा नं? मुझे देखते ही उस की आंखें चमकने लगती है। मंत्रमुग्ध हो जाता है। उस की बातें सुननेवाला भी मंत्रमुग्ध हो जाता है। पर क्या वह मुझसे ही ऐसी बातें करता है, या सभी से? वह कहता है, यहां इस प्राणी संग्रहालय में और यहां के इंसानों में तुम ही अकेली सही मायने में स्त्री लगती हो। बाकी सब लडकियां मर्दाना लगती है। उसे मेरे लिए बहुत अपनापन है। कम से कम मुझे तो ऐसा लगता है। उस की बातों से... उस के बर्ताव से... लेकिन यहां से जाते समय मुझे वह अपने साथ ले जाएगा नं? मेरा यहां से छुटकारा होना कोई मुश्किल काम नहीं है। झूले पर कलाबाजियां दिखानेवाली यहां कई लड़कियां है। मुझ पर और कोई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी नहीं है। वैसे भी यह काम मुझे पसंद नहीं है। मैं इस सर्वâस में पली-बढ़ी। मैं किसी की गिनती में नहीं थी। कोई कहता है, बड़े मालिक को मैं सड़क पर मिली थी। कोई कहता है, दो आदमी एक बच्चे को लेकर भाग रहे थे। मालिक नें देखा और उन्हें डांटा। तब वे मुझे यहां छोडकर भाग गए। कोई कहता है, मेरी माँ नें ही मुझे मालिक के हवाले कर दिया था। इतना बड़ा कुनबा है, उसमें एक जीव क्या भारी पड़ेगा? जितने मुंह उतनी बाते। पर एक बात सच है कि मुझे समझने लगा, तभी से मैं इस सर्वâस में हूँ। अब बड़े मालिक नहीं रहे। बचपन से यहां रहकर भी मुझे इस काम में दिलचस्पी नहीं है। आज यहां, कल वहां घूमते रहने से स्वूâल की पढ़ाई भी ढंग से नहीं हो पाई। देखकर, सुनकर, पढ़कर जो मिल सके उतना उतना अभ्यास होता है। अपनी सर्वâस की दुनिया कितनी अलग है, असली दुनिया से टूटकर अलग... एक जगह पड़े जैसी। क्या कभी मैं उस दुनिया में... दूसरी दुनिया में जा पाऊंगी?

सर्वâस की दुनिया में पली-बढ़ी इसलिए कलाबाजी के कुछ आसान खेल सीख लिए। नहीं तो यहां मेरा अस्तित्व शून्य है। श्रीनिवासन की वजह से पहली बार इस बात का अहसास हुआ कि मेरी इस निरर्थक जिंदगी में भी कोई अर्थ है, फिर मैं काम में और अपने आप में भी दिलचस्पी लेने लगी। एक बार श्रीनिवासन नें कहा था, `यहां के रुखे, नीरस जानलेवा माहौल में मैं तुम्हारे कारण ही ठहरा हूँ। मृत्यूगोल में भी मैं तुम्हारे बारे में ही सोचता हूँ... सिर्पâ तुम्हारे बारे में।

इतनी अच्छी अच्छी बातें वैâसे कर लेता है वह? सामनेवाले को खूश करनेवाली... यह सब बातें उस के मन की, अंतर्मन की होगी नं? या केवल शब्द... मुझे खूश करने के लिए? वह मुझसे ही ऐसी बातें करता है, या औरों से भी? कांचन, रूबी सभी से वह ऐसी ही मीठी मीठी बातें करता होगा। सच क्या है, जान लेना चाहिये। बौने को विश्वास में लेना पड़ेगा। उसे कहना पड़ेगा, श्रीनिवासन के मन की गहराई तक जाकर जान ले। वह बहुत चंचल है। उस का स्वभाव बच्चों जैसा है। उसे संभलना चाहिये। ख्याल रखना चाहिये उस का। मैं सब कुछ करूंगी। लेकिन वह मुझे साथ ले जाए तब नं! उसे कसम दिलानी होगी। बाद के वादे नहीं चाहिये। उसे जता देना चाहिये कि यहां से जाने से पहले शादी कर के मुझे साथ ले जाय। बौने से कहना चाहिये, तुम मेरी ओर से उस से बात करो। तुम्हारे सिवा यहां मेरा अपना कोई नहीं है। और फिर एक अच्छा सा घर। अरे हां, मुझे खाना बनाना सीखना पड़ेगा। कोई बात नहीं है। मैं सीख लूंगी। यहां जान हथेली पर लेकर लटकते रहने से वह काम बेहतर होगा। झूले का हिलोरा, लय में गिने जाने वाले अंक, पलभर की गलती हुई, तो हाथ-पांव खोने की संभावना।

आजकल श्रीनिवासन की रूबी के साथ घनिष्ठता बढ़ती जा रही है। रूबी उन्मुक्त... आँधी जैसी... वह किसी एक से दिल लगाकर बैठेगी, ऐसा तो नहीं लगता, फिर भी आजकल वह श्रीनिवासन के बारे में बहुत अपनापन जताती है। अपनापन या प्यार? हमेशा कहती है, `वह कितना लापरवाह है, उस की हंसी कितनी मधुर है। उस के घुंघुराले बालों में उंगलियां पेâरने का मन करता है। उस के पीछे मोटर सायकल पर बैठने में कितना थ्रील और चार्म है। ' रूबी की बातें बर्ताव सब कुछ नि:संकोच। वह कहती है श्रीनिवासन को कसकर पकड़कर बैठना, मोस्ट थ्रिलिंग एक्स्पेरियन्स!' श्रीनिवासन को कसकर पकड़कर बैठी रूबी... खूबसूरत, सुडौल, लाल पोशाक में नजरें गड़ा देनेवाली रूबी... कुछ नया... काश यह बात अपने दिमाग में आती। रात-दिन उस की चिंता लगी रहती है, फिर भी यह बात मेरे दिमाग में क्यों नहीं आई? रूबी को पूछना चाहिये कि आज के दिन मैं उस के पीछे बठना चाहती हूँ। मगर उस नें पूछा, क्यों बैठना चाहती हो, तो क्या बताऊं? मुझे किसी अशुभ घटना की आहट नें घेर लिया है। वह हंसेगी। खिल्ली उड़एगी। कहेगी, `नॉन्सेन्स!'

शायद श्रीनिवासन को भी बताएगी। शायद दोनों हंस पडेंगे। मज़ाक उड़ाएंगे। क्या मास्टरजी से पूछा जाय? लेकिन वे कहेंगे, `अभ्यास चाहिये। पकड़ पक्की चाहिये... छूट गई तो... '

झूला झूल रहा है। श्रीनिवासन मुझे ले जाएगा या रूबी को? असमय, अनचाहे विचार... श्रीनिवासन कब जानेवाला है? उस के मन में क्या है, यह जानलेने का काम बौना कर सकता है। क्या वह मेरेलिे इतना करेगा? उस से अपना क्या संबंध है? कांचन नें गलतफहमी कर ली है। बौना सचमुच मासूम है लेकिन कांचन को वैâसे समझाएं? बौने को देखते ही वह आगबबुला होती है। कहीं कांचन सही तो नही है? बौने के मन में कहीं वासना के कोंपल लहलहा रही है। बढ़ रही है?

पॉच-छेः-सात, आठवे अंक पर झूले डंडे के चारों तरफ प्रदक्षिणा और कांचन की ओर लपकना... कांचन के हाथ में सिर्फ दोनों कनिष्ठिका... मैं लटकती रहती हूँ। फिर जंजीर बनेगी... बौने के छडी पेâकने तक लटकते रहना... क्या बौना यह लटकना रोकेगा? हमेशा... हमेशा के लिए...?

हिंदी अनुवाद डॉ. सुशीला दुबे - फ्लैट नं. ३०३ बिल्डिंग नं. - डी-२, शिवसागर को. ऑप. सोसायटी, माणीकबाग, सिंहगड रोड, पुणे- ४११०५१ मो. - ९९२३०११६१३

मूल लेखिका - उज्ज्वला केळकर - निलगिरी सोसायटी, सी5, 29, 0:3, सेक्टर 5, बेलापूर सीबीडी, नवी मुबई 400614मो. 9403310170, email-id - kelkar1234@gmail. com

कहानी - धनतेरस... - श्री संजीव वर्मा 'सलिल'

वह कचरे के ढेर में रोज की तरह कुछ बीन रहा था, बुलाया तो चला आया। त्यौहार के दिन भी इस गंदगी में? घर कहाँ है? वहाँ साफ़-सफाई क्यों नहीं करते? त्यौहार नहीं मनाओगे? मैंने पूछा।

'क्यों नहीं मनाऊँगा? प्लास्टिक बटोरकर सेठ को दूँगा जो पैसे मिलेंगे उससे लाई और दिया लूँगा।' उसने कहा।

'मैं लाई और दिया दूँ तो मेरा काम करोगे? ' कुछ पल सोचकर उसने हामी भर दी और मेरे कहे अनुसार सड़क पर नलके से नहाकर घर आ गया। मैंने बच्चे के एक जोड़ी कपड़े उसे पहनने को दिए, दो रोटी खाने को दी और सामान लेने बाजार चल दी। रास्ते में उसने बताया नाले किनारे झोपड़ी में रहता है, माँ बुखार के कारण काम नहीं कर पा रही, पिता नहीं है।

ख़रीदे सामान की थैली उठाये हुए वह मेरे साथ घर लौटा, कुछ रूपए, दिए, लाई, मिठाई और साबुन की एक बट्टी दी तो वह प्रश्नवाचक निगाहों से मुझे देखते हुए पूछा: 'ये मेरे लिए? ' मैंने हाँ कहा तो उसके चहरे पर ख़ुशी की हल्की सी रेखा दिखी। 'मैं जाऊँ? ' शीघ्रता से पूछ उसने कि कहीं मैं सामान वापिस न ले लूँ। 'जाकर अपनी झोपड़ी, कपड़े और माँ के कपड़े साफ़ करना, माँ से पूछकर दिए जलाना और कल से यहाँ काम करने आना, बाक़ी बात मैं तुम्हारी माँ से कर लूँगी।

'क्या कर रही हो, ये गंदे बच्चे चोर होते हैं, भगा दो' पड़ोसन ने मुझे चेताया। गंदे तो ये हमारे फेंके कचरे को बीनने से होते हैं। ये कचरा न उठायें तो हमारे चारों तरफ कचरा ही कचरा हो जाए। हमारे बच्चों की तरह उसका भी मन करता होगा त्यौहार मनाने का।

'हाँ, तुम ठीक कह रही हो। हम तो मनायेंगे ही, इस बरस उसकी भी मन सकेगी धनतेरस'

कहते हुए ये घर में आ रहे थे और बच्चे के चहरे पर चमक रहा था थोड़ा सा चन्द्रमा।

श्री संजीव वर्मा सलिल, विश्ववाणी हिंदी संस्थान, ४०१ विजय अपार्टमेंट, नेपियर टाउन, जबलपुर ४८२००१, चलभाष: ९४२५१८३२४४ ईमेल: salil.sanjiv@gmail.com

लेख - खुशी का मौसम श्री राकेश कुमार

हमारे देश में दो मौसम खुशियों के हुआ करते थे। कैलेंडर वर्ष की पहली तिमाही में पड़ने वाला रंगों का त्यौहार होली और दूसरा अंतिम तिमाही में आने वाला दिवाली।

वर्ष की दो तिमाहियां खुशियों के साथ निकल जाती है, और शेष दो तिमाहियां सामान्य रूप से व्यतीत हो जाती हैं। ये क्रम विगत कुछ वर्षों से प्रायः बंद सा हो गया हैं। ऐसा नहीं है, कि त्यौहार नहीं मनाए जाते हैं, परंतु आजकल तो दिवाली और होली के अलावा पश्चिम के त्यौहार अधिक लोक प्रिय हो गए हैं।

जन्मदिन, वेलेंटाइन, विवाह या सगाई की वर्षगांठ के साथ में हलोविन, थैंक्स गिविंग जैसे पश्चिम के त्योहारों का चलन बढ़ गया हैं। स्थानीय और लोक त्यौहार तो अब इतिहास की बातें बन चुकी हैं। दिवाली त्यौहार अब घर के बने मिष्ठान से महानायक द्वारा प्रचारित कैडबरी चॉकलेट या बंद डिब्बों वाली सोनपापड़ी में सीमित हो गया हैं।

हमारे घर में एक बहुत बड़ी वाली कढ़ाई है, पूरा मोहल्ला उसका उपयोग मिठाई बनाने में करता था। हमारी संस्कृति में बर्तन की वापसी में कुछ डाल कर ही दिया जाता हैं। वो हमारी कढ़ाई त्यौहार में तीन तीन शिफ्ट में उपयोग होती थी। उसके चक्कर में हमारे को मिठाई बनानी नहीं पड़ती थी।

विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का ढेर लगा जाता था।

पिछले कुछ दशक से उस कढ़ाई में कभी कली तक नहीं हुई हैं। बस अब तो इंतजार रहता है, पासिंग द पार्सल वाली सोनपापड़ी के डिब्बे का, सेवानिवृत के यहां तो कोई भूले भटके ही आता हैं। मोहल्ले में वर्ष भर अलग अलग दिन जन्मदिन पर केक के नाम पर गंदी वाली क्रीम की मोटी परत के नीचे पापड़ जैसा मोटा केक अवश्य चिपका रहता हैं।

शायद इसको "वासुदेव कुटुंभकम" कहकर हम अपने आप को विश्वगुरु समझने लगे हैं।

श्री राकेश कुमार, B 508 **शिवज्ञान एनक्लेव**, **निर्माण नगर** AB **ब्लॉक**, **जयपुर**-302 019 (**राजस्थान)**

कहानी - तीन लघुकथाएं - डॉ. रमेश यादव

एक - क्या मां भी कभी रिटायर होती है!

सुबह 10 बजने में कुछ मिनट बाकी थे। सबकी नजरें मुख्य द्वार पर टिकीं थी। और मिसेज अनिता जोशी ऑफिस में प्रवेश करती हैं। कांच का दरवाजा खोलकर अंदर कदम रखते ही स्टाफ तालियां बजाकर बड़ी गर्मजोशी से उनका स्वागत करता है। तिलक, आरती, फूल-माला पहनाकर गुलाब की पंखुड़ियों की बरसात की जाती है। शुभकामनाओं भरा गीत प्रस्तुत किया जाता है। सभी लोग उनके सुखी, सम्पन्न, स्वस्थ रिटायरमेंट जीवन की मंगल कामना करते हैं। आज का दिन विशेष है यह एहसास उनके सहकर्मी जताने की कोशिश करते हैं और पल-पल की हलचल को कैमरे में कैद करते हैं।

काफी कोशिशों के बावजूद भी वो अपनी भावनाओं को रोक नहीं पाईं, आँखों से छलकते आंसुओं को आँचल से पोंछते हुए आगे बढ़ती हैं। तभी एक कर्मचारी झुकते हुए उन्हें मस्टर थमा देता है। मिसेज जोशी हस्ताक्षर करने लगती हैं। ऑफिस का ये उनका अंतिम हस्ताक्षर था। हस्ताक्षर ही क्या, ऑफिस का हर क्षण आज उनके लिए अंतिम था। भावूक होकर वो हर क्षण को दिल के कैमरे में कैद करते हुए आज के हर पल को जीने की कोशिश कर रहीं थीं।

मिसेस जोशी जानती थीं कि कल से यह ऑफिस उनके लिए बेगाना हो जाएगा। रोज की दौड़-भाग भरी नटनी की जिंदगी से मुक्ति का आनंद या कुर्सी खोने का दुख...! दुविधा मनस्थिति...!

"मॅडम आज आप काम नहीं करेंगी, सबसे मिलते हुए सिर्फ बिदाई समारोह की तैयारी करेंगी। " मैनेजर साहब ने इंसानियत का परिचय दिया, जो टारगेट और काम को लेकर रोज पीछे पड़े रहते थे।

जैसे ही मिसेस जोशी ने अपना मोबाइल ओपन किया, उनके जेहन में भविष्य की योजनाओं का कारवां तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा। सोचने लगीं- नौकरी करते हुए चालीस साल कैसे गुजर गए, पता ही नहीं चला। मुंबई की रफ्तार भरी जिंदगी, रोज की आपाधापी... । अगले ही पल उनकी आँखों में घर-गृहस्थी का दृश्य तैर गया, जो उन्हें अब भी निभाना था... । बेटी की गोद भराई रस्म, बहू-बेटे, पति, सास की जिम्मेदारियाँ, आगे पोता-पोती के साथ खेलेने के सपने, उनकी देखभाल, उनके शिक्षा की चिंता, उम्र के साथ संगाती बन रहीं बीमारियों के साथ तालमेल... ! सबकुछ तो अभी निभाना ही है... । मतलब सेवानिवृत्ति सिर्फ ऑफिस से मिलने वाली तनख्वाह से निवृत्ति है.. । उनकी जेहन में एक विचार कौंधा..... क्या मां भी कभी रिटायर्ड होती है.... ?

दो - जिंदगी भी एक हवन कुंड

शहर के जाने माने उद्योगपति अग्रवाल जी की 75 वीं सालगिरह पर हवेली में होम हवन, पूजा-पाठ और सहभोज का आयोजन किया गया था। परिवार के सभी छोटे-बड़े सदस्य पंडित जी के साथ पूजा की रस्म निभा रहे थे। इस दौरान पंडित जी ने जीवन के मर्म से जुड़ी कथा के माध्यम से जीवन में आनंद और सुख कैसे खोजना चाहिए इसका राज़ समझाया। कथा समापन करते हुए पण्डितजी होम करवाने में जुट गए।

स्वभावानुसार अग्रवाल जी हाथ संभालकर समिधा समर्पित कर रहे थे, जिससे अंत में काफी समिधा बच गई। अंत में होम-हवन के समापन की घोषणा करते हुए पंडित जी ने अंतिम मंत्र पढ़ा और बोले, "अब जो कुछ बच भी गया है सारी सामग्री, कुंड में एक साथ समर्पित करके जोर से बोलो - स्वाहा। "

बची हुई सारी समिधा एक साथ हवन में समर्पित करते हुए अग्रवाल जी भी जोर लगाकर बोले - "स्वाहा।"

हवन कुंड में समिधा की मात्रा अधिक हो जाने से चारो ओर धुआं ही धुआं फैल गया। सबकी आंखों में जलन होने लगी। अग्रवाल जी ने भी अपनी आंखें मलते हुए मूंद ली और उनका भूतकाल आंखों में तैर गया। जेहन में ख्याल आया - अरे, बचाने और हाथ बचाकर खर्च करने की फ़िक्र में मैंने अपने जीवन में भी काफी समिधा बचा ली है। अब तो एक साथ समर्पण की बारी आ गई। यहां से तो आंखों में सिर्फ नमी और सामने गुबार ही गुबार नज़र आ रहा है। मतलब जीवन में भी समिधा समर्पण का संतुलन बिगड़ गया।

पंडित जी की कथा का स्मरण करते हुए उन्होंने अपनी आँखें खोली और संकल्प किया कि आज के बाद सामाजिक सरोकार के तहत वे गरीब, असहाय, विकलांग तथा जरूरतमंदों की सुश्रुषा में अपना अतिरिक्त धन लगाएंगे। तुरंत निराशा के बादल छँट गए और नए जोश के साथ आनंद के उन क्षणों को वो जीने लगे।

तीन - ठगों से मालिक बचाएं

गांव के बाहर, मंदिर के पास स्थित पीपल के पेड़ के नीचे तीन लोग बातें कर रहे थे। अचानक उनकी नजर सामने से आ रहे पंडित जी पर पड़ी। बकरी को देखते ही उनके मन में लालच आ गया और वे तीनों बिखर गए।

दक्षिणा संग दान में मिली छोटी बकरी को कंधे पर लादे पंडित जी घर की ओर जा रहे थे। जैसे ही पंडित जी पीपल के पास से गुजरे उनमें से एक जो कि मुंह में पान ठूसे हुए था, बोला - “महाराज जी इस कुत्ते को कंधे पर लादकर कहां ले जा रहे हैं?”

“अंधे हो क्या? दिखाई नहीं देता ये कुत्ता नहीं बकरी है... बकरी। यजमान ने दान दिया है। ” मुंह बनाते हुए पंडित जी ने जवाब दिया।

“आपकी नज़रें धोखा खा रही हैं महराज जी, मुझे तो कुत्ता दिखाई दे रहा है! यजमान ने आपको फंसा दिया है। आगे जैसी आपकी सोच। ” कहकर वह व्यक्ति चलते बना।

कनखियों से पंडित जी ने एक नज़र बकरी की ओर देखा और आगे बढ़ने लगे। कुछ दूर जाते ही दूसरे व्यक्ति ने उन्हें घेर लिया और बोला, “पंडितजी जयराम, का हाल चाल बा?”

“जयराम जी। सब कुशल मंगल है, अपनी सुनाओ।”

“सब ठीक है बाबा, मगर आप ई का अनर्थ कर रहे हैं? कंधे पर सूअर लादे कहां जा रहे हैं? ई आपको शोभा नहीं देता! राम राम राम... लोग क्या सोचेंगे?”

“अरे मूर्ख, तेरी आंखें फूट गई हैं क्या, जो बकरी को सूअर बता रहा है?”

“पंडितजी आपकी अब उम्र हो गई है। बकरी नहीं सूअर है सूअर! अब आप नहीं मान रहे हैं तो हम भला का कर सकते हैं?” इतना कहकर वह भी चलते बना।

आगे बढ़ते हुए पंडित जी सोचने लगे...। ऐसा कैसे हो सकता है ! उन्होंने पुन: बकरी को गौर से देखा और अपनी तसल्ली करते हुए आगे बढ़ने लगे। कुछ दूर जाने के बाद रास्ते में बैठा तीसरा व्यक्ति सामने आया और बोला, "बाबा पायलागू, इस गदहे को लादे दुपहरिया में कहां जा रहे हैं? सब ठीक तो है ना? ई बोझा को काहें ढो रहे हैं?”

“अरे अकल का मारा, तू अंधा है क्या जो बकरी को गदहा बता रहा है?”

“बाबा, गदहा है गदहा! जरा गौर से देखें। खैर, मैंने जो देखा, सो बता दिया, आगे आप जाने। ” इतना कहकर वह आगे बढ़ गया।

पंडित जी चिंता में डूब गए। वे सोचने लगे कि एक ने कुत्ता कहा, दूसरे ने सूअर और ये तीसरा गदहा कह रहा है। जरूर ये प्राणी मायावी है जो बार-बार अपना रूप बदल रहा है और मुझे नजर नहीं आ रहा है। अन्यथा राह चलते लोग ऐसी बातें क्यों करते? आगे चलकर ये मुझे नुकसान पहुंचा सकता है! ऐसा सोचकर उन्होंने तुरंत उस बकरी को कंधे से उतारा तथा खेत की ओर भगा दिया। पंडित जी ने अंतिम बार उसकी ओर देखा और मन कठोर करते हुए उसे वहीं छोड़कर अपने घर की ओर चल दिए।

मौका देखकर उन तीनों ठगों ने पंडित जी पर ठहाका लगाया और बकरी को लपक लिया। अपनी योजना कामयाब होते देख वे खुशी से झूम उठे। उनमें से एक बोल, “भाई ज़िंदगी में ठगों से कोई बच पाया है? विज्ञापन, राजनीति, ढोंगी बाबा या अन्य कोई भी मोड़ हो,... ठग तो हर जगह मिल जाते हैं। इसीलिए लोग कहते हैं- ठगों से मालिक बचाएं।

डॉ. रमेश यादव, 481/161 - विनायक वासुदेव बिल्डिंग, एन. एम. जोशी मार्ग. चिंचपोकली (पश्चिम), मुंबई - 400011 मो - 9820759088 / 7977992381 ईमेल - rameshyadav0910@yahoo.com

कविता - शुभ हो यह पर्व - श्री अरुण कुमार दुबे

रात दिवाली की है दीप जलाओ मिलकर
मैल घर का नहीं मन का भी हटाओ मिलकर

सिर्फ अपने ही नहीं, रोशनी हो हर घर में
हर्ष त्यौहार का ऐसा ही मनाओ मिलकर

जो भी फुटपाथ पे सामान रखे बैठे है
उनके चेहरे भी खुशी देके खिलाओ मिलकर

हम पटाखे न चलाओ ये कभी कहते हैं
ध्यान हर किस्म प्रदूषण पे भी लाओ मिलकर

अपने परिवार को कपड़े जो मिठाई लाओ
कोई मुफ़लिस हो जो उसको भी दिलाओ मिलकर

द्यूत क्रीड़ा से भला किसका हुआ है बोलो
ठीक ये रीत नहीँ जड़ से मिटाओ मिलकर

पाक घर पाक दिलों में है रमा जी आती
अपने घर ,मन को इसी तौर बनाओ मिलकर

शुभ हो यह पर्व सभी को ये अरुण की है दुआ
मुल्क की शान में औ चाँद खिलाओ मिलकर

श्री अरुण कुमार दुबे, 5, सिविल लाइन्स सागर मध्य प्रदेश मोबाइल : 9425172009 Email : arunkdubeynidhi@gmail.com

हास्य - सर पर माथा पच्ची - श्री प्रतुल श्रीवास्तव

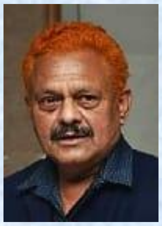

वर्माजी बहुत देर से मेरे सामने "सिर झुकाए" बैठे थे। वे बीच - बीच में अपना "सिर खुजाते हुए" भाई साहब बोलते और फिर चुप हो जाते। उनके भाई साहब, भाई साहब कहने और फिर लंबी चुप्पी साध लेने की अदा से मेरा "सिर चढ़ गया। मैंने उन्हें "सिर से पैर तक देखते हुए" कहा, भाई जी किस बात ने आपको "सिर नीचा करने" पर मजबूर कर दिया, हमेशा "सिर ऊंचा करके, उठाकर" चलना चाहिए। बड़ी से बड़ी बात भी "सिर पर आ पड़े" तब भी "न तो सिर गरम होना चाहिए" न ही "सिर फटना चाहिए"। देश के विपक्षी नेताओं से कुछ सीखो जिनके सिर का बोझ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बने हुए हैं विपक्षियों के सिर से पैर तक आग लगी है लेकिन वे जानते हैं कि सिर पर पैर रख कर भागने, सिर पीटने, सिर धुनने, सिर फिरने, सिर भारी होने अथवा सिर पकड़ कर बैठने से समस्या हल नहीं होगी। समस्या के समाधान के लिए हमेशा सिर ठंडा रखना पड़ता है चाहे धीरज से रखो, चाहे गम खाकर या अमिताभ बच्चन के बताए ठंडे ठंडे कूल कूल तेल को लगाकर। अगर यह नहीं कर सकते तो उस चम्पी वाले को ढूंढो जो सड़कों पर गाता फिरता है, "सर जो तेरा चकराये या दिल डूबा जाए, आज प्यारे पास हमारे काहे घबराये, कहे घबराये.." वर्मा जी मेरी बात सिर हिला हिला कर सुन रहे थे। मैंने कहा, वर्मा जी "मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना"। उन्होंने सिर के कुछ बालों को नोंचते हुए मासूमियत से पूछा क्या मतलब भाई साहब ? वर्मा जी की बात सुनकर मेरा मन अपना सिर पत्थर से फोड़ने का हुआ लेकिन ईश्वर की कृपा से आसपास पत्थर नहीं था। मैने कहा भाई जी तात्पर्य यह की प्रत्येक सिर में भिन्न विचार होते हैं। विपक्षियों के सिरों में भी मोदी को हटाने भिन्न भिन्न विचार हैं। वे अपने अपने ढंग से मोदी को जनता के सिर से उतारने की कोशिश में लगे हैं। किसी ने भारत जोड़ो यात्रा करके देश भर में मोहब्बत की दुकानें खोल डाली हैं तो कोई विपक्षी एकता के लिए प्रदेश प्रदेश भटक रहा है। कोई अपने बयान रूपी बाणों से मोदी को घायल करने उतारू है। अब जब सब के सिर फिर गए हैं तो सब सिर जोड़कर बैठने उतावले हो रहे हैं। मेरी लंबी बात सुनकर वर्मा जी ने चुप्पी तोड़ी - बोले भाई साहब आपने इतनी सारी बातें कर दीं पर वह नहीं बताया जो मैं जानना चाहता हूं। मैंने कहा, वर्मा जी अब पानी सिर के ऊपर हो गया है आप बहुत देर से मेरे सामने बैठे भाई साहब, भाई साहब का राग अलाप कर न सिर्फ मेरा सिर खा रहे हैं बल्कि मेरे सिर को पचाने की जुर्रत भी कर रहे हैं या तो मुद्दे की बात पर आकर अपना और मेरा दोनों का सिर ठंडा करो या मेरा पीछा छोड़ो। वे बोले भाई साहब एक प्रश्न मुझे सुबह से परेशान करे है कि जब दुनिया में इतनी व्हेरायटी के तेल हैं तो छछूंदर अपने सिर में चमेली का तेल ही क्यों पसंद करती हैं ? इसी समय मेरी श्रीमती जी ने चाय के प्यालों के साथ कमरे में प्रवेश किया और मेरी ओर बढ़ीं। मैंने कहा पहले मुझे नहीं छछूंदर को दो। पत्नी ने आश्चर्य से प्रश्न किया छछूंदर कौन ? मैंने कहा मेरा मतलब वर्मा जी को दो। पत्नी जोर से हंसने लगी। वर्मा जी नाराज होकर खड़े हो गए पर

मुझे मालूम था कि वे नाराजी में भी चाय पिये बिना नहीं जायेंगे। मैंने कहा भाई जी सिर पर चढ़ गए क्रोध को थूक दो। मेरी जुबान याने टंग देश के युवा नेता राहुल की तरह फिसल गई थी ओर वह वर्मा जी की जगह छछूंदर कह गई।

श्री प्रतुल श्रीवास्तव, 473, टीचर्स कालोनी, दीक्षितपुरा, जबलपुर – पिन – 482002 मो. 9425153629

दीपावली की वह जानकारी जो आप नहीं जानते हैं - ज्योतिषाचार्य अनिल पाण्डेय

दीपावली की वह जानकारी जो आप नहीं जानते हैं| The Facts Which You Are Not Knowing About Dipawali

https://www.youtube.com/watch?v=OmMx7xRGd5k

ज्योतिषाचार्य पं अनिल कुमार पाण्डेय

(प्रश्न कुंडली विशेषज्ञ और वास्तु शास्त्री)

सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता, मध्यप्रदेश विद्युत् मंडल

संपर्क – साकेत धाम कॉलोनी, मकरोनिया, सागर- 470004 मध्यप्रदेश

मो – 8959594400 **ईमेल –** aasra.jyotish@gmail.com **यूट्यूब चैनल >>** **आसरा ज्योतिष**

कहानी - व्यथा - सुश्री उमा मिश्रा ‘प्रीति’

आशा आज सुबह से बहुत नाराज थी। मन ही मन भुनभुनाती जा रही थी। और वे अपना सारा गुस्सा अपने पति पर उतार रही थी जो बैठे थे सारे बर्तन फेंक रही थी। राजीव जी से देखा नहीं गया -

"छोड़ो भी भगवान, जब अपना ही सिक्का खोटा हो, तो परखनेवाले का क्या दोष। कितनी बार समझाया बहू को इतनी छूट मत दे आखिर है तो औरत जात। बाहर की हवा लग गई काम करने में घर का किसी का मन नहीं लगता, तो सिर पर बिठा कर रखा है तो वह नाचेगी ही लेकिन साहबजादे को कौन समझाए। हमें क्या करना है कहते हैं घर में रहना है तो रहो नहीं तो गांव चली जाओ। जब तक यहां रहना है अपना मुंह बंद रखो। "

बड़े सलीके से अपनी पत्नी को अपना ज्ञान परोसा।

पापा की बातें सुनकर उनके बेटे अमित ने उन्हें नाश्ता दिया और अपने ऑनलाइन काम में लग गया।

शाम को अपनी मां से कहा - "मां आज रूबी ऑफिस से आकर बिरयानी बनाएगी त्यौहार के लिए हमें गुजिया भी बनाना है।"

आशा ने कहा -"भाई अगर बहू को ऐतराज ना हो तो मैं सब्जी काट कर रख देती हूं"।

माँ-बेटे दोनों मुस्कुराने लगे।

आज बहुत देर हो गई है मां अभी तक रूबी ऑफिस से घर नहीं आई ना जाने क्या हुआ?

रूबी शाम को 7:00 बजे बाद दर्द से कराहती हुई घर पहुंची।

"क्या हुआ बेबी?"

"कुछ नहीं रास्ते में ना जाने क्या प्रॉब्लम हो गई मेरी स्कूटी रुक गई उससे किसी तरह लोगों की मदद से गैरेज में छोड़ा और ऑटो पकड़ने के लिए निकली तो एक कील मेरे पैर में चुभ गई।"

"यह तो काफी गहरा कट गया है डॉक्टर के पास चलना है और टिटनेस का इंजेक्शन लगवा लो।"

ऐसा राजीव ने कहा।

"मैडम जी को तो चोट लग गई है अब बिरयानी का क्या होगा?" आशा ने व्यंगात्मक हंसी के साथ कहा।

"मां तुम कैसी बात कर रही हो उससे जानबूझकर थोड़ी ना कि अपने पैर में घुसा ली। तुम गुजिया बना लेना बिरयानी मैं बना दूंगा। "

रूबी ने कहा- "आप लोग परेशान नहीं हो हम बाहर से गुजिया मठरी और बिरयानी आर्डर करके मंगवा लेते हैं। "

"बाहर का खाना ठीक नहीं रहेगा घर में ही खाना बन जाएगा।" आशा जी ने कहा।

"हां भाई अब बुढ़ापे में फिर से चूल्हा चौका संभालो वरना दिन भर के थके हारे बेटे को काम पर लगना पड़ेगा बड़बड़ाते आशा जी काम पर लग गई उन्हें अपनी बहू से ज्यादा अपने बेटे की चिंता थी। "

"मां तुमने इतना सारा काम अकेले क्यों कर लिया। मां आपने तो नमकीन मठरी और बिरयानी पूरा ही सब कुछ तैयार कर लिया। "

"हां बेटा अब रसोई साफ करनी है तुम सब खाना खा लो तो बर्तन भी धुल जाएंगे सविता ने चिढ़कर कहा।"

"बहुत दिनों बाद आपके हाथ का हाथों का स्वादिष्ट पकवान खाने का मौका मिलेगा, बहुत बढ़िया खुशबू आ रही है।"

अब तुम प्लेट या बर्तन धोने की चिंता मत करो मैं सब धो दूंगा और बर्तनों की घर में कोई कमी नहीं है हम दोनों एक ही प्लेट में खाना खाएंगे एक ही प्लेट में खाना खाने से प्यार बढ़ता है। मुस्कुराता हुआ अपने कमरे में चला जाता है।

तब राजीव जी अपनी पत्नी को देख कर हंसते हैं वरना बेटे का गुस्सा बाहर निकल जाएगा....... ।

सुश्री उमा मिश्रा प्रीति जबलपुर मध्य प्रदेश मो +91 70000 72079

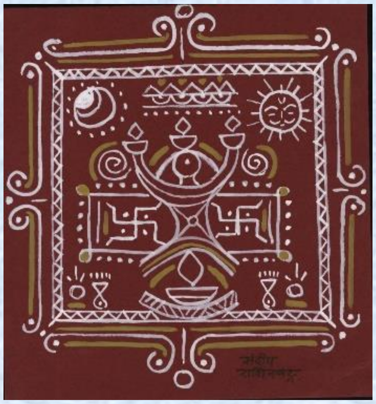

लेख - त्रिगुणी त्रिदेवी : स्त्री शक्ति का जगराता - डॉक्टर मीना श्रीवास्तव

नमस्कार पाठकगण

सावन-भादों-अश्विन के महीनों में त्योहारों की भावभीनी श्रृंखला हमारे मन को भावविभोर कर देती है| सावन में गौरीशंकर के पूजन, भादों में उमापार्वती की उपासना और अश्विन में माँ दुर्गा देवी, सरस्वती माँ, एवं लक्ष्मीदेवी की पूजा! हम भक्तिभाव से इन दिव्य देवियों के चरणों में लीन हो जाते हैं| यह सब हम इसलिए करते हैं क्योंकि हमें उनमें नारी के विभिन्न शक्ति रूप दृष्टिगत होते हैं|

त्रिदेवियोंकी प्रथम देवी- पार्वती

पार्वती, उमा, दुर्गा, अपर्णा, शैलजा, चंडिका, शिवप्रिया, शिवगामिनी, आप चाहें जिस किसी नाम का जाप करें, सर्वोपरि शक्ति, ममता, करुणा, प्रेम से भक्त गणों को अभिभूत करनेवाली कन्या, प्रियतमा एवं माता का मनोहारी रूप हमारे समक्ष प्रकट होता है| नवरात्रि तो भारत के हर कोने में मनाया जाने वाला देवी स्तुति में तल्लीन होने का परम भक्ति का पर्व है|

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।

शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।।

(**भावार्थ –** हे नारायणी, तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो, कल्याणदायिनी शिवा हो, सब पुरुषार्थों को सिद्ध करनेवाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली एवं गौरी हो। हे माँ दुर्गा आपके श्री चरणों में नमस्कार है।)

कवि कालिदास जी ने उनके महाकाव्य 'कुमारसंभवम्' में पार्वती माता के रूपसौंदर्य की अत्यंत रम्य व्याख्या की है| वे लिखते हैं, 'इस विश्व में जितने भी मनमोहक उपमान हो सकते हैं, उन्हें एकत्रित करके, उनकी योग्य प्रतिष्ठापना तथा संयोजन कर विधाता ने अत्यंत प्रयत्नपूर्वक और प्रेमपूर्वक माता पार्वती का निर्माण किया है| अखिल विश्व का सौंदर्य पार्वती माता में समाविष्ट है|' देवी पार्वती की वृद्धिंगत होती उम्र के साथ रुपसंपदा और वैचारिक दृष्टि कैसी प्रगल्भ होती जाती है, यह इस महाकाव्य के एक एक सर्ग की सीढ़ियाँ चढ़ते चढ़ते सहज ही ज्ञात होता है! बालिका, तपस्विनी, विनयवती, लज्जाशील प्रणयिनी, प्रगल्भ शिवमोहिनी और जगन्माता के विविध रूपों में स्त्री का जीवंत चित्रण ही इस काव्यकला का मौलिक एवं लुभावना दर्शन है! विविध अंगों से प्रकट हुई स्त्री भावनाओं का आविष्कार भी अत्यंत नयनमनोहर है| कहीं कहीं तो यह युगुल वास्तव में पृथ्वीतल के मानवजाति के प्रेमी और प्रेमिका प्रतीत होते हैं| मानवी

गृहस्थजीवन के जैसे ही यह चित्रण अत्यंत निकट का लगता है| यहीं कारण है कि, यह दिव्य दम्पति हमें और भी हृदयस्थ लगते हैं|

परन्तु एक बात तो सत्य है मित्रों, इस महाकाव्य में हो या अन्यत्र, जगन्माता पार्वती का रूप हर दृष्टिकोण से एक सम्पूर्ण नारी का परमोच्च आविष्कार है| उनके ५२ शक्तिपीठों का वर्णन देखें तो यहीं सिद्ध होता है, कि जब स्त्री रूप की कोई भी प्रतिमा आपके हृदय में अंकुरित होती है तो वह अंत में माता पार्वती में ही समाहित होती है| इसीलिए आदर्श पति की कामना हो या पुत्र की, या सर्वशक्ति को उजागर करने की, स्त्रियों की आराध्य देवता साक्षात् पार्वती ही है| कृपानिधान महादेवी के भक्तगणों में हर उम्र के स्त्री पुरुष को प्रेरणादायक शक्ति की अनुभूति होती है| मुझे तो देवों के देव महादेव और देवियों की देवी पार्वती उनके दो गुणनिधान पुत्र कार्तिकेय एवं गणेश के साथ एक फलते फूलते सम्पन्न परिवार का सुखमय चित्र लगते हैं| गृहस्थ जीवन को भरपूर जीने का प्रशस्त मार्ग दिखाने वाले इस वंदनीय परिवार का स्मरण करना यानि ईश्वर की खोज का समापन करना ही हुआ समझिये |

त्रिदेवियोंकी द्वितीय देवी- सरस्वती

माता सरस्वती को विद्या एवं वाणी की देवी कहा गया है एवं शारदा, वीणावादिनी, वागीश्वरी, बुद्धि धात्री, विदुषी, अक्षरा जैसे नामों से भी जाना जाता है। माँ सरस्वती के वीणा का नाम 'कच्छपि' है| उनकी पूजा मुख्य रूप से बसंत पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी) पर होती है, जो उनके प्राकट्य का दिवस भी माना जाता है। अश्विन पूर्णिमा अर्थात कोजागिरी पूर्णिमा के दिन भी माँ सरस्वती की पूजा की जाती है| इस दिन माता प्रश्न करती है, 'को जागृति', यानि कौन जागरण कर रहा है? जिस रात ‘चारु चंद्र की चंचल किरणें जल थल में खेलती रहती हैं’, उस अतिरमणीय वातावरण में जो जागरण करते हुए विद्या ग्रहण करने को उत्सुक होकर माता का पूजन करते हैं, ऐसे शिष्यगणों पर वेदविद्या की दात्री माता सरस्वती कृपा करती है|

उनके स्वरूप का वर्णन देखिये कितना लुभावना है: जो शुभ्र वस्त्र धारण किये हुए है, जिनके एक मुख, चार हाथ हैं, मुस्कान से उल्लास बिखरता है एवं दो हाथों में वीणा है जो भाव संचार एवं कलात्मकता की प्रतीक है। पुस्तक से ज्ञान और माला से ईशनिष्ठा-सात्विकता का बोध होता है। मां सरस्वती का वाहन राजहंस माना जाता है और इनके हाथों में वीणा, वेदग्रंथ और स्फटिकमाला होती है। माँ सरस्वती के वीणा का नाम 'कच्छपि' है| मान्यता यह है कि इस वीणा के गर्दन भाग में भगवान शिव, तार में माता पार्वती, पुल में माता लक्ष्मी, सिरे पर भगवान नारायण और बाकी हिस्से में माता शारदा का वास होता है| सरस्वतीवंदना का निम्नलिखित श्लोक अत्यधिक प्रचलित है| साहित्य, संगीत, कला की देवी की पूजा में इस वंदना को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाता है। कई स्कूलों और विद्यालयों में इसका पाठ प्रातःप्रार्थना के रूप में किया जाता है|

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता, या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।

या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता, सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥१॥

अर्थात्- इन शब्दों का अर्थ है कि जो विद्या की देवी भगवती सरस्वती कुन्द के फूल, चंद्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह धवल वर्ण की हैं और जो श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, जिनके हाथ में वीणा-दण्ड शोभायमान है, जिन्होंने श्वेत कमलों पर आसन ग्रहण किया है तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर आदि देवताओं द्वारा जो सदा पूजित हैं, वही संपूर्ण जड़ता और अज्ञान को दूर कर देने वाली मां सरस्वती हमारी रक्षा करें|

त्रिदेवियोंकी तृतीय देवी- महालक्ष्मी

समुद्रमंथन से जो १४ रत्न निकले उसमें एक माता महालक्ष्मी थीं| उन्होंने स्वयं ही महाविष्णु का वरण किया| उन्हें ऐश्वर्या, अरुणा, भार्गवी, श्री, विष्णुप्रिया, सिंधुसूता, नारायणी के नाम से भी जाना जाता है| लक्ष्मी जी के बारे में सबसे पहले उल्लेख ॠग्वेद के श्री सूक्त में मिलता है| लक्ष्मी जी के आठ अवतारों के बारे में जानकारी ब्रह्मवैवर्त पुराण में मिलती है| उन्हें अक्सर कमल के फूल पर बैठी या खड़ी दिखाया जाता है| जब लक्ष्मी अकेली होती हैं, तो वे महालक्ष्मी के नाम से जानी जाती हैं, जब वे भगवान विष्णु से जुड़ी होती हैं, तो उन्हें लक्ष्मी या श्री-देवी कहा जाता है| भगवन विष्णु के दशावतारों में भगवती लक्ष्मी ने रामप्रिया सीता और कृष्णप्रिया रुक्मिणी के रूप में पृथ्वीतल पर अवतार लिया| उन्हें धन, सम्पदा, शांति, सफलता और समृद्धि की देवी माना जाता है| निम्नलिखित श्लोक में उनका मनोहर स्वरूप के दर्शन होते हैं

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।

शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥

नमस्तेस्तु महा-माये श्री-पित्थे सुरा-पूजिते |

शांख-चक्र-गदा-हस्ते महालक्ष्मि नमोस्तुते ॥१॥

अर्थात्- हे महामाया (सृष्टि की आदि कारण) आपको श्रद्धापूर्वक नमस्कार; जो श्री पीठ (उनके पारलौकिक निवास) में निवास करती हैं और सुरों द्वारा पूजी जाती हैं, जो अपने हाथों में शंख, चक्र और गदा से सुशोभित हैं; हे देवी महालक्ष्मी, आपको श्रद्धापूर्वक नमस्कार।

अश्विन महीने की अमावस को माँ लक्ष्मी धरती पर पधारती है| दीपावली के त्योहार में उनकी गणेश सहित पूजा की जाती है। माँ लक्ष्मी का वास उन्हीं घरों में होता है, जहाँ साफ-सफाई रहती है।

इन त्रिदेवियोंकी विशेष कृपा दृष्टि हम पर तभी रहेगी जब हम सदैव महिलाओं का सम्मान करेंगे। 'मनुस्मृति ग्रन्थ' का यह प्रसिद्ध श्लोक अनगिनत बार दोहराया गया है|

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

अर्थात्- जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नही होती है, उनका सम्मान नही होता है, वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं।

हज़ारों वर्ष पहले हमारी वैदिक सभ्यता नारी के लिए आज से कई गुना अधिक सम्मानजनक सोच रखती थी। महिलाओं को कई अधिकार प्राप्त थे। महिलाएं वेद पढ़ती भी थीं और पढ़ाती भी थीं। कोई भी धार्मिक कार्य उनके बिना पूर्ण नहीं माना जाता था। वे युद्ध-कला तथा प्रशासनिक कार्यों में भी पारंगत थीं। परन्तु जैसे जैसे समाज प्रगत(?) और पुरुषप्रधान होता गया, वैसे वैसे स्त्रियों के बंधन अधिकाधिक वृद्धिंगत और दृढ हुए| स्त्री की प्रतिमा एका पारंपरिक भूमिका अर्थात "पति की छाया और बच्चों की जाया" में बंदिस्त हुई| आज के समाज से यहीं बिनती है कि पुरुष स्त्री को पैरों की दासी न समझें न ही मंदिर की देवी, सिर्फ यह समझे कि वह एक स्वतंत्र्य व्यक्तिमत्व वाली व्यक्ति है| स्त्रियों को भी अपने स्त्रीत्व को पहचानना होगा, इस चेतना के जागते ही अगली जीवनयात्रा आप ही आप आसान होगी| स्त्री ही घर, समाज तथा राष्ट्र का आधारस्तंभ है। महिला सशक्तिकरण का मतलब है महिलाओं की भौतिक आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, या आर्थिक शक्ति में बढ़ोतरी और उनमें आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाना। इससे महिलाएं अपने जीवन से जुड़े फ़ैसले खुद ले सकती हैं और समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त कर सकती हैं|

मित्रों महान कवयित्री महादेवी वर्मा ने उनकी एक प्रसिद्ध कविता "मैं नीर भरी दुख की बदली!" में १९२०-२५ की नारी की दुर्दशा को सटीक रूप में व्यक्त किया था| इस पार्श्वभूमी पर बेबाक लेखिका अमृता प्रीतम की एक इंटरव्यू के दौरान कही एक बात का मुझे स्मरण हो रहा है| उन्होंने कहा था, "स्त्री की शक्ति से इनकार करने वाला आदमी स्वयं की अवचेतना से इनकार करता है।"

डॉक्टर मीना श्रीवास्तव, ठाणे मोबाईल -९९२०१६७२११, ई मेल- drmeenashrivastava21@gmail. com

व्यंग्य - निमंत्रण के प्रकार - अखतर अली

एक जैसा निमंत्रण पत्र भी सब के लिये एक जैसा नही होता है। वह किसी के लिये निमंत्रण होता है और किसी के लिये पत्र। यह लेखक के अपने विचार है इससे संपादक की सहमति अनिवार्य नही है।

एक निमंत्रण पत्र वह होता है जो होता तो आप के लिये है लेकिन दिया किसी और को जाता है और उससे कहा जाता है अगर वो इधर आयें तो दे देना। न आप उधर जाते हो न वह इधर आता है और इधर उधर के चक्कर में निमंत्रण पत्र इधर उधर हो जाता है। इस प्रक्रिया में पूरी गलती आप की होती है क्योंकि आप उधर गये नही। अगर आप खाने पीने और पार्टी शार्टी के शौकीन हैं तो आप को थोड़े थोड़े दिन में वहां जाना चाहिये जहां निमंत्रण पत्र होने की संभावना हो। यह आपकी नैतिक ज़िम्मेदारी है कि जब भी किसी मित्र से मिलो तो पूछो – क्या मेरे लिये तुम्हारे पास कोई निमंत्रण पत्र है ? यह लेखक के अपने विचार है इससे संपादक की सहमति आवश्यक नही है।

एक निमंत्रण पत्र वह होता है जो देर रात कभी आपके दरवाज़े की दरार में से डाल दिया जाता है। जब आप सुबह अखबार लेने दरवाज़ा खोलते हैं तब वहां पड़ा निमंत्रण पत्र मिलता है जो अखबारी सूचना की तरह होता है। इसे विज्ञप्ति या वर्गीकृत विज्ञापन माना जा सकता है। गुप्त रोगी ध्यान दे वाली जानकारी की तरह इसे पढ़ा जाता है। यह मुंह पर मारा गया निमंत्रण पत्र होता है जिसका एक एक शब्द चीख़ चीख़ कर कहता है – ओ भुक्कड़ आदमी तुम्हे कार्ड तो दे रहे हैं लेकिन आ मत जाना। सीधे सीधे घर में रहो सुरक्षित रहो। यह लेखक के अपने विचार हैं इससे संपादक की सहमति अनिवार्य नही है।

एक निमंत्रण पत्र वह होता है जो बहुत ख़ूबसूरत और आकर्षक होता है। उसका कागज़, रंग, छपाई सब कुछ सुंदर होती है लेकिन उसमें असुंदर बात यह होती है कि उसमें आप का नाम नही लिखा होता। जब आप कहते हैं इसमें मेरा नाम तो लिखा ही नही है तो कहा जाता है – अजी छोडिये न नाम में क्या रखा है ? आप तो लेखक हैं क्या क्या तो लिखते रहते हैं आज कार्ड पर अपना शुभ नाम अपने पवित्र हाथ से लिख दीजिये। आप अपना नाम लिखने के लिये उनसे पेन मांगते हैं तो वह लगभग डांटने के लहजे में कहता है – क्या यार लेखक तुम हो और पेन मेरे से मांग रहे हो ? जब आप अपनी पेन से अपना नाम लिखते हैं तब बहुत पेन होता है। जब आप अपना नाम लिख लेते हैं तब वह कहता है आपकी राइटिंग तो बहुत अच्छी है मैं चंद नाम बताता हूं वो इस कार्ड पर लिख दीजिये। अब वह आठ दस कार्ड आपको देकर आपकी पत्नी से गपियाने लगता है। उस समय ऐसा लगता है उसे उसके ही कार्ड से दनादन मारो। यह लेखक के अपने विचार हैं इससे संपादक की सहमति अनिवार्य नही है।

एक निमंत्रण पत्र वह होता है जो आपको व्हाट्सअप पर प्राप्त होता है। इसमें निमंत्रण पत्र की फोटो के अतिरिक्त और कुछ नही लिखा होता है। अनजान नंबर से आया यह कार्ड आपको बहुत देर तक परेशान करता है फिर ध्यान से पढ़ने के बाद पता चलता है कि भेजने वाला कौन हैं। व्हाट्सअप पर निमंत्रण भेजने वाले का स्नेह संदिग्ध लगता है। यह

प्रेम का नही उपेक्षा का प्रतीक है। इस निमंत्रण पत्र की सब से चुभने वाली लाईन होती है – भेज रहे हैं स्नेह निमंत्रण प्रियवर तुम्हे बुलाने को – ओ मानस के राजहंस तुम भूल न जाना आने को। इससे अधिक उपेक्षा और अपमान उस समय महसूस होता है जब निमंत्रण पत्र ग्रुप में डाल दिया जाता है। सभी के लिये एक कार्ड। सोचता हूं यदि किसी संपादक को व्हाट्सअप पर निमंत्रण पत्र मिलेगा तो वह जवाब में लिखेगा – महोदय आपकी रचना मिली। खेद है हम इसका उपयोग नही कर पा रहे है, आशा है आप इसे अन्यथा नही लेगे एवं भविष्य में संपर्क बनाये रखेगे। अगर सही में कोई संपादक ऐसा लिखता है तो यह संपादक के अपने विचार है इससे लेखक की सहमति अनिवार्य नही है।

बिना नाम का निमंत्रण पत्र से ज़्यादा बुरा वह निमंत्रण पत्र होता है जिसमें आपका नाम गलत लिखा होता है। आदमी अपनी हरकतों से अपना नाम खराब करे तो चलेगा लेकिन कोई और उसका नाम ख़राब करे उसे यह गंवारा नही। गलत नाम लिखा कार्ड इतना चुभता है कि वो बच्चे भी प्यारे नही लगते है जो कार्ड के अंत में कहते हैं – मेले चाचू की शादी में जलूल जलूल आना।

निमंत्रण पत्र कहीं और दे देना, दरवाज़े की दरार में से डाल देना, नाम लिखे बिना दे देना, व्हाट्सअप पर भेज देना, गलत नाम लिख कर देना इससे भी अधिक तकलीफ़ देह बात तब होती है जब पूरे मोहल्ले में निमंत्रण पत्र बट रहे हो और आप के घर न आये। यह वह समय होता है जब आप भारी तनाव से गुज़र रहे होते है, इस समय आपका दिमाग़ भन्ना जाता है और आप लगभग मन ही मन बदतमीज़ हो जाते है और तब आपका भाषा पर नियंत्रण नही रहता। निमंत्रण पत्र का आना और न आना पुरस्कार और तिरस्कार का प्रतीक होता है। यह पल भर में अपेक्षित को उपेक्षित में बदल देता है। फिर जब निमंत्रण पत्र प्राप्त हो जाता है तब आप राहत की सांस लेते हैं और उस रात चैन की नींद आती है।

सब से सुखी वह तबका है जो निमंत्रण पत्र का मोहताज नही होता। उसे तो बस मालूम हो जाना चाहिये कहाँ मंडप बंधा है, कहां बाजा बज रहा है, कहां सजावट हुई है वह वहां निःसंकोच पहुच जाता है। जम कर खाता है और लिफ़ाफ़ा दिये बिना लौट आता है।

अंत में मैं कहना चाहता हूं कि जब कोई पुराना दोस्त, पड़ोसी या अन्य जान पहचान वाला व्यक्ति खुश होते हुए अपने बच्चे की शादी का निमंत्रण पत्र देने सम्मान पूर्वक आये तो गर्मजोशी से उसका स्वागत करिये और इस शुभ कार्य पर ख़ुशी ज़ाहिर कर उसकी ख़ुशी में शामिल हो कर रिश्ते और सामाजिक व्यवस्था को समृद्ध कीजिये। ये लेखक के अपने विचार है इससे पाठकों की सहमति अनिवार्य है।

श्री अखतर अली, निकट मेडी हेल्थ हास्पिटल, आमानाका, रायपुर (छत्तीसगढ़) 492010, मो. न. 9826126781

कहानी - शरीर बूढ़ा है दिल नहीं - सुश्री नरेंद्र कौर छाबड़ा

रोज की तरह जमुना देवी और अशोक जी शाम के वक्त बगीचे जाने के लिए निकले। पिछले वर्ष अशोक जी के कूल्हे की हड्डी टूट गई थी तो उसे रिप्लेस किया गया था इसलिए उन्हें चलते वक्त स्टिक की जरूरत महसूस होती थी जबकि जमुना देवी अभी अच्छी स्वस्थ थीं। 75 वर्षीय अशोक जी और 70 वर्षीया जमुना देवी अपने डॉक्टर बेटे बहु के साथ रहते थे। उनके पोता और पोती दोनों की शादी हो गई थी और वे दोनों ही विदेश में बस गए थे।

डॉक्टर बहू बेटे का अपना अस्पताल था और वे सारा दिन उसमें ही व्यस्त रहते थे। घर में रह जाते थे अशोक जी और जमुना देवी। कामवाली से सारा कार्य करवा कर वे अपने कार्यों में व्यस्त हो जाते। कभी साथ बैठकर टीवी देखते, कभी गपशप करते, कभी दोनों के बीच शतरंज की बाजी जम जाती और कभी ताश की। साथ ही जमुना देवी अपने घर के भी छोटे-मोटे कार्य करती रहती। कभी अपनी अलमारी की सफाई करने बैठ जाती, कभी पौधों में से सूखे पत्ते निकालकर सफाई करने लगती, कभी अपने कपड़े प्रेस करने लगती तो कभी पति की मनपसंद डिश बनाने लगती।

शाम के वक्त कॉलोनी में बने बगीचे की ओर दोनों निकल जाते। घंटाभर वहां कोने की सीट पर बैठते, बतियाते। वहां खेल रहे बच्चों के साथ भी बातें करते। जो बुजुर्ग दंपत्ति आते उनके साथ भी बातें करते। कईयों से उनकी दोस्ती हो गई। आज भी बगीचे में जाकर अपनी पसंदीदा कोने की सीट पर जाकर बैठ गए। साथ बनी क्यारी में बहुत सुंदर गुलाब के फूल खिले हुए थे। अशोक जी ने एक फूल तोड़ा और जमुना जी के बालों में लगाने लगे।

“यह क्या कर रहे हैं आप? कोई देखेगा तो क्या कहेगा बुढ़ापे में जवानी चढ़ रही है.. ”जमुना जी बनावटी क्रोध से बोली।

“बोलने दो, अपनी बीवी को फूल लगा रहे हैं किसी दूसरी को थोड़ी ना!” अशोक जी मुस्कराकर बोले।

“फिर भी, इस उम्र में यह सब ठीक नहीं लगता…”

“क्यों नहीं लगता? शरीर बूढ़ा हुआ है दिल नहीं। वह तो आज भी वैसे ही धड़क रहा है, तुम्हारे प्रेम को वैसे ही महसूस कर रहा है जैसे 50 साल पहले करता था। “ अशोक जी के कहते ही जमुना जी का चेहरा शर्म से लाल हो गया।

“देखो आज भी तुम्हारे चेहरे पर वही रंगत दिखाई देती है जो शादी के बाद होती थी। “

इतने में और दो-तीन बुजुर्ग दंपत्ति आ गए और उनके साथ बैठकर बतियाने लगे।

उस दिन बारिश हो रही थी और मौसम में ठंडक भी थी। अशोक जी पत्नी से बोले –“आज तो मौसम पकौड़े खाने का है। चलो मैं भी मदद करता हूं मिलकर पकौड़े बनाते हैं। “

जमुना जी मुस्कराई – “जिंदगी में कभी रसोई का काम किया है जो अब करोगे !”

“तुम करने ही नहीं देती, मैंने तो कभी मना नहीं किया। चलो अब कर लेते हैं, जब जागो तभी सवेरा। वैसे भी पहले मैं अपने कार्यों में व्यस्त रहने के कारण तुम्हें कभी मदद नहीं कर सका। और तुम बच्चों में लगी रहती थी। अब हम दोनो के पास वक्त है एक दूसरे के साथ बिताने के लिए, मदद करने के लिए, अपने शौक पूरे करने के लिए। चलो तुम बेसन घोलो मैं आलू, प्याज़ काट देता हूं। कोशिश तो करने दो... ”

चटनी के साथ वे दोनों पकौड़ों का आनंद उठा रहे थे। इतने में बेटा बहू आ गए।

“अरे वाह, मम्मीजी आज तो मेरा मन भी पकौड़े खाने का हो रहा था। आपने बड़ा अच्छा किया...” बहु चहकते हुए बोली।

जमुना जी सोच रही थी कहीं बहू यह न सोच रही हो बुढ़ापे में भी इनका ध्यान खाने में ही लगा रहता है। पता नहीं हमारे पीछे से क्या क्या बनाते, खाते रहते होंगे......

अशोक जी जमुना के मन की बात समझ गए। फौरन बहु से बोले—“ आज मौसम इतना अच्छा है कि मेरा मन पकौड़े खाने का किया और मैंने ही जमुना से पकोड़े बनाने के लिए कहा। कहीं तुम भी तो यह नहीं सोचने लगी कि इस बुढ़ापे में भी हमारी जीभ ललचाती रहती है?”

“पापा आप भी कैसी बातें करते हैं? बुढ़ापे में क्या खाना पीना छोड़ देंगे या खाने पीने की इच्छाएं खत्म कर देंगे? यह क्या बात हुई! जब तक जीवन है अपनी पसंद का खाना पीना, पहनना इस पर प्रतिबंध लगाने का क्या मतलब हुआ! यह तो आपका हक है। आपका घर है आप जो चाहे बनाएं खाएं, पूरा अधिकार है आपको। आगे से प्लीज ऐसा मत सोचिएगा...”

बहू की बात सुनकर पति पत्नी को बहुत संतुष्टि मिली। कितनी समझदार है वरना कई घरों में तो देखा है बुजुर्गों के खाने पीने पर भी पाबंदी लग जाती है या उनका उपहास उड़ाया जाता है कि मुंह में दांत नहीं, कब्र में पैर लटके हैं और खाने का लालच छूटता नहीं। इससे बुजुर्गों का मन दुखता है उन्हें तकलीफ होती है। उन्हें मन मारकर जीना पड़ता है। कितनी तकलीफ देह स्थिति होती है यह!

रात को सोते समय अशोक जी ने जमुना का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा –“हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे बेटा बहू हमारी भावनाओं की कद्र करते हैं। तुम वादा करो जिस तरह से अब तक हम जिंदादिली से रहते आए हैं वैसे ही जीवन के आखरी समय तक रहेंगे। हमें देखकर लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी कि बुढ़ापे में भी किस तरह खुशहाल रहा जा सकता है। “

जमुना जी ने अपना हाथ पति के हाथ के ऊपर रखकर वादा निभाने की स्वीकृति दे दी।

सुश्री नरेंद्र कौर छाबड़ा, ए – २०१, सिग्नेचर अपार्टमेंट, तंदूर होटल के पीछे, बंसीलाल नगर, औरंगाबाद -४३१००५ (महाराष्ट्र) मो -९३२५२६१०७९ Email- narender. chhabda@gmail.com

कविता - दोहे - दीपावली विषयक - प्रो रवि शर्मा 'मधुप'

धनतेरस भाई दूज, पाँच दिनी त्योहार|

सुख-समृद्धि दे आपको, खुशियाँ मिलें अपार||

प्रकाश पर्व फिर आ गया, जले दीप-से-दीप|

मन मोद ऐसे भरा, मानो मोती सीप||

छोटे-छोटे दीप भी, करें अंधेरा दूर|

देखन में छोटे भले, परहित से भरपूर||

जले दीप से जल सकें, दीपक बुझे हज़ार|

एक दीप न जला सके, दीपक बुझे हज़ार||

जलते दीपक-सा बनें, करें दूर अंधियार|

ज्ञान-प्रेम प्रकाश से, जगमग हो संसार||

दीपक जल कर दे रहा, अनुपम एक संदेश|

दूजों के हित मिट गया, जीवन वही विशेष||

स्वयं जलाकर देह को, दीपक देत प्रकाश|

जगत अंधेरा दूर हो, मन में रख विश्वास||

दिन में तो सूरज करे, सकल जगत उजियार|

रात अंधेरे पर करे, इक लघु दीप प्रहार||

भाई-बहन के प्रेम के, हैं प्रतीक त्योहार|

राखी-भाई दूज का, जग में है विस्तार||

माथे टीका शोभता, बहना का मन भाव|

हर्षित होते भाई भी, भरके मन में चाव||

प्रो रवि शर्मा 'मधुप', प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

निवास - सुर सदन, डब्ल्यू. ज़ैड. 1987, रानी बाग, दिल्ली-110034 ई मेल drrvshrma@gmail.com मोबाइल 09811036140

लेख - यदि परसाई जी नहीं होते तो क्या होता? - श्री केशरी प्रसाद पाण्डेय 'वृहद'

यदि श्री परसाई जी नहीं जन्मते और जन्म लेकर भी यदि कलम की नोंक पर हास्य और व्यंग्य को हास्य से पृथक नहीं करते तो शायद लोग नहीं जान पाते कि हँसना-हँसाना कुछ और है और गहरी अभिव्यक्ति से वाक्यों के हल्के थपोड़े लगाते-लगाते एकाएक शब्दों के तीर छाती पर झोंक देना कुछ और। लोग नहीं जान पाते कि हँसी तो पूर्व भी होती है और यथार्थ व्यंग्य की उत्पत्ति कब और किन परिस्थितियों में होती है। लोग यह भी नहीं जान पाते कि घोर दुखों में गुजारा हुआ जीवन यदि संकल्पित और निष्ठावान है तो उसी कलम से निकला हुआ एक-एक शब्द कालजयी हो जाता है।

लोग नहीं जान पाते कि समाज में अन्याय, पाखण्ड, छल, दो मुंहापन, असामंजस्य अवसरवाद मौका फरस्ती, हृदय हीनता और चटुपारिता जैसी गहन विसंगतियां है। लोग यह भी नहीं जान पाते कि जगने वाला हर जमाने में रोता है अनुभव तब बेकार हो जाता है जब उसे व्यवहार में न लाया जाये। शायद लोग यह भी नहीं जान पाते कि आदमी और कुत्ते में बुनियादी फर्क क्या है। परसाई जी ने कलम की नोंक पर आदमी और कुत्ते में बुनियादी फर्क को परिभाषित किया है।

तब लोग नहीं जान पाते कि यथार्थ में सफल व्यंग्य वह है जो चेतना को झकझोर कर रख देता है विषय वस्तु पर सोचने के लिए बाध्य कर देता है। व्यवस्था की विसंगतियों की ओर इंगित करता है और सुधारवादी परिवर्तन की ओर प्रेरित करता है। लोग नहीं जान पाते कि बाबू और साहब में कितना बड़ा अंतर होता है। बाबू से कब और कैसी गलती हो जाती है साहब से पूछने की हिम्मत नहीं होती और साहब के पास समय नहीं होता कि समझे कि उससे किस बात की माफी मांगी जा रही है और लोग यह भी नहीं जान पाते कि कोई भी लेखक अराजनैतिक नहीं हो सकता है। राजनीति मनुष्य की नियति तय करती है जो विचारधारा को जन्म देती है परसाई जी के शब्दों में "जो यह कहते हैं कि लेखक को राजनीति से क्या लेना देना वे खुद बड़ी गंदी राजनीति के शिकार हैं।

तब शायद लोगों को यह भी पता नहीं हो पाता कि यदि धर्म धन्धे से जुड़ जाये और संयोग बन जाये तो वह शुभ संकेत होता है और प्रभु से पूछकर सबको हासिल किया जा सकता है। देवता लोग सोम रस का पान करते थे आधुनिक युग में वही सोम रस का नाम शराब है मदिरा उसका अपभ्रंश है। लोग नहीं जान पाते कि प्रकृति और पुरुष का संयोग पाप नहीं होता।

लोग नहीं जान पाते कि देश की दुर्दशा को जानने, सुनने के लिए लोग अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर भाषण के लिये आते है जब देष की दुर्दशा अत्याधिक मार्मिक हो जाती है तो लोग तालियाँ बजाना चालू कर देते हैं। देश की दुर्दशा का स्वाद तली मछली और सलाद के साथ और अधिक बढ़ जाता है। और भाषण की एक परम्परा होती है। परसाई जी कलम नहीं उठाते तो यह पता नहीं चल पाता कि प्रत्येक मनुष्य का

उसका देश अलग-अलग होता है जो हर किसी नक्शे में नहीं मिलता है। सबसे अधिक भ्रष्टाचार करने को वालों को बाइज्जत नौकरी से अलग कर देने की सुसंस्कृति को कम्पलसरी रिटायर्डमेंट कहते है और तब वह राष्ट्रीय हो जाता है।

लोग नहीं जान पाते कि प्रकृति के नियम बदल गये हैं। वर्षा की विश्वसनीयता के संकेत सब के सब खत्म हो गये हैं। भूकंप कही भी आ सकता है। लोग नहीं जान पाते कि भेड़िया आया, भेड़िया आया, कहते-कहते एक दिन भेड़िया आ ही जाता है। बचाव के लिए केवल तटस्थता ही पर्याप्त नहीं होती दृष्टि की खिड़की को बंद करना पड़ता है।

तब लोग यह भी नहीं जान पाते कि अनायास घर आये हुये गेंहू का सुख कितना बड़ा होता है और वह उस समय जब घर में जगह कम हो और चूहे अधिक हो और घर में छह-सात बोरा गेंहू आ जाये। लाने वाले का पुरुषार्थ खिल जाता है और पाने वाला कृतज्ञता से दब जाता है। चूहे का मरना या मार डालना राष्ट्रीय कृत्य होता है। चूहा राष्ट्रीय खाद्यान्न सामग्री नष्ट करता है। चूहे की धर पकड़ करने वाला वीर पुरुष पुरस्कृत होना चाहिए।

लोग नहीं जान पाते कि ‘‘कपड़ों की कमी से वात्सल्य का उद्दीपन होता है’’। यह रस के आचार्यों को भी मालूम न होगा किन्तु परसाई जी कैसे भली-भांति जानते थे। स्कूल मास्टर नमक मिश्रित कोयले से दाँत साफ कर लेते है और दाल-भात जला खाते हैं क्योंकि वह जल्दी पच जाता है। कोट आदमी और कमीज दोनों की इज्जत बताता है। स्कूल मास्टर जब भी करता है तीन काम एक साथ करता है। हर साल बढ़े हुये वेतन की मिठाई घर ले जाता है और हमेशा कहते रहते हैं कि ‘समरथ को नहीं दोष गोसाई। ’ उनका 12 महीने एक ही मौसम चलता है।

लोग यह भी नहीं जान पाते कि साहित्य के नवरस के अतिरिक्त एक और ‘निंदा रस’ भी होता है और जब छल का धृतराष्ट्र अलिगंन करें तो पुतला ही आगे बढ़ाना चाहिये’’। संसार में निर्दोष, मिथ्यावादी बहुत हैं जिनके पास अपना कुछ नहीं होता उनके पास दूसरों के दोषों का केटलाग होता है। भेद रात के अंधेरे में ही मिटता है। दिन के उजाले में भेद अस्पष्ट हो जाया करते हैं। निंदा रस महिमा मंडित होता है। इसीलिये निंदक को पड़ोस में ही बसाकर रखना चाहिये। आड़े वक्त काम करता है। जो निंदा कार्य को पवित्र भाव से करते है वो प्रसंगवष अपने बाप की पगड़ी भी उछाल देते हैं। निंदकों को निंदा करना टॉनिक का काम करती है, निंदा का उद्गार हीनता और कमजोरी होती है।

संभवतः लोग यह नहीं जान पाते कि मनुष्य में ज्यों-ज्यों कर्म करने की क्षमता क्षीण होती जाती है, त्यों-त्यों निंदा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। निंदा बहुत रसयुक्त होती है।

लोग यह नहीं जान पाते कि "अपात्रों-कुपात्रों को खिलाने और दान देने के पाप से पुरखों की सद्गति तो नहीं, दुर्गति जरूर होती है। निःसंतान के घर उमर चढ़े पुत्र हो जाये पर प्रसव में पत्नी मर जाये तो उसे अपनी सत्ता का एक भाग खाली लगता है। संचय के बिना जीवन जी लेना असंभव होता है। " धर्म की नजर अक्सर विसंगति की ओर जाती है। जो पानी छानकर पीते है वे आदमी का खून बिना छना पी जाते हैं। " "न्याय अंधा नहीं काना होता है जो एक तरफ ही देख पाता है "। जिन्हें डर से पसीना आता है वह श्रम के पसीने से बहुत डरते हैं। और नहीं जान पाते कि मनुष्य जीवन पर एक अदना तीन बोरा गेंहू कितना बड़ा परिवर्तन ला सकता है। लोगों को यह जानना संभव नहीं हो पाता कि "उच्च वर्गीय लोगों का पेन्ट जब छोटा होता है तो वह उसे आगे के लिये छोड़ देता है पर मध्यम वर्गीय का कुछ आगे के लिए नहीं होता। शरीर जब तक दूसरे पर लदा रहता है मोटा होता रहता है इसी लिये बड़ा साहब जूनियर पर लदा रहता है। चतुर लोग दूसरे की गोद में बैठकर अपने को तुलवाते हैं। जब भुखमरी का समय आता है तो मनुष्य में अंतर्राष्ट्रीय चेतना जागती है और अकाल पड़ने पर विश्व मानवता की धारणा भी। " जो व्यक्ति 10-20 के पेट काट सके उसका पेट बड़ा हो सकता है। देह की सेवा हीन सेवा मानी गई है। चन्दा खाने से शरीर मोटा हो जाता है। रोटी खाने से कोई मोटा नहीं होता। बेईमानी के पैसे में ही अब पौष्टिक तत्व रह गये हैं इसलिये ईमानदार को अब मोटा होने में डर लगने लगा है। अतः ईमानदार स्वस्थ नहीं रह पाते। यह बात विश्वसनीय नहीं रही कि कोई मेहनत से ईमान का पैसा कमाकर भी मोटा हो सकता है।

लागों को यह पता ही नहीं चल पाता कि रोटी बड़े-बड़े आदमियों को कमजोर बनाती है। घूरने से शरीर बढ़ता है तभी तो 10-12 साल की बच्ची को घूर-घूर कर जवान बना दिया जाता है। आँखे अपराधी होती हैं। दाढ़ी भी कई प्रकार की होती है (प्रेमी की अलग, मुल्ला की अलग और मुफलिस की अलग) प्रेम का रास्ता काँटों का रास्ता होता है। इस सनातन मार्ग पर सड़क बनने का कोई प्रावधान नहीं होता। ताजिदंगी काँटों भरी पगडंडी पर चलना पड़ता है। प्रेमानुभूति प्रसार माँगती है और प्रेमी आविष्कारक होता है। पत्नी व्रत से पति व्रत बड़ा होता है परन्तु बाबा तुलसी ने उत्तम नारी के लिये कहा है कि

"उत्तम कर अस बस मन माही।

सपने आन पुरुष जग नाही। । "

इस चौपाई का अर्थ परसाई जी ने कुछ इस अंदाज से समाज के सम्मुख रख दिया "उत्तम स्त्री वह है जिसके लिये सपनों में भी कोई पुरुष पराया नहीं है। " सब अपने ही हैं। परसाई जी ने लोगों को बताया कि प्राण की कोई कीमत नहीं होती क्योंकि वह बाजार में बिक नहीं सकता। आटा फिर भी सस्ते से सस्ता भी दो-ढाई रुपये में एक किलो मिलता है।

लोगों ने जाना कि विधायक-भार्या और मंत्री प्रिया बड़ी निष्ठा और भक्ति के साथ आराधना करती है। अकाल उत्सव के अवसर पर हर आदमी का अपना अलग-अलग अकाल होता है। अकाल उत्सव का उद्घाटन मंत्री द्वारा ही किया जाता है। अकाल भारत की पुरानी परम्परा है। इससे देशवासियों को घबराना नहीं चाहिए। राम के राज्य में भी अकाल पड़ा था। अकाल ही रामराज्य का आधार होता है। अकाल के बिना रामराज्य नहीं आ सकता। अशोक वाटिका में त्रिजटा सीता जी को धीरज बंधाती है उसे बहुत आगे का दिखाई देता है वो कहती है जो आगे होने वाला है।

यह सपना मैं कहहुँ बिचारी।

हुइ है इन्हें सत्य गये दिन चारी।।

लोगों ने जाना कि तन के ताप के आगे मन की आग शरमा जाती है। ये प्रेमी और कवि नामक जीव जंतुओं ने मिल-जुलकर बड़े-बड़े झूठे गढ़ दिये है। संजय ने दिव्य दृष्टि से (आज का टेलीविजन) में देखकर महाभारत की रनिंग कमेन्ट्री सुनाई थी और दधीचि ने इनको जो वज्र दिया था वह वास्तव में अति दूर तक मार करने वाला एटम बम था। लोगों ने जाना कि कवि कविता लिखने के लिये व्यर्थ भय की अनुभूति नहीं बुलाता और जब वास्तविकता का भयाक्रांत दृश्य सामने आता है तब कविता नहीं लिखी जाती, जान बचाई जाती है।

लोगों ने यह भी जाना कि मकान दो तरह के होते हैं। रहने के लिए और किराये पर देने के लिये और एक प्रकार के मकान में दूसरे प्रकार का काम नहीं किया जाता। रहने का मकान किराये पर नहीं दिया जा सकता और किराये के मकान में रहा नहीं जा सकता। व्यवसायिक आधार पर लोगों ने दीवार और मनुष्य का वास्तविक मूल्य जाना है यह भी जान गये।

फिर लोगों ने यह भी जाना कि लोग तुकें बराबर करने के चक्कर में अर्थ का अनर्थ कर डालते हैं ऐसा करने से तुक तो बराबर बैठ ही जाती है पर जीवन का आवेग निकल भागता है और फिर तुकें हमारा पीछा नहीं छोड़ती। बसंत का नाम तुषारपात या पतझड़ दास होना चाहिए और बसंत लाल उधारी वसूलने वाले एक नौकर का नाम होना चाहिए। यह कैसी विसंगति है प्रकृति और पुरुष के साथ काला कौआ भी बिरहनी को प्रीतम का संदेश देने वाला माना जाता है। स्वर्ण नियंत्रण कानून से सबसे ज्यादा नुकसान कौआ और बिरहनियों को हुआ है। कौआ मुर्गों से घृणित है जब से सीता के पैरों पर चोंच मारी   थी। बड़े आदमी के बिगड़ैल बेटे हमेशा दूसरों का प्रेम बिगाड़ते हैं और जिसकी जितनी मुश्किल से शादी होती है वह उतनी ही मोटी मांग भरती है।

लोगों ने जाना कि मरण को त्यौहार जानने वाले ही मृत्यु से सबसे अधिक भयभीत होते हैं। वे त्यौहार का हल्ला करके अपने हृदय के सत्य भय को दबाते हैं। सौन्दर्य का सामना करना कोई खेल नहीं है। विरागी

का साहस भी उनके सामने लड़खड़ा जाता है। रईसजादे सफेद बाल उखाड़ने के लिये नौकर रखते हैं कुछ लोग शनिवार को बूढ़े लगते है और सोमवार को जवान। बाल कभी हृदय से नहीं रुकता, यौवन सिर्फ काले बालों का नाम नहीं। यौवन नवीन भावों, नवीन विचार ग्रहण करने की तत्परता का नाम है। यौवन लीक से बच निकलने का नाम है। यह दुनिया को परसाई जी ने बताया है जब लोगों ने जाना कि पहले सफेद बाल का दिखना एक पर्व है।

राजा दशरथ को कान के पास सफेद बाल दिखे तो उन्होंने श्री राम को राजपाठ सौंपने का निश्चय किया। बड़े आदमियों के दो तरह के पुत्र होते हैं। "वे जो वास्तव में हैं पर कहलाते नहीं और वे जो कहलाते है पर हैं नहीं"। जो कहलाते हैं धन संपत्ति के मालिक बनते हैं और जो वास्तव में हैं वे कहीं बर्तन मलते हैं अतः होने से कहलाना ज्यादा लाभदायक और महत्वपूर्ण है।

श्री परसाई जी के माध्यम से लोगों ने यह जाना कि आदमी रोज मर रहा है और फिर मजबूरी में रोज जिंदा हो जाता है। इस देष में उपदेश देने वाले बहुत हैं पर समझाने वाले बहुत कम। राम गरीब सेठ समाजवाद का अर्थ नहीं समझता, पटरी पर रहने वाले रोज मरने को होते हैं पर मौत को जीत लेते हैं। ये जीने की इच्छा को खाकर जीते हैं। इसी मंे से प्रोटीन निकाल लेते हैं और इसी में से विटामिन भी। जो एक अप्रैल को पैदा होता है वह अपना जन्मदिन नहीं मनाता। अभिनंदन करना एक धंधा होता है, चंदा जमा होता है, मनमाना खाया जाता है। कहते है कि अभिनंदन की शुभकामनाओं से उम्र लंबी होती है।

परसाई जी ने बताया कमीशन हर धंधे की नैतिक कमाई है और गांधी मार्ग बड़ा विराट मार्ग है। राजनीति को विज्ञान कहने वाले उचित नहीं कर रहे हैं। वे अपने आपको धोखा दे रहे हैं।

श्री परसाई जी के माध्यम से लोगों ने यह भी जाना कि किसी विभाग का बड़ा साहब 'स्टीम रोलर' होता है जो डिपार्टमेंट के बड़े-छोटे का भाव मिटा देता है सब समान हो जाता है क्योंकि सब डरे हुये होते हैं। कहते है डर भेद को मिटाता है और प्रेम पैदा करता है। डूबने से बचने के लिये साहब चपरासी के पैर इस तरह पकड़ता है जैसे वह भगवान के हों।

लोगों ने यह भी जाना कि कमरे में एकांत में बैठकर दारू पीेने से रस का स्थाई भाव बनता है। मातहतों की पत्नियों को बड़े साहब की पत्नी के पास जाना चाहिए। छोटे आदमी की नाक बहुत नाजुक होती है। बड़े लोगों की नाक स्टील की होती है। कमबख्त कटती ही नहीं और होशियार लोग नाक को तलबे के नीचे रख देते हैं। कितना भी ढूंढ़ो निकलती ही नहीं। जो बिना नाक के ही सांस लेते हैं ऐसे लोगों के लिये नाक दो छेदों का एक यंत्र होता है जो सांस लेने के काम आता है।

परसाई जी ने इस समाज को बताया है कि कुछ लोग की नाक गुलाब के पौधे के समान होती है जिनको छांट देने से अधिक अच्छे गुलाब के फूल निकलते हैं। ऐसे गुलाबधारी नाकों की जब खुशबू कम होने लगती

है ये फिर कलम कटा लेते हैं। भारत वासी इतना भुखमरा है कि जूते भी खा जाता है। बिगड़ा रईस और बिगड़ा घोड़ा एक ही जैसे होते हैं और इन दोनों से ही दूर रहना चाहिए। लड़के शादी के बाजार में मवेशी की तरह दिखते हैं। प्रेमी के साथ भागने वाली लड़की मैट्रिक का सर्टिफिकेट साथ लिये रहती है जिसमें जन्म तारीख का हवाला होता है। अदालत और वकील के सामने बड़े-बड़े बलशाली कंेचुए हो जाते हैं। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का विसर्जन संगम में किया जा सकता है। संस्कार और परिवार की भावना के बीच बडा संघर्ष करना पड़ता है। संस्कार और अर्थशास्त्र की लड़ाई बड़ी दिलचस्प होती है। दुविधाग्रस्त अर्ध आधुनिक परिवारों में इसके बाद क्या होता है परसाई जी को भली-भांति मालूम है।

परसाई जी के माध्यम से लोगों ने जाना कि सांकल धातुयुग से चली आई 'काल बेल' है। नेपथ्य में सांकल बजाना संस्कारों की प्रथम पाठशाला है। कभी-कभी अर्थशास्त्र संस्कारों को धोबी पछाड़ मार देता है। नारी मुक्ति के इतिहास में यह वाक्य अमर होना चाहिए कि "एक ही कमाई से पूरा नहीं पड़ता। अर्थशास्त्र संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला दबा रहा है। ज्ञानी कायर होते हैं। अविद्या साहस की जननी है और आत्मविश्वास कई तरह का होता है धन का, बल का और ज्ञान का परंतु मूर्खता का आत्मविश्वास सर्वोपरि होता है। "

लोगों ने यह भी जाना कि अच्छी लड़कियां जानवर की बोली बोलने वाले युवक से ही प्रेम करती हैं। भविष्य बनाने के लिये वर्तमान को बिगाड़ना पड़ता है। जिस दिन इस देश में बुनियादी परिवर्तन होगा उस दिन स्वयंभू सबके सब मिट जायेंगे। सत्य को यदि दांतों से पकड़ा जाये तो वह बड़े काम का होता है। इस सत्य से बड़ा कुछ भी नहीं। चरित्रवान बनने की एक उम्र होती है। ढलती उम्र में ईमानदार बनना बड़ा कष्टदायी होता है। इसे कच्ची उम्र के लोग नहीं समझ सकते। जो परीक्षा पास न करें और उसे सम्मानपूर्वक डिग्री मिल जाये ऐसी परम्परा को स्वस्थ परम्परा के नाम से जाना जाता है।

और फिर इसी तरह हृदय के भीतर व्यक्त हो रहे तमाम यथार्थ को बेनकाब कर देने की व्याकुलता ही उनके लेखन का केन्द्रीय तत्व बना रहा। परसाई जी की इसी खोज और प्रयास ने समाज के प्रत्येक वर्ग की धर पकड़ कर पाखण्ड और विसंगतियों का पर्दाफाश किया है और वह भी संपूर्ण व्यंगात्मक सामर्थ्य के साथ।

श्री केशरी प्रसाद पाण्डेय 'वृहद', 527/25ए, सृजन कुटी, अर्पण नगर, न्यू जगदम्बा कालोनी, जबलपुर (म.प्र.) मो. 94247 46534

कविता - मन की पाती - अयाज़ ख़ान

दीपक जैसी काया तेरी

पारस जैसी माया तेरी।

मेरा आँगन सूना-सूना

पागल ये मन सूना-सूना।

दीपक बनके आँखें जलती

तृष्णा बैरी साँसें छलती।

पीड़ा की नागिन डसती है

दीपों की माला बुझती है।

शबरी के राघव आएँगे

सीताजी को भी लाएँगे।

फूलों से मैं रस्ता साजूँ

मन की पाती किसको बाचूँ।

दीपक के जैसा मैं जलता हूँ

राघव राघव ही करता हूँ।

जीता हूँ ना मैं मरता हूँ

राघव राघव मैं करता हूँ।

श्री अयाज़ ख़ान, वार्ड क्रमांक 11, सग्गम, जुन्नारदेव 480 551 ज़िला छिन्दवाड़ा (म. प्र.) 9098909158

हास्य-व्यंग्य - गांधी जी के तीन बंदर: आधुनिक संदर्भ? - श्री दिनेश गंगराड़े

सदियों से बापू के तीन बंदर शिक्षा देते आये है कि बुरा मत सुनो, बुरा मत कहो, बुरा मत देखो। आज के नए संदर्भ में जबकि बापू ही अप्रासंगिक होते जा रहे है। उनके तीनो बंदरों ने अपना नया रूप धारण कर लिया है। आंखों पर हाथ रखे बंदर जिसे आम जनता अंधा बंदर के नाम से जानती है उसने कानून का रूप धारण कर लिया है। इसलिए ही देश में कानून अंधा, दृष्टिहीन है। जो कुछ भी नहीं देखता है और निर्दोषों को सजा दे देता है। कभी-कभी दोषी अपराधी भी दोष रहित होकर छूट जाता है। माहौल ये है कि आज करे कौन, भरे कौन और भुगते कोई और। अब कानून आंख पर पट्टी बांध कर वर्षों से अपना जस्टिस सुना रहा है। कानून के प्रति विश्वास कम, त्राही-त्राही अधिक है। फैसलें लंबे अरसे बाद जनता को नसीब हो रहे है फिर भी जनता सालों से भुगत रही है?कानों पर हाथ धरे बहरा बंदर, आजकल चुनी हुई सरकार बन गई हैं। वह सरकार जो लोगों के दुखदर्द न तो देखने को तैयार है न ही सुनने को?करोड़ों समस्याएं हैं, लाखों लोग हैं जो चीख-चीख कर मुद्दे उठा रहे हैं, बता रहे हैं लेकिन बहरी सरकारें कुछ भी सुनने को तैयार नहीं है। बापू का ये मंकी भी कान में उंगली डाल कर गुनमंथान बैठा है। जनता की गतिविधियों को नजरअंदाज कर टुकुर-टुकुर अवलोकन कर रहा है। मुंह पर हाथ धरने वाला तीसरा गूंगा बंदर, जनता बन गया है जो देखता सब है, ऊलजलूल हरकतें करता है लेकिन न तो माई बाप गोवरमेंट सुनती है न ही बापू का प्रथम बंदर रूपी कानून व्यवस्था?जनता बिना नात मोरे के नांदिया टाइप दिशाहीन होकर किंकर्तव्यविमूढ़ सी बैठी है। तीनों बंदर भी अपनी दुर्दशा देखकर बहुत दुखी है। बंदरो का दुख बापू से देखा नही देखा जा रहा है। इस दुर्दशा के दरमियान एक दिन बापू की रूह गांधीवादी नेताओं के कारनामे देखने उनके प्रिय देश भारत आ गए। माईबाप बड़ी सरकार (केंद्र) राष्ट्रपिता बापू की 150वीं जयंती का कार्यक्रम बड़े धूमधाम से150 दिनों तक मनाने जा रही है, सुना तो बापू की आँखे चमक उठी, चलो मेरे देशवासियो व नेतागणों को ड़ेढ़ सौ वर्ष बाद भी मै स्मरण में हूँ। सोचा देश के 72 वर्ष की आज़ादी के बाद मुल्क में क्या-क्या तब्दीलियां हुई इसका जायज लेना चाहिए, सो उनकी आत्मा ख़ुशी-ख़ुशी सुविधा से पैदल ही भारतवर्ष पधारी, कोरोना का क्रंदन व लॉक डाउन का माज़रा देखा तो सन्न थे। उनकी समर्थित खादी उर्फ़ खद्दर के हाल, बेहाल थे। खादी बदहाली से गुज़र रही थी व विलुप्त प्राय सी थी उसके तार-तार बिखर रहे थे इसे प्राणदान मिलना बेहद ज़रूरी था पर देश के आला नेताओ ने खद्दर का टेटवां दबा दिया था। खद्दरधारी, खादीछाप नेताओं को देशवासी संशय से देखने लगे थे इन्होंने बापू की खादी का नाम डूबा रखा था। खादी शंकास्पद हो गई थी, कई खद्दरी नेता जेल काट रहे थे। इनके कारनामों से खादी सिसक रही थी, वह मृतप्राय हो गई थीऔर उसके धारक मृतक? जनमानस में खद्दर हिक़ारत से देखी जाने लगी थी?वह फैशनेबुल "आयटम"बन गई थी। आगे बढ़े तो बापू का चरखा कही नही दिखा?खोजखबर पर ज्ञात हुआ कि उसके तिनके बिखर गए है। चक्र के परखच्चे उड़े पाएं गए, पटिया यूँ ही उलाल था, उसकी लकड़ी से नेता टाइप लोगो ने "बेट" बना लिए थे जो गेंद व अन्यो की कुटाई में सहायक सिध्द हो रहा था। न रहा चरखा न रहा सूत तो कताई कैसी? अब ये चरखा राजनैतिक झंडो में, सरकारी स्टाम्पों में, करंसी नोटों, गणेश-दुर्गा विसर्जन झाकियों में कायम होकर दिखता है। बापूयुग में चरखा घर-घर चलता था अब वाट्सएप चलता है, चरखे की

दुर्दशा पर बापू की रूह को करारी ठेस लगी। एक नरक पालिक बगीचे में खुद का स्टेच्यू देखा तो सन्न रह गए चश्मा ही नदारद था। सोचा किसी गांधी विरोधी चोर ने ही चुराया होगा? पहली बार बापू ने खुद को बगैर चश्मे के देखा तो उन्हें लगा वें कैसे लग रहे है?जैसे बगैर अहिंसा के, या बिनाबटन के शर्ट जैसे? पता चला कि उनका चश्मा दृष्टिदोष बढ़ने से लोगो की आँखों पर चढ़ गया है। अचानक उन्हें अपनी लाठी स्मरण हो आई देखा कि बुढ़ापे का सहारा लाठी (पुत्र) अपने बापूओ को वृध्दाश्रम छोड़कर गुलछर्रे उडा रहे है। लाठी भी चश्मे की तरह ही चोरी हो गई है और बुज़ुर्ग बेसहारा?संताने उनके ज़माने में सहारा (लाठी) हुआ करती थी अब खुद बेसहारा, दिशाहीन, बेकार, आवारा, अशिष्ट दिखे?बुढ़ापे की लाठी टूटी पाई गई। धोती का भी यही हाल था वो चोरी होने से लोगो ने टाट लपेट दिया था। खद्दर जो गायब था? नई पीढ़ी फ़टी जीन्स-शर्ट में थी जबकि बापू ने देश की गरीबी पर धोती धारी थी?अलबत्ता धोतियाँ गांव-खेड़ों में ज़रूर "बापू ब्रांड"बुजुर्गों के पास दिखी। कपास के घटते उत्पादन से रुई की पौनियां भी "गधे के सिर से सींग"की तरह लुप्त दिखी उसकी एवज में घरे-घर मोबाईलों की भरमार थी। उनके तीनो 'आईडल मंकी'भी भारी वृक्ष कटाई से दुखी हो अपने मूल सिद्धानतो से भटक कर बचे-खुचे वृक्षो को नष्ट कर रहे थे। इनकी हरकतें, बन्दर तत्व मानवों में पाया जाने लगा था?जिन गायों का बापू दूध पीते थे वे अब घास की जगह पालीथीन निगलने लगी थी। किसम-किसम की हरी पत्तीखाने वाली उनकी बकरी को 'टाइगर स्टेट'बनने से वे उनका निवाला बन गई थी, फलस्वरूप शुध्द बकरी दूध दुर्लभ था। चलते-चलते बापू को उनका बड़ा फोटो दिखा और वे उस हाल में घुस गए देखा कि चन्द दुर्लभ खादीधारी नेता"सादा जीवन, उच्च विचार"के उनके सिद्धान्त को उलट कर उच्च जीवन(लाईफ), दोयम सादे विचार पर चल रहे है। बार-बार बातों में लोग-बाग"मज़बूरी"के साथ उनका नाम जोड़ रहे है?उन्हें बेहद क्षोभ हुआ। गाल पर चांटा मारने पर दूसरा गाल प्रस्तुत करने की बजाय लोग गाल-गर्दन काटने को आमादा है। गांधीगिरी अब सिर्फ चन्द राज्यो-फिल्मो में ही दिखाने को बची है। अलबत्ता बापू के नाम से वोट कबाड़ने का गोरख धंधा गत73वर्षो से जारी है। कार्यकर्ताओ के जूतम पैजार में एकाध जगह बापू का फोटो भी फटा व तिरछा टँगा दिखा?चन्द राज्यो में ही नशाबन्दी दिखी किंतु खपत दुगनी दिखी, पर अधिकांश ठेके, अहाते, दारू दुकानों पर बापू का मुस्कुराता फोटो नज़र आया?दफ्तरों में बड़े बापू के फोटो के सामने ही भ्रष्टाचार दहाड़ मारता, अव्यवस्था अट्टाहास् करती दिखी। बापू के जन्मस्थल(गुजरात)में ज़्यादा शराब बिकती दिखी। नशाबन्दी की तरह देश भर में घुंसखोरी, सूदखोरी, नशाखोरी, सट्टाखोरी, जूंआखोरी, हरामखोरी इठलाती-मुस्कराती दिखी। कानून मर्यादा तोड़ता, मर्यादाएं भंग-नग्न होती नज़र आई?जनसंख्या अनियंत्रित तथा व्यवस्था बेतरतीब दिखी। नेताओ में त्याग, कर्तव्य, सत्य, नैतिकता, गांधीवाद, अहिंसा गायब होता दिखा। हिंसात्मक घटनाओ से बापू खुद शर्मसार दिखे। अहिंसा नामक चिड़िया फुर्र दिखी। बापू की चुराई लाठियो के सहारे हिंसा, जवान-लपलपाती दिखी। बापू की खड़ाऊ भी गायब थी। कई गांधीछाप चमड़े के जूतों में दिखे। एक ने तर्क दिया-गर सारे नेता लकड़ी के खड़ाऊं चप्पल अपनाते तो बचे-खुचे जंगल भीं नदारद हो जाते, पहाड़ियां टकली दिखती?। शांति, सादगी, रामराज दिवास्वप्न सा नज़र आया। यूँ "अच्छे दिन" आने का राग जारी है किन्तु "बहनों-भाइयों"हिंसा पुरे यौवन व शबाब पर दिखी। बापू के चित्र केसम्मुख ही लेन-देन, हत्या, बलात्कार, आगजनी, लूट-खसोट सहज होता दिखा। कानून, नून जैसा खारा और व्यवस्था छिन्न-भिन्न सी नज़र आई। ग्राम स्वराज की कल्पना साकार हेतु गावड़ों की दशा के साथ-

साथ उससे जुड़े लोगो की दशा-दिशा ज़रूर टनाटन पाई गई। बापू की रूह ने देखा कि उनके गांधीवाद के नाम से कई दलों ने सारे चुनावो में वोट जुगाडे है पर आचरण इसके ठीक विपरीत पाए गए। उनकी कसमें खाकर हर नेता आगे बढ़ा और उन्हें पीछे धकेल दिया। नीति बापू की बखानीऔर कोठी खुद की बनाई, टोपी उनकी पहनी और देश की टोपी उछालते रहे। हार बापू की समाधि पर चढ़ाये पर खुद फूलों से लदे रहे। गांधीदर्शन गया तेल लेने नेताओ ने पथभ्रष्ट हो खुद के घर भरे, पराई पीर को जानने की अपेक्षा अपनी पीर दूर करने तथा पीढियां तारने का ही जतन किया। उनके चित्र पर हार पहनाकर खुद जीतते रहे, उनकी शपथ खाकर कई दल सत्ता में काबिज़ हो गए बाद में उनकी कसम, नाम, सिद्धान्त, दर्शन भूलकर अपने "वाद"में जुत गए?दारू के ठेकों पर बढ़ती भीड़, लूटते-मिटते गांधी दर्शन को देख तथा

देश के हालात देख बापू की आत्मा अत्यंत दुखी, उदास है उन्हें घोर निराशा व्याप्त है वें फूट पड़े है और कंट्री की दुर्दशा देख वापस लौटने को आतुर है। अब कभी न आने की कसम खाकर दुखी मन से जा रहे है, तभी मै यकायक गहरी नींद से जगा और बुदबुदा उठा-राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की जय।

श्री दिनेश गंगराड़े, 74ए, समरपार्क, निपानिया, मेन रोड़, इंदौर 452010 मप्र 9425936653

कविता - दो कविताएं - डॉ नीना छिब्बर

एक - नवाचार

त्योहार में नयापन लाना है
सबसे अलग मनाना है
कर ली कुछ तैयारी निराली

दिमाग में लगे मकड़ जाल हटाए
आत्मा में चुभीं कीलें बाहर फैंकी
आंखों मे बसे टूटे सपने बहा दिए
सांसों को संभाला बहकने से

कुविचारों के टुकड़े जला डाले
हवाई किलों को किया तहस- नहस
पुरानी सड़ी गली मान्यताएं भस्म की
अवसाद के दीमक को खुरच डाला

संग्रह प्रवृति को तिलांजलि दी
कृत्रिम सुख और गर्व को दिया घर निकाला
अनचाहे बंधनों की खरपतवार उखाड़ी
नकली मुस्कान को कहा अलविदा

सीलन भरे भावों को तेजाब स्नान करवाया
झाड़ दी धूल छोटी -बड़ी इच्छाओं से
बेकार अनुपयोगी अतिरिक्त सब बांटा
पुरानी टूटी किरचने बटोरी और फैंकी
जगमगा गया अंतस सारा.. दिवाली आई।

डॉ. नीना छिब्बर, जोधपुर 9461029319

दो - फुलझड़ियाँ

मिले जब खाली हाथों को
रूखा सूखा भोजन भरपेट
फुलझडियाँ छूटती हैं
अधनंगे बदन पर उतरन सजे

देख नये रंग फुलझडियाँ छूटें
कठोर कंकरीली जमीन पर
घिसा बदरंग गलीचा बिछे
तब फुलझडियाँ छूटें
बिते भर घर के बाहर
पुरानी साईकिल शान से चले
फुलझड़ियाँ छूटें
दिन भर खटने पर जब
मिठाई का डिब्बा मिले
तब फुलझडियाँ छूटें
अमीरो के घरों की पुरानी सजावट
झोपड़ियों के द्वार पर सजे
तब फुलझडियाँ छूटें
उजाड़ बस्ती में कोई दीपक जलाए
नये दिन, नये स्वाद से मिलाए
तब फुलझडियाँ छूटें।

कहानी - श्रवण कुमार - सुश्री रेखा शाह आरबी

अवधेश जी पांच मिनट के अंदर तकरीबन पांच बार करवट बदल चुके थे। बस करवट बदलना ही उनके वश में था। उठ कर बैठना और चलना तो जैसे अब बंद ही हो गया था। बहुत मुश्किल से दिनचर्या और नित्य कर्म निपटा पाते थे। बुढ़ापे की बीमारियां ना चैन से जीने देती है ना चैन से मरने देती है। आज अवधेश जी को देखकर कौन कह सकता है। अवधेश जी एक समय फौज के बहादुर सिपाही थे। उनके अफसर उनके चुश्ती, फुर्तीलेपन और बहादुरी पर गर्व करते थे।

लेकिन बुढ़ापे ने असहाय निशक्त कर दिया है। एक गिलास पानी पीने के लिए भी बहू, बेटे और पत्नी पर निर्भर हो गए हैं।

वह बार-बार दरवाजे की तरफ देख रहे थे। अपनी पत्नी मालती के आने की राह।

थोड़ी देर होने पर ही उनका मन घबराने लगा। चाय बनाने गई है तो इतनी देर क्यों लग रही है।

शायद कुछ उम्र का असर था। और कुछ बीमारी का असर था। उम्र भी तो नब्बे साल की हो चुकी थी। हर छोटी बात में घबरा जाते थे।

अवधेश जी ने राहत की सांस ली। जब अपनी पत्नी मालती को कमरे में चाय लेकर आते हुए देखा। मालती ने चाय सिरहाने पर रखे हुए टेबल पर रख दिया। और बेड का हैंडल घूमाने लगी जिससे कि वह उठ कर बैठ सके।

पैसा हो तो क्या नहीं हो सकता है। बेटे ने ऑनलाइन यह बेड मंगवाया था। जो अस्पतालों में रहता है। ताकि मां के अकेले रहने पर भी वह आसानी से पापा को हैंडल कर सके। क्योंकि कभी-कभी अवधेश जी का शरीर इतना अलस्त पड़ जाता था। कि उठकर बैठ भी नहीं पर सकते थे।

उठ कर बैठाने के बाद मालती ने चाय का कप उनके हाथों में पकड़ा दिया। और खुद एक कप लेकर सोफे पर बैठकर चाय पीने लगी। अवधेश जी सवालिया नजरों से मालती की तरफ देख रहे थे। तो मालती भी पूछ बैठी--" क्या कुछ और भी चाहिए"?

"मयंक और बहू क्या पहुंच गए.. क्या फोन किया था तुमने ?"

"हां वो लोग पहुंच गए हैं.. खुद मयंक का फोन आया था और मैं क्या बार-बार फोन करूं.. परीक्षा के बहाने ही सही कितने समय के बाद तो मयंक घर से बाहर निकला है.. वरना आजकल के लड़के तो कहां-कहां घूमने जाते हैं.. मयंक भी कितना

देश दुनिया घूमने का शौकीन है.. लेकिन हम लोगों के चलते वह कहीं भी निकल कर नहीं जा पाता है.. उसी के बहाने थोड़ी बहू भी घूम लेगी वरना वह भी कहीं नहीं जा पाती है "।

रात होने पर मालती ने उन्हें हल्के खाने के रूप में खिचड़ी बनाकर खिलाया। और खुद भी खाकर इसी कमरे में दूसरे बेड पर लेट गई। लेकिन अवधेश जी को नींद नहीं आ रही थी। पता नहीं क्या सोच रहे थे। और किस लिए बार-बार बेचैनी में करवट ले रहे थे। जबकि अन्य दिन तो खाना खाने के बाद और डॉक्टर द्वारा सुझाए नींद की गोली खाने के पश्चात उन्हें नींद आ जाती थी। लेकिन आज पता नहीं क्यों नींद की गोली खाने के बाद भी उन्हें नींद नहीं आ रही थी। शायद कुछ ज्यादा ही सोच रहे थे या कुछ उनको तकलीफ था।

मालती से देखा नहीं गया तो वह पूछ बैठी--" क्या हुआ मयंक के पापा सो क्यो नही रहे हैं.. क्या कुछ सोच रहे हैं कि जिससे आपको नींद नहीं आ रही है.. या कुछ दर्द कर रहा है?"

पहले तो कुछ नहीं बोले। लेकिन मालती द्वारा बार-बार पूछने पर उन्होंने कहा-- मयंक की मां मयंक प्रमोशन के लिए परीक्षा देने गया है.. परीक्षा देने के बाद उसका तबादला किसी और शहर में हो जाएगा.. तब हम लोग क्या करेंगे.. मैं तो उठकर अपने से बैठ भी नहीं सकता.. फिर मेरी देखभाल कौन करेगा.. वही तो मेरे बुढ़ापे का सहारा है. यही सब सोच कर मेरा मन भीतर से बहुत घबरा रहा है"।

मालती जी मुस्कुराने लगी और बोली--" मैं जानती थी आपको कोई ना कोई बात परेशान कर रही है.. तभी आपको नींद नहीं आ रही है.. मयंक कोई पहली बार परीक्षा देने नहीं गया है.. आपको पता नहीं है.. इससे पहले भी उसके विभाग की तरफ से यह परीक्षा हुआ था.. और इस बार भी परीक्षा में शामिल होना उसकी मजबूरी है.. लेकिन पिछली बार भी वह अपनी कॉपी सादी छोड़ आया था.. जिसके कारण उसका प्रमोशन नहीं हुआ था और इस बार भी काफी सादी ही छोड़ कर आएगा.. क्योंकि वह मुझसे कह रहा था.. कि जब तक पापा है तब तक मैं प्रमोशन कैसे ले सकता हूं.. प्रमोशन लेने का मतलब है.. मेरा दूसरे शहर में जाना और मुझे अपने मां बाप के कीमत पर प्रमोशन नहीं चाहिए.. इसीलिए आप चैन से सोइए आपका श्रवण कुमार छोड़कर नहीं जा रहा.. "।

अवधेश जी पत्नी के द्वारा यह बात सुनते ही उनकी आंखें जलथल हो गई। बेटे का त्याग इस जमाने के अनुसार बहुत बड़ा था। वरना आजकल के बच्चे तो बहाना खोजते हैं। मां-बाप को छोड़कर दूसरे शहरों में मौज मस्ती से जीने के लिए। अपने श्रवण कुमार को अपने मन में ढेर सारा आशीर्वाद देते हुए। अवधेश जी चैन की नींद सो गए।

सुश्री रेखा शाह आरबी, बलिया (यूपी) मो 8736863697

कविता - उजियार किया - श्री आशीष दशोत्तर

असतो मा सद्गमय लिखा दरवाज़े पर
और झूठ का तुमने तो सत्कार किया।

अंधियारे से आंख मिलाकर हंसते थे
काले-काले ख़्वाब नज़र में बसते थे,
मन में नफ़रत के कितने तहखाने थे
तुम तो केवल रातों के दीवाने थे।
ऐसे, कैसे फिर तुमने फिर उजियार किया?

बाधाओं के जाल बिछाए राहों पे
खूब ठहाके लगे हमारी आहों पे,
पैरों में मुश्किल की सांकल डाली थी
भीतर तुमने खूब क्रूरता पाली थी।
बाहर हम पर सदा मगर उपकार किया।

अरमानों को तोड़ा, सपने टूट गए,
अपने, अपने कहां रहे, सब छूट गए,
नफ़रत मन में रखकर तुमने इसे छुआ,
साझेपन का दर्पण चकनाचूर हुआ।
किया बहुत कुछ तुमने, पर बेकार किया।

श्री आशीष दशोत्तर, 12/2, कोमल नगर, बरबड़ रोड़ , रतलाम- 457001, मो. 9827084966

व्यंग्य - व्याकरणीय त्रुटि की शहादत - श्री जगदीश पाठक

नगर में साहब की नई पोस्टिंग हुई थी। नगरों में अव्यवस्थाएं तो रहती हैं, पर जो नया पोस्टेड होता है, उसे शुरू में कुछ ज्यादा ही अव्यवस्था नजर आती है। साहब ने आज्ञा जारी की --'अब तक हुआ सो हुआ। लेकिन अब नहीं होगा। रात दस के बाद अकारण सड़क पर कोई नहीं दिखेगा, वर्ना सख्त कार्रवाई होगी।'

इस आज्ञा से अनेक लोगों को परेशानी हुई। पीकर सड़क पर दबंगई दिखाने वालों को खास तौर पर परेशानी हुई। दस बजने से पहले ही उनके घरवाले उन्हें पकड़ कर घरों में बंद रखने लगे--'हां हां ठीक है, अस्पताल या थाने में अंग्रेजी बोलने से अच्छा है कि घर में ही बोलो।'

नगर के अधिकांश कवियों को भी भारी दिक्कत है। रात दस के बाद ही तो उन बेचारों का गला खुलता है। नगर में एक साहित्यिक संस्था है। सरकारी सहायता लेकर गोष्ठियां करती है। अब दस बजे के पहले ही गोष्ठी बंद करनी पड़ेगी तो कवि नहाएगा क्या और निचोड़ेगा क्या? कभी-कभी तो कवियों की संख्या अधिक होने और ऊपर से 'एक और प्रस्तुत है' के चक्कर में बारह भी बज जाते थे। फलस्वरूप समापन के बाद बचते बचाते, छुपते छुपाते घर पहुंचना होता था। यदि ज्यादा ही विलंब हो रहा हो तो घर से फोन आता--' वहीं रुक जाना जी, अब सबेरे ही आना। बड़कू कह रहा है कि तुम कोई वोट बैंक नहीं हो जो इतनी रात गए तुम्हें छुड़वाने के लिए कोर्ट खुले? '

ऐसी ही एक गोष्ठी करके संस्धा के लोग लौट रहे थे। घड़ी में और सबके चेहरे पर बारह बज रहे थे, क्योंकि साहब ने उन्हें देख लिया था और उन सब ने साहब को। साहब ने हेड लाइट ऑफ करके जीप सड़क के एक किनारे खड़ी कर रखी थी। संस्था के मुखिया ने थूक निगलते हुए सदस्यों से कहा --'आपको बिल्कुल घबराना नहीं है।'

सब पास पहुंचे तो साहब ने झट् से जीप की लाईट जला दी, पूछा--' कहां से डाका डालकर आ रहे हो तुम लोग? '

मुखिया बोले --' हम लोग कवि हैं सर। गोष्ठी करके लौट रहे हैं। यह देखिए डायरी।'

'अच्छा, तो तुम्हीं इनके सरगना हो? सब लोग लाईट पर आओ।'

सब लाइट पर आए।

साहब ने देखकर कहा -- 'चेहरे से तो कवि नहीं लगते। खैर, एक एक करके अपनी कविता की एक एक पंक्ति सुनाओ।'

फिर क्या था, कविता पहले पढ़ने की होड़ मच गई

'मै पहले! '

'नहीं, मैं पहले! '

'क्या बात है?' साहब ने पूछा

कवि 'उदास' बोले --' यह लोग मेरे साथ ऐसा ही करते हैं सर। मेरा नंबर आते ही आभार प्रदर्शन कर देते हैं।'

'ठीक है, आप ही पहले पढ़ो।'

उदास जी ने हेडलाइट के पास आकर अपनी डायरी खोली, पढ़ने लगे -- 'गर्मी बहुत है, धरती रो रहा है, आसमान तप रही है। '

सुनकर साहब ने माथा पीटा और कहा--' ओह! ! '

फिर उन्होंने पास खड़े सिपाहियों से कहा--' सबको भीतर करो।'

श्री जगदीश पाठक, मनेंद्रगढ़ (छत्तीसगढ़)

व्यंग्य - निधन विचार - श्री अभिमन्यु जैन

आजकल निधन के बड़े बड़े खर्चीले विज्ञापन समाचार पत्र में देने का बड़ा चलन है. लोगों को लगता है की स्वर्ग में बैठे उनके पिताजी यह विज्ञापन पढ़ के बहुत खुश होंगे. वे सुपुत्र जिनने जिंदा रहते बाप की एक कही न मानी, आज उनके दिखाए पथ पर चलने की दुहाई दे रहे हैं..

एक परिवार में तीन पुत्र, उनके पिताजी का देहांत हो गया, शहर के कोने कोने के रिश्तेदार घर के सामने खड़े और घर के पुत्र घर में पिड़े पिड़े, तिजोरी की चाबी, हवेली के कागजात, खेती की बही टटोलने में लगे.

अब मौत मिट्टी में पहले जैसा रोना सुनाई नहीं पड़ता, ज्यादा रोने वालों को लोग पिछड़ा और देहाती समझते हैं. अब वीडियो कॉलिंग से घर से लेकर मर घटाई और अंतिम क्रिया करम सब दिखाया जाता है. घर में बैठी महिलाएं दुख भूल आपस में चर्चा करने लगती हैं, देखो तो फूफाजी कैसे सुन्दर, मुस्कराते से लग रहे हैं, हमें तो लगता है वे अभी उठ बैठेंगे.

मर घटाई में सब अपना अपना ग्रुप बनाकर बैठ जाते हैं, कई मित्रों का मर घटाई में सालों बाद मिलन होता हैं. गप शप चालू है. हाँ, घर के लोग जरूर दुखी मन से मृत शरीर के पास - इस आशा से कि शायद कोई ईश्वरी चमत्कार हो जाए - मुर्दा में जान आ जाए.

जिंदगी भर जिनने माँ -बाप को पेरा, कभी एक बिलिया पानी न दिया, वे बड़े भावुक मार्मिक सन्देश छपवा रहे, जैसे उनके दुख भरे सन्देश पढ़ के दद्दा अख़बार फाड़कें बाहर आ जेहैं. जिअत बाप से दंगम दंगा, मरे, हाड़ पहुंचाए गंगा. जिनने अपने पिता को कभी चैन से जीने न दिया, पेपरन में नोनी, नोनी भाषा में दुःख भरे सन्देश पेल रहे. एक सन्देश देखें -: आपका संघर्ष शील कर्मठ जीवन, हंसमुख और मिलनसार स्वभाव हमें प्रेरणा देता रहेगा. अरे! तुम क्या प्रेरणा लोगो, मगर मच्छी आंसू बहाने वाले मनहूसो.

मौत, कई घरों में अंधेरा कर जाती है तो कई घरों में अंधेर, बाप मर गए अँधेरे में, बेटा का नाम प्रकाश, धर गए. एक बात पर और प्रकाश डाल दें, अंग्रेजी में "डेथ " मतलब मौत. यदि टाइम पर डेथ सर्टिफिकेट नहीं बनवाया तो बाद में बहुत मुसीबत होती है..

एक शेर देखें -:

हम तो गुस्ताखी करेंगे, ज़िन्दगी में एक बार,

यार सब पैदल चलेंगे, हम ज़नाज़े पर सवार.

अब भाई कि इच्छा अधूरी रह जायेगी, क्योंकि अब अर्थी को कांधा देकर पुण्य कमाने का चलन समाप्त है. अब अंतिम यात्रा के लिये मुक्ति वाहन अनिवार्य है, जब तक मुक्ति वाहन नहीं आता तब तक घर के अंदर से ओरतों के रोने की आवाज नही आती, जैसे ही घर के सामने मुक्ति वाहन आकर रुका, भड़ भड़ा के रोने की आवाज आने लगती है,. अचानक किसी के निधन का समाचार किसी को सुनाई पड़ता है तो तत्काल प्रश्न, अंतिम यात्रा का समय? पूंछा जाता है. निर्धारित समय पर, एक साथ बहुत सारे लोग, देखकर लगता है जैसे कहीं हमला होना है, फिर सब छू..... मिलते हैं मर घटाई में.

एक दाह संस्कार में जाना पड़ा, मृतक मालदार बुजुर्गवार थे, दो बेटे थे. दोनों में भारी मन मुटाव. एक दूसरे का चेहरा देखना भी पसंद नहीं. चेहरे से दोनों भारी दुखी लग रहे थे, दुःख के इन क्ष णो में अचानक क्या हुआ की चिता की जलती लकड़ी निकाल, एक दूसरे पर लपकते हुए समशान के चक्कर काटने लगे - लुघरा युद्ध ने भीषण रूप धारण कर लिया. आदमी की बिसात क्या? समशान से भूत निकल निकल कर भागने लगे. तब समझ में आया संसार में आदमी से बढ़कर कोई भूत नहीं.

श्री अभिमन्यु जैन, 955/2, समता कालोनी, राइट टाउन जबलपुर मो. 9425885294

व्यंग्य - कॉपीराइट एक्ट - श्री रमाकांत ताम्रकार

वैसे कॉपीराइट एक्ट के बारे में सबको बहुत कुछ मालूम नहीं होता किंतु कुछ शातिर प्रवृत्ति वाले लोग कॉपी राइट एक्ट को भी अपना हथियार बना लेते हैं। लोगों को ज्यादा से ज्यादा फिल्म और पत्रिकाओं के कॉपी राइट एक्ट के बारे में मालूम होता है। कॉपीराइट एक्ट को कुछ लोग अपनी पैतृक संपत्ति भी समझ लेते हैं। इनमें राजनेता साहित्यकार आदि पहले नंबर पर आते हैं।

वे कॉपीराइट एक्ट की दुकान चलाते हैं। भले ही वे कॉपीराइट एक्ट के बारे में कुछ जानते भी ना हो पर उन्हें उससे क्या। कॉपीराइट एक्ट एक प्रकार का हथियार होता है, जो दूसरों के सामने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने का या दूसरों पर अधिकार जमाने का है।

अक्सर देखा गया है कि हर युग में उसे युग का एक युगपुरुष होता है, यहां तक की हर विधा में एक युगपुरुष होता है। समय की बलिहारी देखिये, आजकल हर कुलिया में भी युगपुरुष होने लगे हैं क्योंकि इन युगपुरुषों की आड़ में लोग अपनी ओरिजिनल प्रतिभा को छुपा कर उनकी ही आड़ में दुकानदारी चलते हैं और भेड़िया धसान भीड़ में अपनी वाह-वाही कराते हैं। जनता भी सोचती है हमें क्या, हमारा तो इनसे फायदा है और उनकी आड़ में हमारा उल्लू सीधा हो ही रहा है हमें दुनिया से क्या लेना देना। हमारा घर भरता रहे, प्रजनन क्षमता बढ़ती रहे, फ्री का माल मिलता रहे, देश दुनिया से हमें क्या मतलब। भीड़ रूपी जनता तो अपने-अपने युग पुरुष पर कॉपी राइट एक्ट रखते ही है ताकि जब मौका पड़े तो उनकी आड़ में उन्हें ही तबीयत से भुना लो।

आजकल साहित्य में भी कुछ अवसर परस्त बिचौलिए पैदा हो गए हैं। उन्होंने भी समय रहते अपने-अपने युग पुरुष बना लिए हैं, उनके सिवाय वर्तमान साहित्यिक युगपुरुष पर किसी और का कॉपीराइट एक्ट लागू नहीं है वह किसी और को उनका कॉपीराइट एक्ट लेने भी नहीं देते। उनका कहना रहता है कि हम युग पुरुष के साथ 24 घंटे रहा करते थे अर्थात दैनंदिनी क्रिया में भी ऐसे लोग उनके साथ रहा करते थे। उनकी खटिया के नीचे छुपे होते थे चौकीदारी करते थे कि कौन आया उनसे क्या कह रहा है तथा युग पुरुष के माध्यम से वे अपने बारे में आने वाले लोगों के बीच अपने बारे में अच्छा-अच्छा कहलवाना आदि आदि। भले ही वे युग पुरुष के यहां किसी के साथ यदा-कदा गए हो और उन्हें कुछ मालूम भी ना हो पर उनके बारे में उनके रिश्तेदारों से, परिजनों से और लोगों से सुन सुनकर उनके साथ अपने संस्मरण बना लेते हैं तभी ऐसे लोग युग पुरुष के संकलित संस्मरण अपने बताकर सबके बीच में प्रसाद जैसे बांट बांटकर सबको कृतार्थ कर अपनी महत्ता सिद्ध कर रहे हैं और युग पुरुष की जड़ों को मजबूत कर रहे हैं। भले ही युगपुरुष ने अपने जीते जी किसी को भी अपने लिए किसी भी प्रकार का कोई अधिकार नहीं दिया था किंतु उनकी

आंखें बंद होते ही लोगों ने अपने-अपने मठ का युग पुरुष बनाकर उनका यश गान कर पहले तो कॉपी राइट एक्ट के लिए अपने दावेदारी प्रस्तुत की फिर उन्हें युग पुरुष बनाया और उन पर मुल्लमा चढ़ा-चढ़कर उनकी बोटी को फ्राई किया। अंत में जब उन्हें लगा कि युग पुरुष का कॉपी राइट एक्ट हमारे पास आ गया है तो उन लोगों ने युग पुरुष की प्रासंगिकता और दृष्टव्यता के नाम पर उनकी बोटी बोटी को टुकड़े-टुकड़े में चूसना शुरू कर दिया। ऐसे बिचौलियों ने जब देखा की बोटी का रस खत्म हो गया तो कहने लगे अरे युग पुरुष तो अब चुक गए हैं। उन्होंने अपने-अपने मठों के अंध भक्तों से कहा अब हम लोग ही साहित्य और आलोचना के जीवित युग पुरुष है। हमारे अधकचरा लेखन को युग पुरुष के लेखन से ज्यादा गंभीर लेखन के रूप में प्रचारित करो और हमारे बारे में उच्च कोटि के कसीदे पढ़ो जगह-जगह आयोजन करो पर ध्यान रहे यह आयोजन युग पुरुष के नाम पर ही होना चाहिए ताकि उनके नाम से अंधभक्त इकट्ठे हो जाएंगे।

ऐसे लोगों ने ही अपने-अपने मठ बना लिए हैं जिसमें वह अपने आप को युग पुरुष कहलाने से भी नहीं चूक रहे हैं और युग पुरुष के नाम पर सम्मान और पुरस्कार लेने के लिए चिरौरी कर रहे हैं। युगपुरुष के नाम के सम्मानों की लूट मची हुई है जो जोड़-तोड़कर लिए जा रहे हैं। युगपुरुष के नाम से कार्यक्रम और प्रासंगिकता के नाम पर अपने ऊपर कार्यक्रम करने का चलन सा हो गया है। वर्तमान में युगपुरुषों के नाम से हवाई यात्राएं, रेल की ऐसी यात्राएं चल रही हैं। अधिकांश कार्यक्रम भी बोतल खुलने तक सीमित हो गए हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि कार्यक्रम में युग पुरुष को दरकिनार कर दिया जाता है और अपने-अपने बारे में कसीदे गढ़ने लगते हैं और तो और जो लोग भी ऐसे कार्यक्रमों का विरोध करते हैं उसे विद्रोही घोषित कर दीवाल में चुनवाने की बात करते हैं।

अपने को साहित्य और राजनीति में सच्चा सेवक घोषित करवाने के लिए कॉपीराइट एक्ट से अच्छी मिसाल दूसरी कोई नहीं है इसीलिए देश का शातिर वर्ग इसी उद्योग में लगा हुआ है और यदि स्वर्ग होता होगा तो साहित्य के युग पुरुष स्वर्ग में बैठकर यह देखकर देखकर सोच रहे होंगे और वे ऐसी प्रवृत्ति पर साहित्य लिखने की बजाय मंद मंद मुस्कुराकर सोचते होंगे कि जो लोग वर्तमान में जिस युगपुरुष के नाम पर दुकान चला रहे हैं वह कम से कम मैं तो नहीं हो सकता हूं। इन लोगों ने जरूर मेरा कोई प्रतिरूप गढ़ लिया है जिसको भुनाकर यश और धनलोलुप हो मठ चला रहे हैं।

श्री रमाकांत ताम्रकार, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

कविता - दीपोत्सव - श्री श्याम खापर्डे

तुम्हारे पास सूरज है
चांद सितारे हैं
आलोक के
उपाय सारे हैं
अंधेरा तुम्हारे
दहलीज़ पर
गुलाम हैं
प्रकाश चाकर हैं
हर तरफ
रोशनी के फौवारे हैं

तुम क्या जानो
स्याह अंधेरे की पीड़ा
काली रात का भय
अंधेरे के जघन्य पाप
अंधेरे के
ज़ुल्म और अन्याय

कभी जाकर देखो -
उन उजड़ी हुई बस्तियों को
उजड़े हुए आशियानों को
बेघर, बेबस नभ के नीचे
बसे ठिकानों को
अधनंगे मासूम बच्चे
बिलखती हुई महिलाओं को
भूख से तड़पते हुए
भूखे इन्सानों को

उनके पास ना कोई छत
ना बसेरा है
खुले आसमां के नीचे
डाले हुए डेरा हैं
उनके पास
ना दीया, ना तेल
ना बाती है
अभिशप्त जीवन है
अंधेरा साथी है
सब कुछ कट्टरता की
भेंट चढ़ गया
पहले ही अंधेरा
क्या कम था
जो अभी और बढ़ गया

वो कैसे दीप जलाएंगे?
वो कैसे रोशनी का
त्योहार मनायेंगे?
क्या आसमान से
कोई तारा टूटकर
रोशनी बिखेरेगा
उनके उजड़े आंगन में?
या दीपोत्सव के
शुभ अवसर पर
अंधेरा ही रहेगा
उनके बिखरे हुए
प्रांगण में? /

श्री श्याम खापर्डे, फ्लेट न - 402, मैत्री अपार्टमेंट, फेज - बी, रिसाली, दुर्ग (छत्तीसगढ़) मो 9425592588

कहानी - चिराग - डॉ. भावना शुक्ल

फोन की रिंग बार-बार बज रही थी।
अर्पित ने सोचा अस्पताल से ही कॉल होगा अब तैयार होकर ही उठाता हूँ वहीँ तो जा ही रहा हूँ।
फोन देखा तो माँ के चार मिस कॉल अरे बाप रे इतनी सुबह-सुबह क्या बात हो गई तुरंत माँ को फ़ोन किया-सॉरी मम्मा तैयार हो रहा था।
" अर्पित बेटा कितने व्यस्त हो, अजमेर कब तक आओगे।
" माँ अस्पताल में बहुत काम होता है बहुत मरीज आते हैं निकलना मुश्किल होता है अभी मैं कुछ नहीं कह सकता मैं कब तक आ पाऊंगा।
"बेटा शादी की तैयारी करनी है, तुम्हारे अपने कपड़े लेने हैं हमको भी कुछ मदद की आवश्यकता है तुम्हारी तुम्हारे पिताजी परेशान हो रहे हैं।"
"मेरी प्यारी माँ तैयारी की चिंता मत करो मैं यहाँ पर अपनी शॉपिंग कर लूँगा। वहाँ जो मदद चाहिए मेरे दोस्त आ जायेंगे सब बुकिंग कर देंगे क्योंकि हो सकता है मैं शादी के 2 दिन 3 दिन पहले ही आ पाऊँ। जो स्पेशलिटी मेरे पास है वैसे डॉक्टर यहाँ पर कोई नहीं है इसलिए मेरी ज़रूरत ज़्यादा पड़ती है दिनभर में न्यूरो के कई मरीज आते हैं।"
"अच्छा कोई बात नहीं तुम अपने काम को लगन से करो। सुहानी से बात कभी-कभी कर लिया करो नहीं तो वह सोचेगी ऐसे डॉक्टर से शादी करी कि जिसको बिल्कुल भी समय ही नहीं है।"
"ठीक है माँ सुहानी से बात मैं करता रहता हूँ और उसको मैंने अपने काम के विषय में बता दिया है। मेरी व्यस्तता बहुत रहती है और शादी के बाद कुछ दिन जब तक मैं यहाँ पर मकान नहीं ले लेता हूँ तब तक वह अजमेर में ही रहेगी और जब मैं मकान ले लूंगा उसके बाद आप सभी लोग हमारे पास आकर के रहेंगे क्योंकि मैं आपका एकलौता बेटा हूँ, दीदी की शादी हो चुकी है आप लोगों को मैं वहाँ अजमेर में अकेले नहीं छोडूंगा। उसको यह भी कह दिया था कि अगर उसको किसी और नौकरी पेशे वाले लड़के से शादी करनी हो तो भी मैं तैयार हूँ यह रिश्ता तोड़ने के लिए लेकिन वह इस रिश्ते को मन से स्वीकार करती है उसे कोई समस्या नहीं है। आप माँ बिल्कुल चिंता मत करो आप वहाँ अपनी शादी की तैयारी में जुट जाओ."
"ठीक है बेटा तुम जैसा कहो।"
"माँ मैं अस्पताल जाने के लिए तैयार हो रहा हूँ आज एक आवश्यक मीटिंग है फ्री होकर फिर आपसे बात करूंगा।"
"ठीक है बेटा।"
फोन की रिंग फिर बज उठी ।
फोन अस्पताल से था। "डॉक्टर साहब आप डॉक्टर अर्पित बोल रहे हैं, आपका नंबर अपने गूगल से लिया है हमारी पत्नी को बहुत प्रॉब्लम है हम आपको दिखाना चाहते हैं आप अस्पताल में कब उपस्थित रहेंगे।"
"जी हम अस्पताल में रहेंगे आप आ जाइए. "

आज हम यही सोच रहे हैं कि हम डॉक्टर तो बने हैं लेकिन अपने लिए नहीं दुनिया के लिए उनकी मदद करने के लिए हमारा फ़र्ज़ यही है जिसका हमें निर्वहन करना चाहिए और हम कर रहे हैं हमें शुरुआत में ही सिखाया जाता है चाहे कैसी भी परिस्थिति हो आपको सभी का इलाज़ अच्छे से करना है।
सभी मरीजों को डॉक्टर से बहुत उम्मीद होती है। आज अभी जिसने फ़ोन किया वह बहुत उम्मीद लेकर के ही फ़ोन किया है हर व्यक्ति को इस जीवन में ज़िन्दगी जीने का पूरा हक़ है डॉक्टर उसमें सहभागी बन जाता है।
"नमस्ते डॉक्टर नमस्ते डॉक्टर अर्पित आपको जल्दी ही मीटिंग में पहुँचना है।"
"जी ठीक है मैं एक बार वार्ड के चक्कर लगाकर सभी मरीजों से मिलकर फिर मैं पहुँचता हूँ मीटिंग रूम में।"
"जी सर"
अस्पताल के वार्ड में राउंड लगाते वक़्त सभी मरीजों का हाल-चाल पूछा एक मरीज ने कहा-"डॉक्टर साहब हम अपने घर कब जा सकते हैं।"
"हमने कहा-" बस जल्दी ही अगले महीने आप जा सकते हैं।"
"हम इसलिए पूछ रहे थे हमने काफ़ी दिन पहले अपनी लड़की की शादी तय कर दी थी हम सोच रहे हैं कि हम पूरी तरह से स्वस्थ हो जाए और शादी में अच्छी तरह से खड़े हो पाए और अपनी बिटिया को विदा कर पाए. "
"हाँ क्यों नहीं बहुत अच्छे से एक महीने में आप पूरी तरह स्वस्थ हो जाएंगे और अपनी लड़की की शादी भी बहुत अच्छी तरह धूमधाम से करेंगे।"
"डॉक्टर साहब आपकी शादी हो गई क्या? "
"अभी तो नहीं अगले महीने है।"
"अरे वह हमारी ख़ूब दुआ है आपको ख़ूब आशीर्वाद है।"
"अच्छा अब आप लोग आराम करो अभी थोड़ी देर में खाना आने वाला है... "
"हम शाम को आप लोगों को मिलने फिर आएंगे।"
"मीटिंग कक्ष में अंदर पहुँचते ही सभी कहते हैं-" आओ डॉक्टर अर्पित आइये अब तो आप भी हमारी बिरादरी में शामिल होने जा रहे हैं। अगले महीने आपकी शादी जो है आपको अभी से बहुत-बहुत शुभकामनायें।"
"जी सर धन्यवाद"
"आप सभी को बता दें कि आज की मीटिंग का जो एजेंडा है वह यही है कुछ ऑपरेशंस जो बाहर से एडमिशन हुए हैं वह आ रहे हैं और आप सभी जो सर्जन है उनका ऑपरेशन करना है न्यूरो के ऑपरेशन ज़्यादा है और लिवर किडनी ट्रांसप्लांट है छोटी जगह में अस्पताल की उपलब्धता कम है डॉक्टर भी इतने मौजूद नहीं है तो दिल्ली ही लाना चाहते हैं आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनायें बहुत ही ईमानदारी के साथ अपनी जिम्मेदारी को निभाइएगा आपका और आपके अस्पताल का नाम रोशन हो ऐसा काम कीजिएगा।
"अर्पित बेटा तुम शादी में कितने दिन पहले जाना चाहते हो वैसे जो यह ऑपरेशन है वह 15 दिन के बाद ही होंगे।

"सर घर पर तो सभी कह रहे 15 दिन पहले आओ पर यह संभव नहीं है।ऑपरेशन होंगे तो मैं दो दिन पहले ही जाऊंगा और 1 सप्ताह मैं आ जाऊँगा।"
"ठीक है।"
रात को अर्पित हॉस्पिटल से वापस आ रहे थे तभी सुहानी का फ़ोन बजता है-"सुहानी कहती है आप वापस कब आ रहे हैं आपकी व्यस्तता ज्यादा है।"
"हाँ सुहानी क्या करूं मेरा पेशा ही कुछ ऐसा है यह तो मैंने तुम्हें पहले ही बताया था।"
"जी हाँ उसकी कोई बात नहीं है शादी पर समय पर पहुँच जाना।"
"देखिए अजमेर से दिल्ली मेरा ट्रांसफर तो हो नहीं सकता मैं कॉलेज में पढ़ा रही हूँ इसलिए मैं अगले महीने की शुरुआत में ही रिजाइन दे रही हूँ और अपने शादी की तैयारी में जुटजाती हूँ दिल्ली जाकर नौकरी तो होगी नहीं जब तक नौकरी मिल नहीं जाती मेरा लेखन कार्य ही मेरा पेशा बनेगा मुझे कोई चिंता की ज़रूरत नहीं है।"
"हाँ तुम ठीक कह रही हो कुछ दिन तुम भी आराम कर लो लेकिन अभी रिजाइन मत दो छुट्टी ले लो तुम, क्योंकि तुमको और अपने माता-पिता को दीपावली के बाद ही लेकर के आएंगे तब तक मुझे घर भी मिल जाएगा दो-तीन महीने इसलिए अभी नौकरी नहीं छोड़ो।"
"नोटिस पीरियड पर जॉब करती रहो कॉलेज में बता दो ज़रूर, एप्लीकेशन दे दो।"
"क्योंकि मैं शादी के बाद केवल एक हफ्ते ही रहूँगा अस्पताल में काम बहुत है।"
"जी ठीक है।"
दिन समय बीतते गए वह दिन भी आ गया जब अर्पित को शादी के लिए जाना था।
आज मैं बहुत खुश था चलो अब मेरा जीवन सवारने वाली आ जायेगी। जैसे ही अस्पताल पहुँचा... वैसे ही एक इमरजेंसी केस आया ट्रेन से बुकिंग है लेकिन फिर भी मरीज की जान बचाना है तुरंत उसने कहा— "ऑपरेशन की तैयारी कीजिए मैं ऑपरेशन करने के बाद ही जाऊंगा चाहे ट्रेन भी क्यों न छूट जाए मैं गाड़ी से चला जाऊंगा।"
एक के बाद एक लगातार दो एक्सीडेंट केस आ गए दोनों केस का सफलतापूर्वक ऑपरेशन हो गया ।
तभी तुरंत सीनियर डॉक्टर ने आकर बहुत शाबाशी दी और कहा-"अर्पित तुम सफलता प्राप्त करते जाओगे बहुत बड़े डॉक्टर बनोगे तुम्हारा बहुत नाम होगा मेरा आशीर्वाद है अब तुम जाओ तुम्हारी शादी है कल बहुत-बहुत शुभकामनायें।"
ट्रेन तो छूट चुकी है अर्पित ने सोचा अब गाड़ी से ही चला जाए निकलते समय उसने माँ को फ़ोन किया और कहा-"माँ मैं अभी निकल रहा हूँ रात तक पहुँच जाऊंगा।"
"अरे वही मैं तुम्हें बार-बार फ़ोन कि अब तक तो तुम्हारी ट्रेन आ गई होगी और तुम्हें आ जाना चाहिए था लेकिन तुमने मेरा फ़ोन नहीं उठाया।"
"माँ दो इमरजेंसी कैसे आ गए थे इसलिए मैं गाड़ी से आ रहा हूँ आप चिंता ना करें।"
"मन में शादी कितनी ख़ुशी थी और सुहानी से मिलने और उसके साथ बिताने के सपने सब पूरे होने वाले हैं।"
"शादी बहुत धूमधाम से दोस्तों की मदद से बहुत अच्छे से हो गई ।"

"जिस दिन का सभी को इंतज़ार होता है वह दिन आ गया सुहानी ने कहा-" आप मेरी चिंता बिल्कुल मत कीजिएगा मैं तो आपको पाकर बहुत खुश हूँ आज नहीं तो कल आपके साथ दिल्ली जाना है। हमने जो अपने सपनों का महल बनाया है वह पूरा हो गया है।"
"अर्पित ने कहा-" सुहानी में तुम्हें पाकर बहुत खुश हूँ तुम कितनी संतोषी हो कोई और लड़की होती तो वह यही कहती कि नहीं मैं तुम्हारे साथ अभी चलूंगी दिल्ली शादी करने का क्या मतलब होता है लेकिन तुमने ऐसा नहीं कहा और तुमने मुझे हिम्मत बंधाई है। सोचा था शादी के बाद एक महीना रुकूंगा लेकिन एक हफ्ते में ही जाना होगा तुमने तैयारी तो कर ली होगी हम लोगों को कल मनाली के लिए निकलना है।"
"मनाली की खूबसूरत वादियों में तीन दिन बहुत अच्छे से बीते हैं सुहानी इन यादों से आगे का समय भी कट जायेगा। आपस में बातचीत चल रही थी कि सीनियर डॉक्टर का फ़ोन आया अर्पित तुम्हें कल हर हाल में यहाँ उपस्थित होना है बाहर से आने वाले मरीजों के ऑपरेशन करना है।"
"जी सर में आ जाऊंगा।"
"सुहानी अब मुझे जाना होगा अजमेर पहुँचकर तुरंत मैं निकल जाऊंगा।"
"जी ठीक है।"
"तुम माँ पिताजी का ख़्याल रखना और हम आपस में बातचीत करते रहेंगे समय- समय पर।"
"माँ ने कहा-" बेटा जल्दी पहुँचने के चक्कर में गाड़ी आराम से चलाना, पहुँच कर कॉल करना।"
"जी माँ अब आप लोग आशीर्वाद दो सुहानी आपका ख़्याल रखेंगी ।"
"अस्पताल पहुँचकर सभी के लिए मिठाई का डब्बा लेकर गए थे मिठाई खिलाई सभी ने बधाई दी और तुरंत ऑपरेशन में जुट गए.
मन बस यही सोचता जा रहा था अब कब दिवाली आए और हमको जाना है सबको वापस लाना है। धीरे-धीरे वह समय भी बीतता चला गया। अब दो दिन बाद दिवाली है मन में बस यही विचार चल रहा है माता-पिता से सुहानी से मिलना है सुहानी के मेरे जीवन में आने से मेरा सफ़र सुहावना हो गया है मेरे मन में भी दीपावली के दीए की रोशनी चारों ओर बिखरी नज़र आ रही है उसे रोशनी के बीच सुहानी और मेरा मिलन हो रहा है कितना खूबसूरत दृश्य है बस यह दो दिन जल्दी से कट जाए कल मुझे जाना है। अस्पताल में सभी ने मुझे फिर बधाई दी-"अब तुम्हें और ढेर सारी बधाई क्योंकि अब तुम्हें भाभी जी को लेकर आना तभी हम लोग तुमसे पार्टी लेंगे।"
"जी बिलकुल मैं निकलता हूँ।"
"ऑल द बेस्ट आराम से जाना जल्दी आना।"
"अस्पताल के दरवाजे पर जोर-जोर से चीखने चिल्लाने की आवाजे आ रही थी मेरे बच्चों को बचा लो मेरे बच्चे को बचा लो ध्यान उस ओर चला गया पिता अपने बेटे को गोदी में लिया था सर से खून बह रहा था। एक मन किया कल दीपावली है मुझे घर पहुँचना है लेकिन इस बच्चे की हालत देखकर पहले अपने फ़र्ज़ को निभाना है, तुरंत मरीज को अंदर लेने के लिए कहा-" जल्दी से ऑपरेशन थिएटर में पहुँचों वहीं इसका चेकअप करेंगे उसके बाद ज़रूरत पड़ने पर ऑपरेशन।"
जब तक ऑपरेशन की तैयारी चल रही थी तब तक उसने सुहानी को फ़ोन किया और कहा-"सुहानी एक इमरजेंसी केस आया है छोटा बच्चा है उसका ऑपरेशन करने जा रहा हूँ इतना कह कर फ़ोन रख दिया।"

"ऑपरेशन थिएटर के बाहर परिवार बिलखता नज़र आ रहा था यह सब देखकर मन बहुत दुखी हो रहा था हे भगवान बच्चे की रक्षा करना । चेकअप करने के बाद पता चला अंदर बहुत गंभीर चोट लगी हुई है ऑपरेशन की तैयारी की तुरंत ऑपरेशन में जुट गए 6 घंटे ऑपरेशन चलने के बाद भी 1 घंटे का ख़तरा और था होश आने तक भगवान से सब दुआ में जुट गए और अंततोगत्वा सफलता हाथ लगी।"

बच्चे के पिता डॉक्टर के पैरों पर गिर पड़े और बोले-" डॉक्टर साहब आपने मेरे बच्चे की जान बचाकर हम पर बहुत बड़ा एहसान किया है मेरे चिराग को बुझने न दिया आज दीपावली के दिन मेरे घर का दिया जल उठा. ईश्वर आपकी संतान को खुश रखे मेरी दुआ है।"

"अर्पित ने कहा- हे भगवान आपने हमारी सुन ली हमारी लाज रखी तुरंत सुहानी को फ़ोन लगाया और दीपावली की शुभकामनाएँ दी और कहा "बच्चा बच गया है लेकिन अफ़सोस है तुम लोगों के पास दीपावली मिलने नहीं आ पा रहा।"

"सुहानी ने कहा-" कोई बात नहीं आज आपने दीपावली के दिन किसी के घर के चिराग की रक्षा की है उनके घर का दीपक बुझने से बचाया है आज आप यहाँ चले आते तो यह संभव नहीं होता।"

डॉ भावना शुक्ल, प्रतीक लॉरेल, J-1504, नोएडा सेक्टर - 120, नोएडा (यू.पी) - 201307 मोब. 9278720311

ईमेल : bhavanasharma30@gmail.com

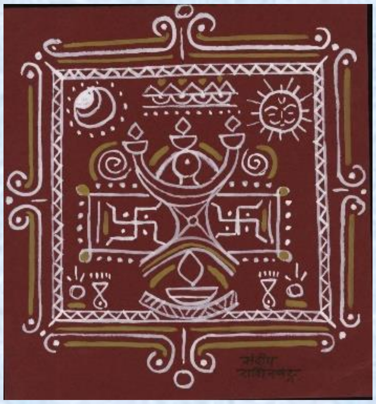

लेख - सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक: जबलपुर - श्री मनोज शुक्ल 'मनोज'

हमारे भारत देश के मध्य में जबलपुर एक ऐसा शहर है, जहां यह नगर अपना वह गौरवमयी इतिहास समेटे हुए है। इसे संस्कारधानी भी कहा जाता है। धार्मिक, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक की चेतना स्वरूपा पतित पावनी माँ नर्मदा नदी अविरल बहती रहती है। यहाँ आदि शंकराचार्य जी ने तपस्या की और नर्मदाष्टक लिखा। जहाँ हमारे इस धरा पर वीरांगना रानी दुर्गावती, सुभद्रा कुमारी चौहान, आचार्य रजनीनश ओशो, योग गुरु महर्षि महेश योगी, हिंदी के व्याकरणाचार्य पं कामता प्रसाद गुरु, मानस के मर्मज्ञ आदरणीय रामकिंकर महाराज के साथ ही व्यंग्य के पुरोधा श्री हरिशंकर परसाई, भवानी प्रसाद तिवारी, रामेश्वर शुक्ल अंचल, जैसे न जाने कितने विचारकों, साहित्यकारों, योग गुरुओं ने राष्ट्रीय ही नहीं वरन अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर अपना परचम फहराया।

यह वह नगरी है जहां सांप्रदायिक सौहार्दता भाईचारे की मिसाल देखने को मिलती है। सेवा के दौरान नगर से जब भी मेरा स्थानांतरण अन्य नगर में हुआ तो मन जबलपुर में ही भटकता रहा है। कमानिया गेट का कवि सम्मेलन हो, दशहरा का जलूस, गणेश पर्व या ताजिया का हो कोशिश रहती कि छुट्टी मिले तो उड़ कर पहुँच जाऊँ। सेवा के दौरान मैं रायपुर, रतलाम, सतना आदि में रहा। पर जबलपुर जैसा उत्सव का शहर और कहीं देखने को नहीं मिला। मेरे पिता श्री रामनाथ शुक्ल श्रीनाथ की वजह से मेरा झुकाव कहानियों के सृजन की ओर गया।बाद काव्य की दुनिया की ओर बढ़ा।आज मेरी आठ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

नगर में एक समय कुश्तियों का दौर चला। दारासिंह, रंधावा, किंगकांग चंदगीराम जैसे ख्याति प्राप्त अनेक पहलवान की कुश्तियाँ देखने का अवसर मिला। गणेश, तीजा नव रात्रि पर्व पर चौराहों में कव्वालियों का दौर चला देश के प्रसिद्ध गायकों का जमावड़ा देखने को मिला। इसके बाद फिर आर्केस्ट्रा का दौर चला। जिसमें नगर के ही अनेक कलाकारों ने पूरे देश में धूम मचाई। यंग आर्केस्ट्रा में हास्य कलाकारों ने ऐसा तहलका मचाया कि पूरे देश में उनकी डिमांड बढ़ गई। श्री रजनीकांत, के के नाईकर, कुलकर्णी बंधुओं जैसे अनेक हास्य कलाकार मंच पर छा गए।

मिलन संस्था के सूत्रधार श्री मोहन शशि को इसका श्रेय जाता है। मिलन ने पूरे प्रदेश में अपने पैर पसारे, अनेक वर्षों तक कार्यक्रम करते रहे। नगर में मित्र संघ के श्री राजकुमार सुमित्र साहित्यिक गोष्ठीयों में, हिंदी मंच भारती के श्री गणेश नामदेव, गुंजन कला सदन के श्री ओंकार श्रीवास्तव, नाट्य मंच के रंगकर्मियों में वेद चौहान, विश्वभावन देवलिया, आदि ने खूब नाम अर्जित किया बाम्बे तक पैठ बनाई। वर्तमान में दर्जनों साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रही हैं। प्रसंग संस्था के श्री विनोद नयन तो पाथेय संस्था के श्री प्रवीण पाठक पाथेय संस्था के माध्यम से प्रकाशन के साथ साथ गीत संगीत

काव्य गोष्ठियों के माध्यम से जबलपुर को जीवंतता प्रदान करने में अग्रणी हैं। साहित्यकारों को सम्मानित करने की परंपरा संस्कारधानी की पहचान बन गई है।

अभिनेता राजकपूर की ससुराल जबलपुर में रही। उनके साले श्री प्रेमनाथ (हीरो से विलेन), श्री राजेंद्र नाथ (हास्य) पुराने जमाने के सुप्रसिद्ध अभिनेताओं में रहे हैं। सैकड़ों फिल्मों में काम करके नाम कमाया । पुराने हास्य अभिनेता याकूब खान जो कि ब्लैक एंड व्हाइट के जमाने में काफी चर्चित रहे हैं। एक जमाने में फिल्म में छाए रहे हैं।

अनेक फिल्मों की शूटिंग भेड़ाघाट धुआँधार में हुई । वर्तमान में फिल्म अभिनेता रघुवीर यादव का जन्म जबलपुर में ही हुआ था। संगीतकार आदेश श्रीवास्तव जैसे फिल्मी संगीतकार जबलपुर की देन हैं। अनेक फिल्मों की शूटिंग भेड़ाघाट धुआँधार में हुई ।

वर्तमान में मुझे ऐसा लगता है कि जबलपुर में सँस्थाओं, साहित्यकारों, रंगकर्मियों, कलाकारों की सर्वाधिक भरमार है। माह में आठ दस कार्यक्रम से अधिक तो हो ही जाते हैं। वर्तमान कार्यक्रम स्थल दो तीन माह पूर्व से बुक हो जाते हैं, खाली नहीं रहते। इसे देखते हुए शासन को सुलभ कम रेट पर कुछ कार्यक्रम स्थल भवन का निर्माण करवाना चाहिए ताकि संस्कारधानी का नाम चिरितार्थ होता रहे।

मनोज कुमार शुक्ल, "मनोज" 58 आशीष दीप, उत्तर मिलोनीगंज जबलपुर (मध्य प्रदेश)- 482002

कहानी - स्वर्ण कलश - सुश्री सिद्धेश्वरी सराफ़ 'शीलू'

हाथ की लकीरें और लिखा हुआ भाग्य न कभी कोई पढ़ पाया और न कोई पढ़ पाएगा। परंतु आज के समय जहाँ विज्ञान ने चहुँ और उन्नति किया है वही ज्योतिष शास्त्र और

भविष्यवाणी ने भी तहलका मचा रखा है। हर आदमी अपनी कुंडली दिखाने और उस पर भविष्य की राह में आने वाले दुख- सुख और खास कर पद की तरक्की, पैसों की बढ़ोतरी को पूछने से नहीं चूकता है।

कामिनी बहुत ही गुणवान, धैर्यवान, सौम्य, सरल और चेहरे पर गंभीरता से परिपूर्ण, सादगी की निश्चल सुंदर साफ सुथरी काया, परंतु हाय री विडंबना पता चल कुंडली में लिखा है कि उसे किसी भी प्रकार का पारिवारिक सुख नहीं मिलेगा। यह तो रही पुरानी बात कि उसकी कुंडली को हर किसी ने अपने तरीके से बताया था।

इस भ्रम से माता-पिता भी कि कहीं बिटिया का अनर्थ न हो विवाह से भी कतरने लगे थे। बातों ही बातों से रिश्तेदारों में बात हवा की तरह फैल गई। आज वह पूरे 35 वर्ष पूर्ण कर रही थी और विवाह की उमर निकलती जा रही थी।

माता-पिता की चिंता बढ़ते जा रही थी कि आगे क्या होगा। घर में दीपावली की साफ सफाई चल रही थी। अचानक कामिनी के बचपन का दोस्त आया। बरसों बाद मिलने की खुशी, परंतु कामिनी के चेहरे पर उदासीनता की लकीरों को वह तुरंत समझ गया और उसने पढ़ लिया -ज्योतिषी जो बन गया था।

चाय की चर्चा के दौरान बड़े ही बुझे मन से कामिनी के पिताजी ने कहा... बेटा अब तुम आ ही गए हो तो हमारी बेटी के भविष्य का भी कुछ रास्ता बता दो ऐसा कुछ कर दो जिससे इसका वैवाहिक जीवन बस जाए।

जी अंकल अब आपकी सारी समस्या का समाधान हो जाएगा। फिर उसने जो किया दो दिनों बाद लगातार फोन की घंटी बजने लगी और एक के बाद एक रिश्तो की लाइन लग गई। कुछ समझते कुछ जानते पर खेल तो ज्योतिष का था। उन्हें भी अच्छा लग रहा था। सारी जिम्मेदारी उठाते दोस्त ने कहा.. बस अंकल आप मुझ पर छोड़ दीजिए।

कामिनी से पूछा.. आखिर तुमने ऐसा क्या कर दिया? दोस्त ने हंसते हुए कामिनी को गले लगाते बताया.. बस तुम्हारी कुंडली में स्वर्ण कलश का योग बाँध दिया। और यह काफी है।

समय और पसंद के अनुसार कामिनी और घर वालों ने मिलकर एक साधारण परिवार के सुधांशु को पसंद किया। दीपावली पूजन पर सारा घर दीपमालाओं से सजा था। लाइटों की रोशनी से जगमगाते घर द्वार और लक्ष्मी माता पूजन।

आज माता-पिता हर्षित हो बेटी के रूप को निहार रहे थे। सचमुच बेटी तो स्वर्ण कलश लिए हाथ में साक्षात लक्ष्मी का रूप है। जिसके घर भी जाएगी धन-धान्य से परिपूर्ण कर देगी और अपने सरल व्यवहार से सबका मन जीत लेगी।

यही विश्वास तो दोस्त ने जगाया ज्योतिष का काम कर गया। दरवाजे की घंटी बजी सामने सुधांशु खड़ा था। उसके हाथ में सुंदर फूलों से भरी टोकरी और उपहार था। कामिनी ने बढ़कर स्वागत किया। सुधांशु ने कहा.. मुझे स्वर्ण कलश नहीं साक्षात लक्ष्मी जी को घर ले जाना है। लाज से भरी कामिनी पर्दे की ओढ पर छिप गई।

अपने ज्योतिष दोस्त के लिए दीपावली की शुभ भावना के साथ आँखे भर आई।

सिद्धेश्वरी सराफ 'शीलू', जबलपुर, मध्य प्रदेश

कहानी - रिस्टवाच - डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी

ट्रैक के दोनों तरफ खड़े कालेज के स्टाफ ताली बजाने लगे। डा0 वेदप्रकाश हाँफ रहे थे। स्थापना दिवस के अवसर पर जो स्पोर्टस मीट का आयोजन किया गया था, उसमें स्टाफ एंड टीचर के लिए आयोजित हंड्रेड मीटर रेस में उन्होंने ही सबसे पहले रस्सी को छू लिया।

''सर, आपने तो कमाल कर दिया! ''उनके अंडर में एम. डी. करने वाले छात्र और डिपार्टमेंट के दूसरे लोग कहने लगे।

''अरे यार, डाक्टर, पैथोलॉजी के लैब में बैठे बैठे भी इतनी एनर्जी! वाह भाई, मान गये।'' दूसरे लेक्चरर प्रोफेसर कह रहे थे।

''इसी को कहते हैं - छोरा गंगा किनारेवाला!''

उनका गांव गंगा गोमती के संगम के पास मार्कंडेय महादेव मंदिर के नजदीक स्थित है।

इतने में छोटे से स्टेज से घोषणा होती है। मेडिकल कालेज के डायरेक्टर स्वयं उनकी पीठ ठोकते हुए उन्हें पुरस्कार देते हैं।

घर वापस आते ही पत्नी ने पूछा, ''रेस में क्या हुआ? ''

जरा छकाने के लिए वह चुप रहे। वह पूछती रही। उन्होने मुँह बनाते हुए कहा, ''अब क्या बतायें -?''

''अरे रेस में आपको कोई प्राइज मिला कि नहीं?''

''मुझे क्या मिलता? बस..... ''

''बस क्या -?''

उन्होंने चुपचाप कागज में लिपटा प्राइज को आगे कर दिया और मुस्कुराते हुए बेसिन की तरफ चले गये।

कल्याणी ने झट से गिफ्ट पैक खोल लिया, ''अरे वाह! फर्स्ट प्राइज! कितनी सुंदर रिस्टवाच है। लो, पहन लो। सौम देखेगा तो खुश हो जायेगा।''

''अभी रहने दो। हाथ मुँह धो लें। चाय पी लें।''

किचेन से टुनटुन की आवाज आने लगी। वहीं से कल्याणी ने कहा, ''रात को मीनू को बताऊँगी। तेरे डैडी कालेज रेस में फ़र्स्ट आये हैं।''

''तुम भी न -! ''बेसिन के पास खड़े वेदप्रकाश हँसने लगे।

इनकी यही दो संतानें हैं। बड़ी मीनाक्षी। उसकी शादी हो गई है। फिर बेटा सौमित्र। इंटर के बाद एंट्रेंस के लिए सर फोड़ रहा है। एक साल बैठा रहा। इस बार भी कहीं एडमिशन नहीं हुआ। कोचिंग से लौट कर कभी थोड़ी देर टी. वी. देख लेता है, तो कभी चुपचाप बैठा रहता है। कल्याणी पास आकर पूछती है, ‘‘क्या हुआ रे?’’वह माँ का हाथ सर पर से हटा देता है। खाने के बाद फिर किताब। वेद और कल्याणी दोनों देख रहे हैं - बेटे के चेहरे पर उदासी के बादल घने हो रहे हैं। मगर करें तो क्या करें?

वेद कंप्यूटर पर बैठे थे, कल्याणी टी. वी. के सामने। इतने में बेल बजा। दरवाजा खोलते हुए कल्याणी ने बेटे से कहा, ‘‘मालूम है आज तेरे डैडी को प्राइज मिला है?’’

‘‘किस बात का?’’

‘‘स्पोर्टस में। हंड्रेड मीटर रेस में फ़र्स्ट आये हैं।’’अंदर आते ही उसने घड़ी दिखाई, ‘‘यह देख! ’’

सौमित्र ने हँसते हुए चिल्लाकर कहा, ‘‘डैडी, कोंग्रेट्स्! ’’प्राइज के बक्से में उस रिस्टवाच को देखकर उसका चेहरा खिल उठा, ‘‘अरे वाह! गोल्डेन टाइम! बहुत बढ़िया प्राइज हैं, मां।’’ फिर दौड़ते हुए अपने पापा के पास पहुँचा, ‘‘क्या डैडी, कम से कम आज तो अपनी कलाई में पहन लीजिए।

‘‘मेरे हाथ में तो एक है ही -।’’हँसते हुए वेद ने कहा।

‘‘तो क्या हुआ? लाइये मैं पहना देता हूँ।’’सौमित्र ने अपने डैडी का हाथ थाम लिया।

‘‘तू खुद ही पहन ले न -!’’

‘‘मैं -?’’ जाने क्यों सौमित्र का चेहरा बुझ सा गया। रिस्टवाच को वहीं टेबुल पर रखकर वह अपने कमरे में चला गया।

‘‘एक तितली नन्ही सी’’ सीरियल खतम होते ही कल्याणी खाना गरम करने लगी। और थोड़ी देर में, ‘‘सौम, खाना लगा दिया है मैंने। अपने पापा को भी बुला ले।’’

दोनों हाथ धोकर बैठ गये। कल्याणी कह रही थी, ‘‘सौम ने इतना कहा। आपने उस घड़ी को अपनी कलाई में क्यों नहीं लगा लिया?’’

‘‘हाँ, पापा।’’ मुँह में कौर डालते हुए सौमित्र ने मां का समर्थन किया।

‘‘मालूम है किस घड़ी को पहनना आज भी मुझे सबसे ज्यादा याद है?’’ वेद की आवाज में यादों की बांसुरी बज उठी।

‘‘कौन सी?’’कल्याणी ने उत्सुकता से पूछा, ‘‘शादी में जो मेरे मामा ने आपको पहनायी थी? वही गोल्डेन चेनवाली -।’’

वेद ने सिर हिलाते हुए कहा, “नहीं। बाबूजीवाली घड़ी। हाईस्कूल की परीक्षा देते समय उन्होंने अपनी कलाई से निकालकर मुझे पहना दी थी। यह कहते हुए कि - "टाइम देखते रहना। एक ही क्वेश्चन में ज्यादा वक्त जाया न करना, वरना सवाल छूट जायेंगे।"फिर तो रेजल्ट निकला। कालेज में टॉप किया। खुश होकर कहने लगे, “अब उसे तू ही रख ले।”उसे ही पहन कर इंटर पास किया। फिर कंम्पटीशन, एम. बी. बी. एस. और एम. डी.... ”

माँ बेटे दोनों चुप थे। दोनों अहसास कर रहे थे प्राइज की यह घड़ी कितनी भी कीमती क्यों न हो, यादों में बसी वो घड़ी तो बेशकीमती है। उसमें बाबूजी की छुअन जो थी। उनका प्यार था। लाड़ था.... शायद औलाद से कुछ उम्मीदें भी....

खाने के बाद अपनी प्यारी लाओपाला की कटोरी में खीर लेकर सौमित्र स्टडी टेबुल के पास जा बैठा। एक चम्मच मुँह में डालता और किताब के पन्ने पलटता। इस साल क्या होगा? दो एटेम्ट तो बेकार गये। डोनेशन और रिजर्वेशन - दो पाटों के बीच पीसता 'जेनरल वर्ग'। वेद भी मुस्कराकर यही कहते, “सबसे बड़ा है यह सवाल, क्या खायेगा मेरा लाल? ”

सौमित्र भी अपनी पढ़ाई में गंभीर है। उड़ंतू टाइप नहीं। लेकिन अब तो जैसे फ़र्स्ट क्लास या डिस्टिंक्शन का जमाना ही नहीं रहा। नाइन्टी प्लस परसेन्टेज हो तो सर ऊँचा करके चलो। पापा सब कुछ समझते हैं। उनके मन में कोई गांठ नहीं कि बेटा डाक्टर ही बने। मगर कल्याणी चाहती है कि वह इस बार भी कोशिश करे। सवाल यह भी तो है कि यहाँ नहीं तो और कहाँ? और फिर पापा भले ही कुछ न कहें, मगर जब दूसरे लोग पूछते हैं, “सर, आपका बेटा क्या कर रहा है?” तो शायद वह कुछ मुरझाया सा जबाब देते हैं, “कम्पटीशन की तैयारी कर रहा है।”

फिर सवाल, “अभी तक नहीं हुआ? ”

इसका कोई क्या जबाब दे?

इतने में वेद आकर उसके पास खडा हो गये, “देखें -! ”उन्होंने टेबुल पर से बेटे का हाथ उठा लिया। उनके हाथ में वही कलाई घड़ी थी, “ले तू ही इसे पहन। मैं ने अपने बाबूजी की घड़ी अपनी कलाई में बांधी थी। तू भी -”

“नहीं डैडी!” सौमित्र के होठों पर एक मुस्कान जरूर थी, मगर उसकी आवाज में जाने क्या छुपा था, “आपने एक रेस जीत कर इसे हासिल किया है। मुझे भी अपनी दौड़ दौड़ लेने दीजिए -! ”

दरवाजे के पास खड़ी कल्याणी सब कुछ सुन रही थी।

बाप ने मुस्काते हुए बेटे के सर को सहलाया और वे चुपचाप कमरे से बाहर चले आये......

डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी, द्वारा, डा. अलोक कुमार मुखर्जी, **104/93,** विजय पथ, मानसरोवर। जयपुर। राजस्थान। **302020** मो: **9455168359, 9140214489** ईमेल: asrc.vns@gmail.com

बाल कहानी - दीपावली की आग - श्री ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

देवांश मामाजी के घर आया हुआ था. इस बार उसे गांव में दीपावली मनाने थी. साथ में कुछ पटाखे ले कर आया था.

"मामीजी! आज दीपावली मनाएंगे ना?" उस ने अपने शहर के पटाखों वाली दीपावली को याद करते हुए कहा पूछा.

"हां बेटा!" मामीजी ने कहा, "इसीलिए हम आज खीर, पकौड़े और पूरी बना रहे हैं."

"शाम को पटाखे, फुलझड़ी चलाएंगे ना?"

"नहीं," मामीजी ने कहा, "हमारे यहां गांव में गोवर्धन पूजा होती है."

"गोवर्धन पूजा?" देवांश को कुछ समझ में नहीं आया," यह गोवर्धन पूजा क्या होती है?"

यह सुन कर मामीजी मुस्कराई. फिर बोली, "तू मेरे पास बैठ. मैं तुझे बताती हूं."

"जी," कहते हुए देवांश वहीं बैठ गया. उस वक्त मम्मीजी मैदे की रोटी बेल रही थी. फिर उसे चाकू से उसे चौकोर काट कर रही थी. ताकि तल कर उस की पपड़ी बनाई जा सके.

"लाओ, मैं शकरपारे काटता हूं," कहते हुए देवांश ने चाकू ले लिया. फिर मैदे की रोटी से पपड़ी काटने लगा.

तब मामीजी मैंदे के आटे की रोटी बेलते हुए बोली," यहां गांव में हमारा सब काम गायबैलों से होता है. यह तुम जानते हो."

"हां मम्मीजी," देवांश बोला, "बैल से खेत जोतते हैं. यह बात मामाजी ने बताई थी. वह बैलगाड़ी से खेत का सामान घर लाने व ले जाने का काम करते हैं."

"हां सही कहा," मम्मीजी बोली," उसी तरह गाय दूध देती है. दूध से दही बनता है. दही से छाछ और घी निकालते हैं."

यह सुन कर देवांश ने कहा," मामीजी दही से छाछ बनती है?"

"हां."

"मैं तो समझा था कि छाछ नींबू से बनती है. इसलिए नींबू जैसी खट्टी होती है."

"नहीं बेटा, छाछ ज्यादा खट्टी नहीं होती है," कहते हुए मामीजी ने पास ही पड़े हुए मटके से छाछ निकाली. एक गिलास भरा. देवांश को दे दिया.

देवांश ने छाछ पी. वह ज्यादा खट्टी नहीं थी, "वाकई मामीजी यह तो खट्टी नहीं है."

"हां बेटा," मामीजी ने कहा," जब छाछ ज्यादा दिनों की हो जाती है तो वह खट्टी हो जाती है."

"जी मम्मीजी," देवांश ने कहा," यहां की छाछ तो बहुत ही स्वादिष्ट होती है."

"अच्छा," कहते हुए मामी जी मुस्कुराई.

"हां."

"हमारे यहां गांव में सब काम गायबैलों से होते हैं. इस कारण इन्हें गोधन कहते हैं. यानी यह गायबैल हमारे धन है. इन्हीं की वजह से हम धन कमाते हैं."

"यानी इसीलिए इन्हें गोवर्धन कहते हैं."

"हां बेटा," मम्मीजी ने कहा, "इसी कारण हम दीपावली के बाद गोवर्धन पूजा करते हैं. बैलों को सजाते हैं. उन का आदर सत्कार करते हैं. देखभाल करते हैं. इसे ही गोवर्धन पूजा कहते हैं."

"ओह! वाकई. इस बार में मैं भी इस पूजा में हिस्सा लूंगा," कह कर देवांश काम करने लगा.

उस के मामाजी का लड़का विकास खेत पर गया हुआ था. शाम तक वह अकेला रहा. सभी घरों के बाहर दीपक जल रहे थे. देवांश शहर से अपने लिए पटाखे लाया हुआ था३ उसने राकेट भी था.

वह दीपावली की शाम हमेशा पटाखे चलाता था. इसलिए झट से कमरे में गया. राकेट निकाला. बाहर लाया. उसे एक कांच की बोतल में रख दिया. तभी उसे खेत से विकास आता हुआ दिखाई दिया.

देवांश ने कांच की बोतल में राकेट रख दिया था. उसे दीपक से जला रहा था.

विकास यह देख कर चिल्लाया, "अरे! रुको!" विकास ने उधर से हाथ ऊंचा कर के इशारा भी किया.

मगर, राकेट जल चुका था. देवांश इशारा समझ कर उसे पकड़ने के लिए भागा. मगर इसी भागदौड़ में कांच की बोतल गिर गई. राकेट तिरछा चलते हुए बाड़े में घुस गया.

बाड़े में एक गाय, बैल, भैंस बंधी हुई थी. वहां ढेर सारा घास रखा हुआ था. राकेट सीधा घास पर गया. घास ने आग पकड़ ली.

बाड़े में आग देख कर विकास चिल्लाया, "आग लग गई है."

देवांश भी आग देख चुका था. वह दौड़ा. बाड़े में गया. घास तब तक धीरे-धीरे फैल रही थी. यह देख कर वह गाय, बैल, भैंस के पास पहुंचा.

गाय, बैल, भैंस जोरजोर से चिल्ला रही थी.

देवांश ने बाड़े का फाटक खोल दिया. फिर लकड़ी ले कर गाय, बैल, भैंस को बाहर भगाने लगा. तभी विकास के पापा भाग कर घर के अंदर गए. पानी की मोटर चालू कर दी.

छत के ऊपर से पाइप को बाड़े में पहुंचाया.

थोड़ी देर की मशक्कत के बाद आग बुझ गई.

यह देख कर देवांश ने कहा, " मामाजी! मुझे माफ कर देना. मेरी गलती से बाड़े में आग लग गई थी."

" हां देवांश, इस से पूरे गांव में आग फैल सकती थी," विकास ने कहा. तभी उस के मामाजी बोले," अरे बेटा, कोई बात नहीं. तुम्हारी सूझबूझ से हमारे गाय, बैल, भैंस की जान बच गई. यह बहुत बड़ी बात है."

" मुझे पटाखे नहीं चलाना चाहिए थे."

" हां," विकास बोला, " इसीलिए हम गांव में इस तरह के ज्वलनशील पटाखे के घरों के पास नहीं जलाते हैं. किसी मैदान में जा कर पटाखे चला कर दीपावली मनाते हैं."

" मुझे माफ करना मामाजी, आइंदा ध्यान रखूंगा," देवांश ने कहा तो मामाजी बोले, " कोई बात नहीं बेटा,ऐसा किसी के साथ भी हो सकता है. अनजाने में हुई भूल का पश्चाताप नहीं करते हैं." कह कर मामाजी गाड़ी से सामान उतारने लगे.

यह सुन कर देवांश चुप हो गया. वह भी मामाजी के साथ गाड़ी से सामान उतारने लगा. आज उस की गलती से एक बड़ा हादसा होते-होते बचा था.

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश', पोस्ट ऑफिस के पास, रतनगढ़ जिला-नीमच (मध्यप्रदेश) पिनकोड- 458226

मोबाइल नंबर 94240 79675

बाल कविता - क्यों न मैं तुलसी बन जाऊँ - डॉ राकेश 'चक्र'

क्यों न मैं तुलसी बन जाऊँ
सारे जन के रोग मिटाऊँ।
घर - आँगन को कर दूँ पावन
जीवन अपना सफल बनाऊँ।।

मैं हूँ रामा, मैं हूँ कृष्णा।
मैं हूँ श्वेत और विष्णु भी।
मैं होती हूँ वन तुलसी भी।
मैं होती नींबू तुलसी भी।

पाँच तरह की तुलसी बनकर
खूब ओषजन मैं फैलाऊँ।।

एंटी बायरल, एंटी फ्लू
एंटीबायोटिक मैं हूँ होती।
एंटीऑक्सीडेंट बनकर
एंटीबैक्टीरियल होती।।

एंटीडिजीज बनकर मित्रो
परहित में ही मैं लग जाऊँ।।

खाँसी, सर्दी या जुकाम भी
सब रोगों में काम मैं करती।
कालीमिर्च, अदरक, गिलोय सँग
काढ़ा बन अमृत बन दुख हरती।।

हर मुश्किल का करूँ सामना
जीवनभर उपहार लुटाऊँ।।

मैं लक्ष्मी का रूप स्वरूपा
मैं हूँ आर्युवेद में माता।
पूरा भारत करता पूजा
कोई मेरा ब्याह रचाता।।

मैं श्रद्धा का दीपक बनकर
सदा पुण्य कर मैं मुस्काऊँ।।

डॉ राकेश चक्र, (एमडी,एक्यूप्रेशर एवं योग विशेषज्ञ) 90 बी, शिवपुरी, मुरादाबाद 244001
उ.प्र. मो. 9456201857 Rakeshchakra00@gmail.com

Festival of Deepavali - Capt. Pravin Raghuvanshi, NM

Diwali, also known as Deepavali, is a significant Hindu festival of India. It is celebrated over five days. It symbolizes the triumph of good over evil, light over darkness and knowledge over ignorance. A great deal of prayers, religious rituals and spiritual practices are conducted to invoke the Gods and Goddesses.

Millions of star clusters remain
scattered in the boundless sky,
on the canvas of pitch dark night;
But never do they illumine, the
ever-sombre world to divine effulgence
It's only when the prodigious sparkle
and glint of the Deepawali ushers
in its splendorous illumination
of festive ambience, does the
dusky milieu get brightened up…

It takes the world gleefully along to
the ultimate ecstasy and exultation..
The season of festivities heralds
the arrival of Lord Ram, who returns
to Ayodhya after winning the
victory over the epitome of evil,
the Ravana, the invincible demon...!

May Diwali effulgence cheer up everyone
May millions of lamps be lightened up
May this Diwali, fulfill your aspirations
and may your life be divinely brightened up..!

Mythological Significance

Hindus

Celebrate the return of Prince Rama to Ayodhya after defeating the demon king Ravana, who abducted His consort Goddess Sita.

Hindus also celebrate Diwali as a time to honor Lakshmi, the goddess of prosperity, and Ganesha, the god of wisdom.

Diwali marks the return of Lord Rama, the king of Ayodhya, after a 14-year exile. He defeated Ravana, the demon king.

Diwali also commemorates Lord Krishna's victory over Narakasura, a demon king.

Jains

Celebrate the day when Lord Mahavira, the last Jain Tirthankara, attained nirvana, or complete knowledge and enlightenment.

Sikhs

Celebrate the return of Guru Hargobind from captivity in Gwalior in 1619.

Buddhists

Celebrate the day when Emperor Ashoka converted to Buddhism in the 3rd century BC.

Spiritual Importance.

Diwali represents the illumination of one's inner self, dispelling inner darkness. This festival also encourages introspection, self-improvement, and renewal of vigour in life.

Diwali is a time to exchange gifts and express gratitude for blessings, relationships, and life's ebullience.

Cultural Significance.

Family reunions: Diwali brings families together, strengthening bonds.

Communities celebrate it in a big way in their cities and towns. All the neighbourhoods come alive with decorations, fireworks, and plenty of shared festivities.

Diwali marks the beginning of the Hindu New Year.

Five Days of Celebrations.

Dhanteras (Day 1): Cleaning, decorating, and buying new utensils.

Chhoti Diwali (Day 2): Preparations for the main festival and lighting of the clay lamps.

Lakshmi Puja (Day 3): Worshiping Goddess Lakshmi, the goddess of prosperity.

Govardhan Puja (Day 4): Celebrating Lord Krishna's victory over Lord Indra

Bhai Dooj (Day 5): Honouring sibling relationships

Traditional Rituals

Cleaning of homes and surroundings

Lighting diyas (earthen lamps)

Fireworks and sparklers

Decorating homes with rangoli and flowers

Exchanging gifts and sweets

Performing puja (worship) and prayers

The essence of Diwali is to celebrate the prevalence of lights over darkness and symbolizing the victory of good over evil.

Capt. Pravin Raghuvanshi, NM, Pune

The Four Noble Truths & The Noble Eightfold Path - Shri Jagat Singh Bisht

The essence of the Buddha's teaching can be summed up in two principles: the Four Noble Truths and the Noble Eightfold Path.

The first covers the side of doctrine, and the primary response it elicits is understanding; the second covers the side of discipline, in the broadest sense of that word, and the primary response it calls for is practice.

Two extremes that ought not to be cultivated by one who has gone forth: devotion to pursuit of pleasure in sensual desires, which is low, coarse, vulgar, ignoble and harmful; and devotion to self-mortification, which is painful, ignoble and harmful.

The Middle Way:

Avoid the two extremes - devotion to pursuit of pleasure in sensual desires and devotion to self-mortification. Follow the Noble Eightfold Path.

The middle way - Noble Eightfold Path - discovered by the Perfect One gives vision, gives knowledge, and leads to peace, to direct knowledge, to enlightenment, to Nibbana.

Noble Eightfold Path:

Right View, Right Intention, Right Speech, Right Action, Right Livelihood, Right Effort, Right Mindfulness, and Right Concentration.

The Four Noble Truths:

Noble Truth of Suffering, Noble Truth of the Origin of Suffering, Noble Truth of the Cessation of Suffering, and Noble Truth of the Way Leading to the Cessation of Suffering.

Noble Truth of Suffering:

Birth is suffering, ageing is suffering, sickness is suffering, death is suffering, sorrow and lamentation, pain, grief and despair are suffering, association with the loathed is suffering, dissociation from the loved is suffering, not to get what one wants is suffering - in short, the five aggregates affected by clinging are suffering.

Noble Truth of the Origin of Suffering:

It is craving, which produces renewal of being, is accompanied by relish and lust, relishing this and that; in other words, craving for sensual desires, craving for being, craving for non-being.

Noble Truth of the Cessation of Suffering:

It is the remainderless fading and ceasing, the giving up, relinquishing, letting go and rejecting of craving.

Noble Truth of the Way Leading to the Cessation of Suffering:

It is the Noble Eightfold Path, that is to say, right view, right intention, right speech, right action, right livelihood, right effort, right mindfulness, and right concentration.

Right View:

It is knowledge of suffering, of the origin of suffering, of the cessation of suffering, and of the way leading to the cessation of suffering.

Right Intention:

It is the intention of renunciation, the intention of non-ill will, and the intention of non-cruelty.

Right Speech:

Abstention from lying, slander, abuse, and gossip.

Right Action:

Abstention from killing living beings, stealing, and misconduct in sexual desires.

Right Livelihood:

A noble disciple abandons wrong livelihood and gets his living by right livelihood.

Right Effort:

A bhikkhu awakens desire for the non-arising of unarisen evil unwholesome states, for the abandoning of arisen evil unwholesome states, for the arising of unarisen wholesome states, for the continuance, non-corruption, strengthening, maintenance in being, and perfecting, of arisen wholesome states; for which he makes efforts, arouses energy, exerts his mind, and endeavours.

Right Mindfulness:

A bhikkhu abides contemplating the body as a body, feelings as feelings, consciousness as consciousness, mental objects as mental objects; ardent, fully aware and mindful, having put away covetousness and grief for the world.

Right Concentration:

Quite secluded from sensual desires, secluded from unwholesome states, a bhikkhu enters upon and abides in the first meditation, which is accompanied by thinking and exploring, with happiness and pleasure born of seclusion.

May all beings be happy!

Shri Jagat Singh Bisht, (Master Teacher: Happiness & Well-Being, Laughter Yoga Master Trainer, Author, Blogger, Educator, and Speaker.)

Trace - Shri Ashish Mulay

One can try
but one will fail
for that's her nature
It's impossible to have her

All one can ever do
is to trace her
one can see the mark
but no one can catch her

when she leaves the moment
You can smell perfume of hers
in that strange coincidence of time
which changes space of yours

or you can see her hand
in shaping of your character
or her fingers pulling strings
of destiny of yours

It's her absence what you feel
when alone in the crowd
and It's her presence which makes
your mind crowded when alone

Many have tried and more have failed
for her face is always vailed
what else Mir can do
for her fragrance he has traced....

Shri Ashish Mulay, Sangli, Maharashtra

Between Pixels and Pages - Ms. Radha Unmesh Mulay

Gen Z is expected to be a glimpse of the future generations, a window into the way the world will look like with technological advancements that continue to flood the minds of our youngsters. The path that Gen Z will pave will be further treaded by all those born into a planet where the likes our artificial intelligence will shape our lives. The worldview that Gen Z thus has is like no other - they are the link between the past and the future to come.

The fundamental aspect of this generation is the profound impact it faces of the plethora of opportunities around it. One of the most impressionable industries for this generation is the cinematic world. How attractive the fictional universe looks to these youngsters! Gen Z seeks to escape reality by plunging into the glorious lives of their heroes on screen. They seek the thrill of balancing between the possible and impossible that movies showcase and the glamour that a particular Netflix series demonstrates. By altering the very way they think, the cinematic universe has drastically impacted Gen Z by depicting dreams so tantalising that they are craved for by every youngster, which leads to their loss of individuality and sense of self as well.

This author believes that the art of putting a pen to paper and reading the words that aren't on a screen is lost to this generation. The habit of picking up books to read for the love of it has vanished in this generation. As the screens capture the hearts of this cohort, who even dares to glimpse an innocent paperback book anymore? The irony is such that Gen Z prefers the movie adaptations of bestsellers instead of choosing to skim the pages of truly immortal novels! The libraries choosing to shut down their businesses in our city is proof of this disheartening reality. It is clear that the value of books is on a steep decline in the minds of the Gen Z youngsters.

It is of utmost importance that we learn to strike a balance between the old and the new. If the Gen Z manage to do so, only then perhaps can we hope for the preservation of reading for future generations. The duty thus falls upon our shoulders, and we must spare no effort for bringing back the pages of our waning heritage.

Ms. Radha Unmesh Mulay, Pune, Maharashtra

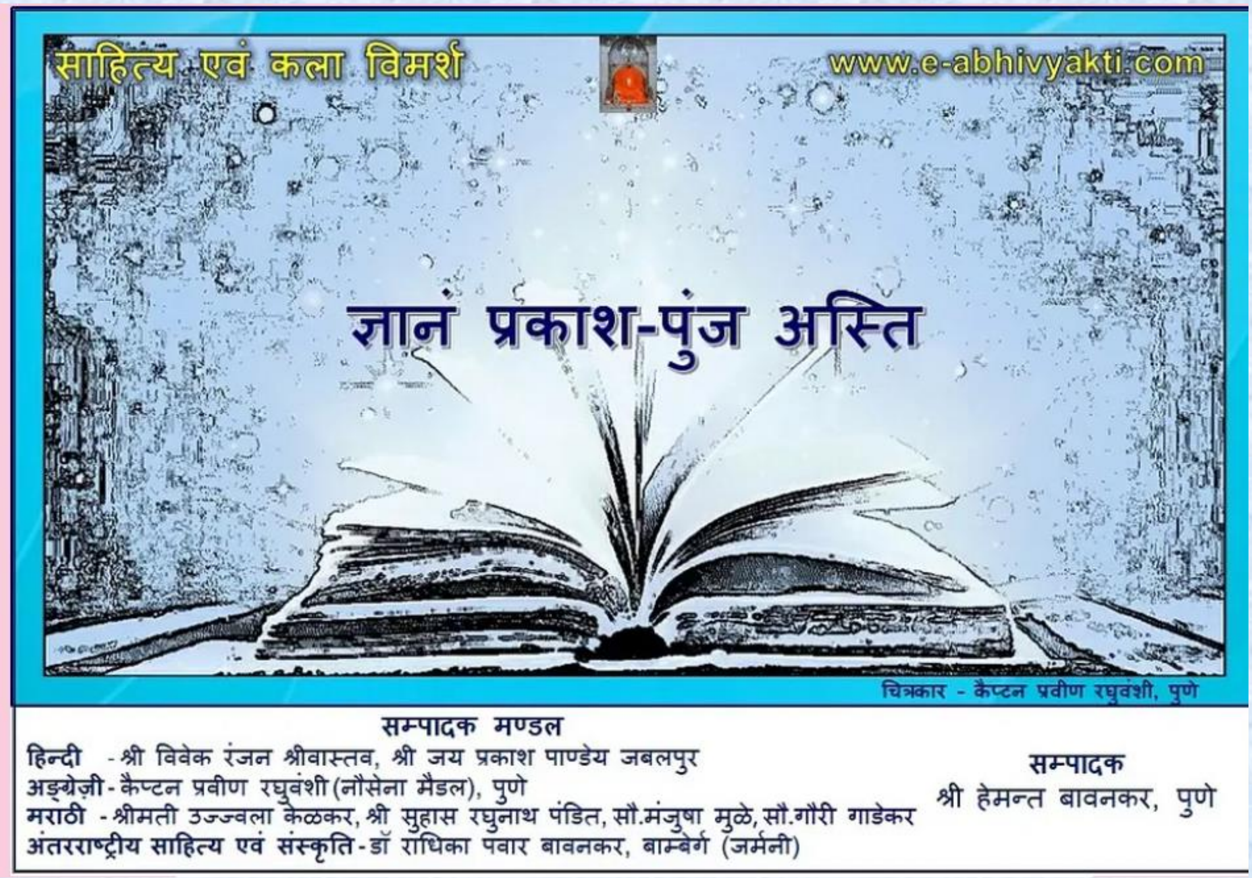
साहित्य एवं कला विमर्श
www.e-abhivyakti.com
ज्ञानं प्रकाश-पुंज अस्ति
चित्रकार - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, पुणे
सम्पादक मण्डल
हिन्दी - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव, श्री जय प्रकाश पाण्डेय जबलपुर
अङ्ग्रेज़ी - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी (नौसेना मैडल), पुणे
मराठी - श्रीमती उज्ज्वला केळकर, श्री सुहास रघुनाथ पंडित, सौ.मंजुषा मुळे, सौ.गौरी गाडेकर
अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति - डॉ राधिका पवार बावनकर, बाम्बेर्ग (जर्मनी)
सम्पादक
श्री हेमन्त बावनकर, पुणे

'फ्लिपबुक' प्रारूप में भारत का पहला और एकमात्र दिवाली विशेषांक

e-abhivyakti

नि:शुल्क